विनोद-सीरीज़—१२

यौवन की भूल

अनुवादक

ज्ञानचन्द जैन

प्रकाशक

प्रथम संस्करण

मूल्य एक रुपया

मुद्रक—
पं० पद्मनारायण आचार्य एम. ए.
गीताधर्म प्रेस, साक्षीविनायक
काशी

परिचय

हेनरी रेनी अलबर्ट गई-ड-मॉपासाँ, फ्रांस ही नहीं, विश्व-कथा-साहित्य का एक रत्न है। यथातंत्रवाद के स्कूल के इने-गिने लेखकों में उसका अपना स्थान है। युरोप, अमरीका, एशिया, संसार के सभी कहानी-प्रेमी पाठक उसकी कृतियों को बड़े चाव से पढ़ते हैं। वह ५ अगस्त, सन् १८५० में पैदा हुआ था। जीवन-संग्राम में उसने समाज के विभन्न अंग देखे। इस विराट् पर्यवेक्षण शक्ति का परिचय उसकी कहानियों में भलीभाति मिलता है। यौवन-काल के पूर्व ही उसे साहित्य से विशेष प्रेम हो गया। उसने अपनी प्रारम्भिक कृतियाँ, अपनी माता के मित्र, तथा सुप्रसिद्ध औपन्यासिक गुस्टाव फ्राबेर को दिखलाईं। तब से वह उसका पथ-पदर्शक बना। परन्तु तीस वर्ष की अवस्था के पूर्व वह ख्यातनामा लेखक न

बन सका। सन् १८८० में उसकी बूल-ड-स्वीफ नामक कहानी देश के प्रमुख लेखकों की कृतियों के साथ संगृहीत हुई। तब से उसकी ख्याति द्रुतिगति से बढ़ती गई। दस वर्ष के भीतर उसने जितने ग्रन्थ रचे, उनका काफी सम्मान हुआ। उसके जीवन के अन्तिम दिन पागलखाने में कटे। वहीं ६ जुलाई सन् १८९३ को उसकी मृत्यु हुई।

प्रस्तुत पुस्तक उसके श्रेष्ठ उपन्यास 'पिएर-ए-ज्यॉ' का भावानुवाद है। समालोचकों का कथन है कि वह उपन्यास लिखने में उतना सफल नहीं हुआ है, जितना कहानियों में। पर यह उपन्यास उक्त कथन का अपवाद-स्वरूप है। लेखक ने जिस सूक्ष्म रूप से अपने पात्रों की भावनाओं का विश्लेषण किया है, वह अनुकरणीय है। अर्ल आफ क्रिवी का कथन है कि 'पिएर-ए-ज्यॉ' उसकी सबसे सुन्दर और निर्दोष कृति है। अधिकतर उसने प्रेम सम्बन्धी कहानियाँ लिखी हैं। उसके दृष्टकोण में वासना और प्रेम में कोई अन्तर नहीं। और मनुष्य की इसी पाशविक मनोवृत्ति को दिखाने में वह कई पात्रों के साथ अत्यन्त निष्ठुर हो गया है।

यौवन की एक भूल के कारण पूरे कुटुम्ब की क्या दशा हो जाती है, प्रस्तुत उपन्यास में इसी का सुन्दर चित्रण है।

—अनुवादक

यौवन की भूल

प्रशान्त सागर में आँखें गड़ाये, हाथ में डोरी पकड़े वृद्ध रोलेन्ड घंटों से चित्रलिखित-सा बैठा था। कभी-कभी वह जलमग्न डोरी को हिला कर देख लेता कि कोई मछली फँसी अथवा नहीं। सहसा पानी से बाहर डोरी खींचते हुए, वह चिल्ला उठा—धत्तेरे की !

उसकी पत्नी नौका के एक कोने में, मछली का शिकार देखने के लिए, आमंत्रित श्रीमती रोज़मिली के बगल में बैठी ऊंघ रही थी। चौंक कर उसने आँखें खोलीं, और पति की ओर देखते हुए उसने कहा—ओह, अबकी तो तुमने बड़ी अच्छी मछली फँसाई !

'कहाँ जी !'—वृद्ध ने झुँझला कर उत्तर दिया—'दोपहर के बाद तो यह एक मिली है ! औरतों को साथ लेकर कभी न आये। उनकी वजह से चलते-चलते इतनी देर हो जाती है कि फिर शिकार का वक्त नहीं रह जाता।'

पिएर और ज्याँ, वृद्ध के दोनों लड़के, जो कि हाथ में एक-एक

डोरी लिये, पानी की ओर मुँह किये बैठे थे, अधरों के बीच हँस पड़े।

ज्यूँ ने घूम कर एक बार पिता की ओर देखा; जैसे उलहना दिया—आप हमारे आतिथ्य के प्रति अन्याय कर रहे हैं।

वृद्ध ने झेंप कर, श्रीमती रोज़मिली से क्षमा माँगी—आप मेरे कहे का बुरा न मानिएगा, मेडम रोज़मिली! कुछ मेरी आदत ही ऐसी है कि पहले तो मैं औरतों को बुलाता हूँ; क्योंकि उनके बिना मुझे अच्छा नहीं लगता; पर सागर के वक्षस्थल पर पहुँचते ही मुझे कुछ नहीं दिखाई पड़ता, बस मछली!

श्रीमती रोलेन्ड ने एक अँगड़ाई ले, निद्रा को सचेत करते हुए, सागर के तट पर दूर तक फैली, क्षितिज को छूती, पर्वत श्रेणी की ओर देखा। जीवन की सारी चिन्ताएँ, सारी विषम समस्याएँ, जैसे उस अगाध में विलीन हो गईं। श्रीमती रोलेन्ड ने अपने अन्दर एक हलकेपन का अनुभव करते हुए, पति से मुस्करा कर कहा—खैर! तुमने काफ़ी मछलियाँ इकट्ठी कर लीं!

वृद्ध ने उत्तर में सिर हिला कर नाहीं कर दी; परन्तु प्रसन्नता और संतोष की तरंगों पर उसकी हृदय-तरिणी थिरक रही थी। उसने टोकरी उठाई, और घुटनों के बीच पकड़ उसे दोनों हाथों से हिला डाला। चाँदी-सी चमकती मछलियाँ सूर्य की प्रखर किरणों में झिलमिला उठीं। एक हीक-सी चारों ओर फैल गई। वृद्ध को प्रतीत हुआ; जैसे गुलाब के फूलों की सुगन्ध उड़ी हो।

'अरे डाक्टर !'—वृद्ध ने अपने ज्येष्ठ पुत्र की ओर निहारते हुए, उल्लसित स्वर में कहा—'तुमने कितनी पकड़ीं ?'

मूछ-दाढ़ी साफ, हृष्ट-पुष्ट युवक पिएर ने उत्तर दिया—कोई ज्यादा नहीं, यही चार-पाँच !

तब पिता ने अपने कनिष्ठ पुत्र से पूछा—और तुमने ज्याँ ?

लम्बा चौड़ा जवान, जो अपने अग्रज की अपेक्षा कहीं सुन्दर था, बोला—बस पिएर के ही बराबर, चार-पाँच !

जब कभी वृद्ध रोलेन्ड यह प्रश्न पूछता, तो दोनों लड़के यही उत्तर देते थे। इससे वह भी बार-बार यही प्रश्न पूछता था। उसे इसमें एक आनन्द का अनुभव होता।

'दोपहर के बाद मछली का शिकार खेलना बेकार है !'—कटिया पानी में फेंक, डोर एक कील से बाँध, वृद्ध ने दोनों हाथ बाँधते हुए कहा—'मछलियाँ धूप खा कर ही इतनी छक जातीं हैं कि फिर वे बिचारी चारे की ओर देखतीं तक नहीं !'

वह पहले एक जौहरी था; परन्तु मछली का शिकार खेलने का ऐसा शौकीन था, कि जैसे ही उसके पास खाने-पीने भर को रुपया हो गया, उसने अपना व्यापार बन्द कर दिया और हावेर नामक ग्राम में आ बसा। एक नाव खरीद ली और दिन-भर उसी पर घूमा-घूमा मछली का शिकार खेलता। उसके दोनों लड़के पढ़ते थे, इससे पेरिस ही में रहते थे। हाँ, छुट्टियों में वे अपने घर आया करते थे।

स्कूली शिक्षा समाप्त कर पिएर, जो कि अपने छोटे भाई से पांच वर्ष बड़ा था, कितनी जगहों के लिए भटका! चीर-फाड़ में उसे कुछ सफलता मिली, और इसीलिए थोड़े ही परिश्रम से उसे डाक्टरी की डिगरी मिल गई। वह विचारशील, भावुक, अस्थिर स्वभाव का; परन्तु हठी था।

ज्याँ का स्वभाव अपने बड़े भाई के बिलकुल विपरीत था। एक परिश्रमी था, तो दूसरा काहिल। एक शान्त था, तो दूसरा क्रोधी। वकालत पास कर अब वह छुट्टियों के दिन घर पर काट रहा था।

यह सत्य है कि दोनों के हृदय स्नेह-सूत्र में बँधे थे; पर वे परस्पर कुछ चौकन्ने रहते थे। पाँच वर्ष के बालक पिएर ने एक दिन देखा था कि उसकी माँ की गोद में एक और नन्हा बच्चा आ गया, जिसे माँ उसी की भाँति प्यार करती है, पिता उसी उल्लास से उसका भी मुँह चूमता है। एक सन्देह के भाव—जो कि वयस के साथ बढ़ते जाते हैं, और किसी एक के सुनहले दिनों के प्रस्फुटित होते ही, उग्र रूप धारण कर लेते हैं—उसी दिन से दोनों के हृदय में अंकित हो गये थे। अपने स्वभाव के कारण, ज्याँ ने माता-पिता का मन अपनी ओर अधिक आकर्षित कर लिया था।

जब कभी पिएर कोई शैतानी करता, तो माता-पिता उसे डाँट कर कहते—देखो तो, ज्याँ कैसा सुशील लड़का है; अथवा ज्याँ भी तो एक लड़का है, तुम भी क्यों नहीं वैसे ही बनते?

सरल हृदया मैडम रोलेन्ड अपने दोनों लड़कों को लड़ते देख, कभी-कभी क्षुब्ध हो जाया करती थीं। अभी हाल ही की एक घटना ने उन्हें और चिन्तित कर रखा था। गत शिशिर ऋतु में उसका परिचय हुआ था अपनी पड़ोसिन, एक धनी कैप्टन की विधवा श्रीमती रोज़मिली से। तेईस वर्ष की सुन्दर नवयुवती अपनी बड़ी-बड़ी नीली आँखों में एक आकर्षण का बाजार बिछाये थी। उसके लम्बे-लम्बे सुनहले केश, अपनी नागिन-सी लटों में माधुर्य बाँधे थे। सन्ध्या समय वह उनके यहाँ नित्य-प्रति आती, चाय पीती, गपशप लड़ाती, यह उसका नियम हो गया था। फादर रोलेन्ड को सामुद्रिक साहस-सम्बन्धी कथाएँ सुनने में बड़ा आनन्द आता। बस वह ऐसी ही बात छेड़ देते और रोज़मिली अपने पति की साहसिक यात्राओं का विवरण सुनाने लगती।

घर आते ही दोनों जवान लड़के उससे घुल-मिल जाने का प्रयत्न करने लगे थे। भला एक सुन्दरी युवती को कौन न चाहेगा? परन्तु माँ चिन्तित इसलिए हो रही थीं कि दोनों में एक प्रतियोगिता-सी चल रही है, कि देखें कौन विजयी होता है। उनकी हार्दिक इच्छा थी कि दोनों लड़कों में से एक इस धनी विधवा को अपनी बना ले; पर वे यह भी न चाहती थीं कि इससे दूसरे के हृदय पर आघात हो।

श्रीमती रोज़मिली ज्याँ की ओर अधिक आकृष्ट हो रही थीं। पर अपने शान्त स्वभाव के कारण वे इसे सब के सम्मुख

प्रकट करने में हिचकती थीं। कोई वादा-विवाद चल पड़ता, तो वे अनजाने में ज्यों का पक्ष ले, उसकी ओर से बोलने लगतीं; पर इस बात का ध्यान आते ही वह सहसा चुप हो जातीं। अपने भावों को छिपाने का उपक्रम करते हुए, वे माथे पर चमकती पसीने की बूँदों को पोंछने लगतीं, अथवा कलाई पर बँधी घड़ी को ठीक करने लगतीं।

ऐसे समय पिएर उसकी ओर घूर कर देखता।

एक दिन बातों-ही-बातों में रोज़मिली ने कहा था—मछली का शिकार खेलने में तो बड़ा आनन्द आता होगा!

रोलेन्ड औरतों को अपने साथ ले जाते डरता था; इसलिए कि उन्हें लेकर चलते-चलते ही दोपहर हो जाती है, और तब शिकार का मज़ा किरकिरा हो जाता है; पर उस दिन शिकार की प्रशंसा सुनकर वह कुछ ऐसा पुलकित हो उठा, कि उन लोगों को भी अपने हाथों का कमाल दिखाकर, वाहवाही लूटने की इच्छा उसके मन में प्रबल हो उठी।

'तो आप चलना चाहती हैं?'—उसने पूछा।

'हाँ, अवश्य!'

'अब की मंगलवार को?'

'हाँ, मंगलवार को!'

'क्या आप पाँच बजे प्रातःकाल तैय्यार हो सकेंगी?'

श्रीमती रोज़मिली ने आश्चर्य से मुँह बना कर कहा—इतने सबेरे ! नहीं बाबा !

'तो फिर किस समय तक आप तैयार हो सकेंगी ?'

'नौ बजे !'

'और इससे पहले नहीं ?'

'नहीं, यह भी बहुत जल्दी है।'

वृद्ध तो हिचकिचाया था; पर दोनों लड़कों की प्रबल इच्छा थी कि इस सुन्दरी को ले चलकर उसके सहवास का आनन्द लूटा जाय। और इसी कारण यह प्रोग्राम निश्चित हुआ था।

उस दिन, मंगलवार को सब लोग समुद्र तट पर आये; लेकिन देर अधिक हो जाने के कारण इच्छानुसार शिकार न हो पाया। श्रीमती रोज़मिली को शिकार की अपेक्षा वह जल-मय संसार अधिक आनन्दप्रद प्रतीत हो रहा था। इसीलिए रोलेन्ड, झुँझला कर चिल्ला उठा था—'धत्तेरी की !' अतृप्त हृदय के ये शब्द, इतनी देर के बाद एक मछली फँसने, अथवा औरतों को साथ लाने की बेवकूफी, दोनों भावों को अपने में रंजित किये थे।

सन्ध्याकालीन अंधकार को आते देख वृद्ध ने शासनयुक्त स्वर में कहा—अच्छा लड़को, अब घर चलना चाहिए।

पिएर और ज्याँ दोनों के मुख पर प्रसन्नता खेल गई। दोनों पानी से डोर खींच, अपनी-अपनी कटिया साफ कर, उसे एक काग में लगा, एक किनारे रखते हुए, पिता का मुँह निहारने लगे।

भौंहों के ऊपर दोनों हाथों से छाया किये, किसी कैप्टन की भाँति चारों ओर देखते हुए रोलेन्ड ने कहा—हवा तो है नहीं ! लड़को, तुम्हें नाव खे कर ले चलना होगा।

सहसा उत्तर की ओर संकेत करते हुए उसने कहा—अरे देखो तो, वह साउथैम्पटन से जहाज आ रहा है।

उसने उसी समय दूरबीन-द्वारा देखा कि दूर क्षितिज के निकट—जहाँ पर हलके नीलेपन पर स्वर्णमल्लिका बिखरी है—धुएँ के काले बादल उगलता हुआ, एक जहाज आ रहा है।

दूरबीन श्रीमती रोज़मिली को देते हुए उसने कहा—देखिए, कैसा सुन्दर दृश्य है !···आप भी देखिए !

मैडम रोज़मिली ने दूरबीन आँखो से लगाकर, उसी दिशा में देखा; परन्तु एक हलकी कालिमा के सिवाय उसे और कुछ न दिखाई पड़ा। आँखों पर अधिक जोर देने पर, वह शून्य अद्भुत आकृति धारण करता हुआ प्रतीत होने लगता। अन्त में झुँझला-कर दूरबीन लौटाते हुए उसने कहा—लीजिए इसे—मुझे तो कुछ भी नहीं दिखाई पड़ता। मेरे पति को भी इस प्रकार जहाजों को देखने का बड़ा शौक था। वे मुझको भी देखने के लिए कहा करते। और इस उत्तर पर तो वे कभी-कभी मुझसे क्रोधित हो उठते थे।

रोलेन्ड ने दूरबीन लेते हुए कहा—तब आपकी आँखें जरूर खराब हैं। मेरा यंत्र बहुत अच्छा है।

फिर उसे अपनी पत्नी को देते हुए उसने कहा—लो, लूसी ! तुम भी देखोगी ?

'नहीं, माफ कीजिए ! मैं जानती हूँ कि मुझे इससे कुछ नहीं दिखाई पड़ता ।'

प्रौढ़वयस्का मैडम रोलेन्ड सन्ध्या की उस धूमिल छाया में, नीलाकाश के नीचे मछली का शिकार देखने की अपेक्षा सागर की मधुर हिलोरों में अधिक आनन्द अनुभव कर रही थीं। वे भावुक थीं। कविता अथवा उपन्यास पढ़ने में उन्हें आनन्द आता, इसलिए नहीं, कि वह कला की पुजारिनी थीं; बल्कि इस कारण कि कभी कोई वाक्य उनकी हृत्तंत्री पर ऐसा बज उठता कि वे एक टीस का अनुभव करतीं। बरसों से विस्मृति के गर्त में पड़ी आहें, जागृति की पँखुड़ियों में लिपट कर अधिक स्पर्शप्रिय हो जाती हैं।

अपने पति से उन्होंने कभी प्रेम-मदिरा का हलाहल प्याला न पाया था। रोलेन्ड का हृदय एक व्यवसायी की भाँति था, जिसमें शुष्कता की मात्रा अधिक होती है। बात-बात में झुँझला कर, चीख कर बोलने की उसकी आदत थी। लूसी इसीलिए उससे कुछ कहते डरती थीं। आज भी जब सब लोग चलने लगे, तो वह चुप चाप बैठी रहीं। जब पति ने कहा—चलती हो, तो वह आईं। घर की चहारदीवारी के बाहर उन्मुक्त पवन की मधुर थपकियों में स्वच्छ स्फटिक-सम फेनिल लहरों के कर्कश गायन में, वे एक नवीन आनन्द का अनुभव कर रही थीं।

पिता की आज्ञा पर अपने दोनों जवान लड़कों को कमीज की बाँहें चढ़ा कर, डाँडे चलाते हुए उन्होंने देखा। माँ का हृदय ममता से ओत-प्रोत हो उठा। ओठों को दाँतों से दबाये, भौहें चढ़ाये, पिएर खूब कड़े हाथ डाँडों पर मार रहा था। कोमल गोलाकार भुजदण्ड के अन्दर चलती मांस-पेशियाँ इस कथन की पुष्टि करती थीं, कि ज्याँ भी अपनी पूरी ताकत से डाँडे चला रहा है। दोनों भाइयों में एक प्रतियोगिता के भाव जागृत हो उठे थे। ज्यां कमजोर पड़ रहा था। सहसा दोनो हाथों को ऊपर उठा रोलेन्ड चिल्लाया—बस !

दोनों डाँड़े एक साथ पानी के ऊपर उठ गये। तब ज्याँ अकेला ही नौका को घाट तक खेकर ले गया। पिएर हाँफ रहा था। मस्तक पर प्रसवित श्रमकाणों को पोंछते हुए उसने कहा—ओफ ! मुझे क्या हो गया ? इतने से ही पसीना-पसीना हो गया।

ज्याँ के माथे पर बल तक न पड़े थे। उसके अधरों पर विजयी की मंद मुस्कान थी।

ज्येष्ठ पुत्र को अधिक उद्विग्न देख माँ ने कहा—क्यों रे पिएर ! तुझे क्या हो गया ? इस तरह व्यग्र होने की क्या जरूरत है ? अभी तक तेरा लड़कपन नहीं गया !

श्रीमती रोजमिली ऐसे बैठी थीं, जैसे वह कुछ देख सुन ही नहीं रही हैं। वे पश्चिम क्षितिज की ओर मुँह किये थीं। अचल प्रतिमा, नौका के प्रत्येक पग पर हिल उठती थी।

किनारे पहुँचते ही नगर का कोलाहल फिर स्पष्ट हो गया। समुद्र देखने के लिए आने वाली अपार भीड़ को चीरते हुए, वे पाँचों चुपचाप घर की ओर चले जा रहे थे। किसी अच्छे जौहरी की सजी दुकान, अथवा कोई भड़कीली वस्तु देख, वे क्षण भर के लिए ठहर कर, उसे मुग्ध हो निहारते और फिर आगे बढ़ते।

'अब भोजन भी हमारे ही यहाँ होगा,—क्यों मैडम रोज़मिली!' रोलेन्ड ने पूछा।

'हां, और क्या।'—श्रीमती रोज़मिली ने किञ्चित मुस्करा कर उत्तर दिया—'दिन भर आप लोगों की मंडली का आनन्द लूट कर, अब एकान्त में भोजन करने की कल्पना प्रिय नहीं मालूम पड़ती।'

छोटा-सा साफ-सुथरा दो खंड का मकान, उन्नीस वर्ष की चंचल नौकरानी जोसिफिन, जो देखने में बुरी न लगती थी। मालिक के आने की आहट पाते ही उसने ड्राईंग-रूम खोल दिया।

'एक आदमी आपको तीन बार पूछकर चला गया।'—फादर रोलेन्ड के चौखट के अन्दर पैर रखते ही उसने कहा।

घर में रोलेन्ड सदा ही चीख-चीख कर बोलता था। नौकर-चाकर सभी उसकी इस आदत से परिचित थे।

'क्या कहा? कौन आया था?'—रोलेन्ड चिल्लाया।

'वकील साहब के यहाँ से एक आदमी।'

'कौन वकील साहब?'

'वही, मानशोयर कानू !'

'तो उस आदमी ने क्या कहा ?'

'यही कि वकील साहब आज शाम को आप से मिलना चाहते हैं।'

मानशोयर मैटरी-ली-कानू उनके घर के वकील थे। जब कभी कोई आवश्यक कार्य होता, तभी वह इस प्रकार कहलवा भेजते। चारों आदमी कल्पना करने लगे कि कौन-सा काम हो सकता है।

'किसी ने वसीयत वगैरह की होगी' लीजिए अब क्या है !'—क्षण भर पश्चात् श्रीमती रोज़मिली ने मुस्कराते हुए कहा।

परन्तु सगे-सम्बन्धियों में कोई ऐसा नहीं था, जिसकी मृत्यु की आशंका की जा सके।

मैडम रोलेन्ड बड़ी तत्परता से इस विषय पर छानबीन कर रही थीं।

'जोजेफ लेबस की दूसरी शादी किसके साथ हुई थी ?'—क्षण भर पश्चात उसने उत्सुकता से चमकती आँखों को पति की ओर घुमाते हुए पूछा।

'एक बच्ची थी, डुमेनिल। किसी कागजवाले की लड़की थी।'

'उनके लड़के-बाले थे ?'

'अनुमान तो है कि थे—चार-पांच !'

निराश हो, श्रीमती रोलेन्ड फिर कुछ सोचने लगीं।

पिएर ने हँस कर कहा—मेरे विचार में तो ज्याँ की शादी के सम्बन्ध में कोई बात है।

सब चौंक-से पड़े। मैडम रोज़मिली के सामने ऐसी बात उठा कर यह मुझे उसकी नज़रों से गिराना चाहता है—इस भाव ने ज्याँ को विचलित कर दिया।

'मेरी क्यों, तुम्हारी शादी के सम्बन्ध में होगी। तुम बड़े हो, तुम्हारी पहले होगी! फिर मेरा तो अभी विवाह करने का विचार ही नहीं है।'—उसने कहा।

पिएर ने नाक सिकोड़ कर कहा—तो क्या तुम किसी के प्रेम-जाल में फँसे हो?

दूसरे ने झुँझलाकर उत्तर दिया—तो क्या इसके माने यह हैं कि अगर आदमी विवाह नहीं करता, तो वह प्रेम-जाल में फँसा है!

'हाँ, और क्या! अब आये रास्ते पर!...तो तुम अभी विवाह की प्रतीक्षा में हो?'

'अच्छा हूँ, तब?'—ज्याँ ने खिसिया कर कहा।

सहसा रोलेन्ड ने मेज पर हाथ पटकते हुए कहा—तुम दोनों भी कैसे बेवकूफ हो, जो आपस में लड़ने लगे। देखो, मैंने ठीक ठीक अनुसन्धान कर लिया! मेटरी-ली-कान् हमारा मित्र है। वह जानता है कि तुम दोनों नौकरी की तलाश में हो। उसने इसी सम्बन्ध में कुछ तजवीजा होगा।

'खाना तैयार है।'—उसी समय नौकरानी ने आकर कहा।

पाँच मिनट पश्चात् वे सब चुपचाप भोजनालय में बैठे अपना-अपना उदर भर रहे थे। रोलेन्ड से अधिक देर तक चुप न बैठा गया। उसके दिमाग में रह-रह कर वही बात नाच रही थी—आखिर कौन-सी ऐसी बात थी, जो उसने तीन बार आदमी भेजा ; क्या वह लिख कर नहीं भेज सकता था ? वह स्वयं क्यों कहने आवेगा !

पिएर की समझ में यह कोई आश्चर्य करने की बात न थी।

'कोई गुप्त बात होगी, जिसे उसने स्वयं कहना ठीक समझा होगा !'—उसने सहज भाव से उत्तर दिया।

पर तब भी वे सब हैरान रहे कि बात क्या है। उस समय उन्हें अपने बीच एक बाहरी अतिथि का होना खल रहा था। वे खुल कर बात-चीत न कर सकते थे।

भोजन करके वे सब ऊपर वाले कमरे में जाकर बैठे ही थे कि वकील साहब के आने का संवाद मिला।

रोलेन्ड ने बड़े तपाक से उनका स्वागत किया।

क्षण-भर पश्चात् श्रीमती रोज़मिली ने उठते हुए कहा—अच्छा, अब चलती हूँ। दिन भर की थकी हूँ, अब सोऊँगी। किसी ने उन्हें रोकने का प्रयत्न न किया। वह चली गई। श्रीमती रोलेन्ड ने लोकाचार दिखाते हुए नवागत अतिथि से कहा—महाशय, एक प्याला काफी पीजिएगा ?

'नहीं, धन्यवाद ! अभी खा कर आ रहा हूँ।'

'अच्छा तो एक प्याला चाय !'

'धन्यवाद ! अभी ठहर कर पीऊँगा। पहले काम की बातें हो जायँ।'—प्रकोष्ठ में एकान्त निस्तब्धता छा गई। बस, घड़ी की टिक-टिक और नीचे नौकरानी के बर्तन धोने की खट-पट उसे भंग कर रही थी।

'आप पेरिस-निवासी महाशय ली-आन-मेरीकल को तो जानते होंगे ?'—मैटरी-ली-कान् ने कहा।

पति-पत्नी, दोनो ने उत्तर दिया—हाँ, हाँ !

'वह आपके मित्र थे ?'

रोलेन्ड ने तत्परता से उत्तर दिया—हाँ जनाब, अभिन्न-हृदय मित्र! पेरिस छोड़कर कहीं आने-जाने का उसका मन ही नहीं करता। जबसे यहाँ आया हूँ, उससे मुलाकात नहीं हुई है। पहले तो पत्र-व्यवहार होता था; पर आप तो जानते ही हैं कि इतनी दूर बैठकर कौन किसको लिखता है और कौन जवाब देता है।

'वह मर गये !'—मैटरी-ली-कान् का गम्भीर स्वर प्रकोष्ठ में मुखरित हो उठा।

जैसा कि लोग ऐसे अवसर पर करते हैं, पति-पत्नी, दोनों ने एक आह खींचकर शोक प्रकट किया।

मैटरी-ली-कान् ने फिर कहा—पेरिस से मेरे एक मित्र ने उनके दान-पत्र की मुख्य बातें बतलाई हैं। ज्याँ अब उनकी सारी सम्पत्ति का मालिक है।

सभी आश्चर्य-स्तंभित थे।

श्रीमती रोलेन्ड की आँखों से झर-झर आँसू बह चले थे। वे आँसू द्रवित हृदय के कतरे थे।

रोलेन्ड को मित्र की मृत्यु का समाचार सुन, दुःख की अपेक्षा प्रसन्नता हो रही थी। दान-पत्र में क्या-क्या लिखा है? सम्पत्ति का मूल्य क्या है? ऐसे-ऐसे प्रश्न पूछने के लिए उसका हृदय उछल रहा था; पर एक दम से इन बातों को पूछना शिष्टता के विरुद्ध है; इसीलिए उसने कहा—बिचारा बीमार था क्या?

'यह मैं नहीं जानता। मुझे तो बस इतना मालूम हुआ है कि बिना वारिस के होने के कारण वह अपनी बीस हजार सालाना की सम्पत्ति ज्याँ को दे गये हैं। अगर ज्याँ उसे अस्वीकृत कर देगा, तो वह किसी अनाथालय को दे दी जायगी।'—कान् ने उत्तर दिया।

रोलेन्ड ने कहा कि वह उदासीन आकृति बनाये बैठा रहे; पर प्रसन्नता उसके अधरों पर फूटी पड़ती थी।

'देखो इसे कहते हैं सहृदयता! मित्रता के मानें यही हैं।'—उसने उल्लसित स्वर में ज्याँ की ओर देखकर कहा।

वकील ने हँसी छिपाते हुए एक आँख का कोना दबाकर, ओठ के कोने को ऊपर चढ़ा लिया।

'यह हर्ष-संवाद मैंने सदेह पधारकर कहना ठीक समझा।'—उसने कहा।

मैटरी-ली-कान् उस समय भूल गया था कि एक अभिन्न हृदय मित्रकी मृत्युका समाचार, हर्ष-समाचार नहीं, शोक-

समाचार है। रोलेन्ड भी अपने मित्र की मृत्यु पर—जिसे घड़ी भर पहले वह 'अभिन्न-हृदय' सम्बोधित कर चुका था—प्रसन्न हो रहा था। हाँ, लूसी और दोनों लड़के शोक-भारावनत चुप बैठे थे।

मैडम रोलेन्ड अपने आँसुओं को घोंट कर पी जाना चाहती थीं; पर वे निर्दयी उनकी मूक-वेदना को सब पर प्रकट कर देने के लिए तत्पर हो रहे थे। रूमाल से मुँह छिपाये, वह सिसक-सिसक कर रो रही थीं।

डाक्टर ने समवेदना प्रकट करते हुए कहा—बिचारा बड़ा नेक आदमी था। बहुधा वह हमें अपने यहाँ भोजन के लिए निमंत्रित करता था—मुझे और ज्याँ को।

ज्याँ सिर झुकाये गाल खुजला रहा था। कुछ कहने के लिए उसने दोबार मुँह खोला; पर न मालूम क्या सोच कर, वह फिर रुक गया। अन्त में बहुत कुछ सोच-विचार कर उसने कहा—हाँ, वह बहुत नेक आदमी था। मैं जाता, तो वह प्यार से मुझे अपने गले लगा लेता था।

रोलेन्ड के विचार दान-पत्र के चारों ओर ही दौड़ रहे थे। कल्पना के सिंहासन पर बैठा, वह देख रहा था कि सारी सम्पत्ति उसके पैरों पर रखी है। वह उन चाँदी के गोल-गोल टुकड़ों को छू-छू कर पुलकित हो रहा है।

'अच्छा, दान-पत्र के सम्बन्ध में कोई बखेड़ा तो न होगा? कोई हकदार तो नहीं है?'—रोलेन्ड ने पूछा।

मैटरी-ली-कान् ने सरलता से उत्तर दिया—नहीं, कोई नहीं। बस, ज्याँ को स्वीकृति-पत्र भर लिख कर दे देना है।

'बस !'—उसने प्रसन्नता से उछलते हुए कहा। पर दूसरे क्षण वह अपनी इस असामयिक प्रसन्नता पर झेंप-सा गया।

'मैं यह सब इसीलिए पूछता हूँ कि पीछे कोई झगड़ा न हो। कर्ज, बकाया, यह, वह, सैकड़ों झंझटें होती हैं। लड़के के लिए सब आगा-पीछा सोचना ही पड़ता है।...हाँ तो ज्याँ स्वीकृति-पत्र अभी लिख कर दे दे ?'

'नहीं, नहीं, कल मेरे आफिस में, दो बजे !'

मैडम रोलेन्ड आँसुओं को पोंछ कर, अपनी उदासीनता को मिटा डालने का प्रयत्न कर रही थीं। मैटरी-ली-कान् की कुर्सी के निकट जाकर कृतज्ञता-भरी आँखों से उसे निहारते हुए, फीकी हँसीसे उन्होंने कहा—अच्छा, अब तो एक प्याला चाय पी लीजिए।

'हाँ, हाँ, शौक से, लाइए !'

आज्ञा पाते ही जोसिफिन चाय की ट्रे ले आई। दूसरी बार वह एक तश्तरी में केक, बिसकुट, नमकीन आदि चीजें रखकर ले आई।

मैटरी-ली-कान् कुर्सी पर झुका हुआ, धीरे-धीरे एक-एक घूँट कर चाय की प्याली खाली कर रहा था। मैडम रोलेन्ड निकट ही बैठीं, मछली के शिकार खेलने का विवरण बतला रही थीं।

रोलेन्ड अँगीठी के पास झुका बैठा, हाथ सेंकता हुआ, अपनी प्रसन्नता का बड़ी कठिनता से दमन कर रहा था। इस प्रकार मनोभावनाओं को छिपाने में उसे एक वेदना का अनुभव हो रहा था। आँखों के कोने से वह जब-तब मैटरी-ली-कान् को देख लेता था। चाय पीकर, वह जाने के लिए उठ खड़ा हुआ।

हाथ मिलाते हुए रोलेन्ड ने कहा—हाँ, तो कल ज्एाँ आपके पास आयेगा।

'दोपहर में दो बजे !'

'हाँ, दो बजे !'

और मैटरी-ली-कान् के आँखों से ओझल होते ही, रोलेन्ड ने प्रसन्नता से उछलते हुए, ज्एाँ की पीठ पर अपना वात्सल्यपूर्ण हाथ पटक कर कहा—क्यों रे बदमाश, इतनी लम्बी रकम का मालिक बन गया और तब भी गुम-सुम बैठा है !

ज्एाँ के अधरों पर एक क्षणिक मुस्कराहट खेल गई।

रोलेन्ड फूला न समाता था। वह कमरे में टहल-टहल उल्लसित स्वर में बड़बड़ा रहा था—इसे कहते हैं भाग्य ! हाँ जनाब भाग्य।

पिएर ने पिता से पूछा—तो मैरीकल आपका गहरा दोस्त था ?

'हाँ जी ! तुम्हें याद नहीं—रोज सन्ध्या को वह हमारे यहाँ आता था। तुम लोगों को वह अपने साथ घुमाने ले जाता था। ज्एाँ के पैदा होने के समय तो वह बिचारा बहुत दौड़ा-धूपा था। हम सब लोग भोजन कर रहे थे कि एकाएक तुम्हारी माँ की

तबीयत खराब हो गई थी। वह उसी दम डाक्टर के यहाँ दौड़ा गया। जल्दी में अपनी हैट के बदले मेरी हैट पहन गया था। मरते समय उसने सोचा होगा—'ज्याँ के लिए मैं इतना दौड़ा-धूपा था, अब उसके सिवाय है कौन ?'

मैडम रोलेन्ड कुर्सी में सिर गड़ाये बैठीं, स्मृति के आलोक में अतीत के उन भूले दृश्यों को फिर देख रही थीं। एक आह खींच, सिर उठाकर वह बड़बड़ाई—बिचारा कैसा नेक आदमी था, कितना सहृदय ! ऐसे आदमी दुनिया में कम होते हैं।

ज्याँ ने उठते हुए कहा—जरा मैं घूमने जाता हूँ।

पिता ने चाहा कि वह अभी न जाय। जायदाद का प्रबन्ध कैसे होगा ? भविष्य में अब क्या करना होगा ?—इस विषय पर वह उससे परामर्श करना चाहता था ; पर ज्याँ एक जरूरी काम का बहाना कर चला गया।

क्षण-भर पश्चात् पिएर ने भी उठते हुए कहा—जरा बाहर ठंढी हवा में घूम आऊँ !

लड़कों के जाते ही रोलेन्ड ने पत्नी को बाहुपाश में आबद्ध कर, उसके मुख पर न-मालूम कितने चुम्बन अंकित कर दिये।

'देखो प्यारी, इसे कहते हैं भाग्य ! कौन जानता था कि आज यह हर्ष-समाचार सुनने में आयेगा !'

मैडम रोलेन्ड गम्भीर बनीं विचार-सागर में डूब-उतरा रही थीं।

'अच्छा, ज्याँ का तो ठीक हो गया ; पर पिएर... ?'

रोलेन्ड ने लापरवाही से उत्तर दिया—अरे वह डाक्टर है। स्वयं लाखों पैदा करेगा। फिर भाई क्या मदद नहीं करेगा ?

'यह ठीक है ; पर क्या इससे पिएर क्षुब्ध न होगा ?'

वृद्ध से कोई ठीक उत्तर न बन पड़ा।

'हम अपने दान-पत्र में उसे अधिक दे देंगे !'—उसने सरलता से उत्तर दिया।

'उँहुँ, यह ठीक नहीं।'

वृद्ध ने झुँझलाकर उत्तर दिया—ठीक नहीं, तो न सही। तुम भी व्यर्थ की बातों में परेशान होती हो। इस खुशी के समय ऐसे झगड़े लेकर बैठी हो। अच्छा, मैं तो चला सोने !

और वह बड़बड़ाता हुआ चला गया।

मैडम रोलेन्ड कुर्सी पर बैठीं न मालूम क्या-क्या सोचती रहीं।

७

पिएर का मन भारी-सा हो गया था। दोनों किनारे आलोक-माला से पंक्तिबद्ध सड़क पर, वह पीठ पर हाथ बाँधे, बगल में छड़ी दबाये चला जा रहा था। निस्तब्ध रात्रि में कर्कश पवन का तीखा स्पर्श, उस समय उसे प्रिय लग रहा था। उसके हृदय पर एक आघात लगा था; पर यह नहीं कह सकते कहाँ? बस, एक मीठा-मीठा दर्द भर मालूम पड़ रहा था। इस दर्द के ही कारण उसका मन भारी-सा हो गया था। वह चाहता था कि इस अदृश्य घाव की उपस्थिति ज्ञात करे। पीड़ा है, बेचैनी है, अशान्ति है, प्रतीत होता है कि कोई घाव है; पर आखिर वह घाव है कहाँ पर?

चौराहे पर पहुँच कर, सामने थियेटर-हाल के मस्तक पर सुशोभित प्रकाश-श्रेणी तथा सुमधुर संगीत-लहरी ने उसे आकर्षित किया। वह उधर बढ़ा; परन्तु द्वार तक पहुँचते-पहुँचते फिर ठिठक गया। थियेटर में कितने परिचित मित्र मिलेंगे। वे हँसेंगे

बोलगे, पियेंगे और उसे पिलायेंगे। और पिएर को इस समय यह हँसी-दिल्लगी मानव जाति का एक कृत्रिम स्वभाव प्रतीत हो रहा था। उसे इससे घृणा हो रही थी। वह तो इस समय चाहता है एकान्त, जहाँ किसी आदमी का चेहरा न दिखाई पड़े।

घड़ी-भर इधर-उधर निर्जन सड़क पर भटकने के पश्चात् वह समुद्र-तट की ओर चला।

पिएर अपनी इस उद्विग्नता का उद्गम खोज निकालना चाहता था। वह अपनी हृत्तंत्री को खोज-भरी आँखों से देख रहा था, कि कौन-सा तार क्यों और कैसे झनझना उठा है।

और उसने स्वगत पूछा—ज्याँ के नाम दान-पत्र इस बात के कारण ?

हाँ, सम्भवतः वही बात है, जिसके कारण उसके हृदय में एक शूल उठता है। वकील साहब ने जब वह बात कही थी, तो सहसा उसके हृदय की गति तीव्र हो गई थी। भावनाओं की एक आँधी बह चली थी, जिसमें वह अपने 'मैं' को भी भूल गया था। मनुष्य सर्वथा तो अपने ऊपर विजयी होता नहीं।

उसने अपनी भावनाओं का विश्लेषण करने का प्रयत्न किया; अगर भाई का भाग्य-नक्षत्र चमक उठा है, तो वह क्यों उद्वेलित हो रहा है ? पिता का एक मित्र मरते समय उसके नाम अपना दान-पत्र लिख गया है। वह अब सुख-पूर्ण जीवन व्यतीत करेगा। मन-मानी खायेगा, पीयेगा, मौज उड़ायेगा। सम्भवतः वह मैडम

रोज़मिली से विवाह कर ले। और वह, पिएर मेहनत करे, पेट भरे, जैसे-तैसे दिन काटे ! अगर एक भाई मौज उड़ाये तो क्या दूसरे गरीब भाई को क्षोभ न होगा ?

'मैडम रोज़मिली से विवाह'—इस बात ने उसे और अधिक विचलित कर दिया। क्या मैं उस खूसट युवती से प्रेम करता हूँ ?–वह अपने आप कहने लगा। किसी सपक्ष समालोचक की भाँति, वह उसकी बुराइयों को ही ध्यान में ला कर अपने मन में यह बिठाने का प्रयत्न करने लगा कि मैडम रोज़मिली असभ्य है, असुन्दर है, वह उससे किंचित-मात्र भी प्रेम नहीं करता ; अगर वह खूसट युवती उससे विवाह का प्रस्ताव भी करे, तो वह नाहीं कर देगा।

समुद्र का भीषण गर्जन सुन कर पिएर की विचार-धारा भंग हुई। आश्चर्य से उसने देखा कि वह समुद्र-तट पर खड़ा है। पार्श्ववर्त्ती घाट पर जलती सर्चलाइट, जैसे उसके हृदय में प्रवेश कर रही थी। दूर तक आँखें दौड़ाने पर ऐसा प्रकाश प्रत्येक घाट पर आलोकित नज़र आता था। प्रकृति की उस एकान्त नीरवता को भंग करता हुआ वह जैसे वहाँ भी भेद-भाव का सृजन कर रहा था। अपनी लम्बी-लम्बी किरणों द्वारा जैसे इंगित कर रहा था—यह मैं हूँ ! यह मैं हूँ !! यह मैं हूँ !!!

पिएर ने निरुद्देश्य, जेब से दियासलाई की डिबिया निकालकर एक तीली जलाई और उसके प्रकाश में पास ही गड़े बोर्ड पर

अंकित आने-जाने वाले जहाजों का नाम पढ़ने लगा। पर क्षण-भर पश्चात्, वह उस सलाई की रोशनी से बिचक उठा। तब उन सर्चलाइटों का प्रकाश भी उसकी आँखों में तीव्रतर होकर चमक उठा। उसे अपने चारों ओर आँखों में चकाचौंध कर देने वाला प्रकाश व्यापता प्रतीत हुआ। वह घबड़ा उठा। इतना प्रकाश! नहीं, वह प्रकाश नहीं चाहता! उसे चाहिए अंधकार, घोरतर अंधकार!

थोड़ी दूर जा कर वे सर्चलाइट अदृश्य हो जाती थीं। उस स्थल पर पहुँच कर पिएर ने एक संतोष की साँस ली। छड़ी के सहारे अपना बोझ टेकते हुए, वह सामने देखने लगा। वह जल-राशि ऊपर के गगन से भी अधिक श्यामल प्रतीत हो रही थी। यत्र-तत्र चमकते तारे, मालूम पड़ता था, किसी ने बिखरा दिये हैं। सागर का गर्जन सुन-सुन कर वे भय से काँप रहे हैं। उनकी झिलमिलाहट में एक करुणा है, सौहार्द है।

उसी समय पीछे से क्षितिज के वक्षस्थल पर चन्द्रमा उठता दिखाई पड़ा। तारों ने चमक कर उसका स्वागत किया। उसकी सहस्रों किरणों ने, जैसे कण-कण में प्रवेश कर उनमें एक नवजीवन का संचार कर दिया। चारों ओर एक नवीन आभा-सी फूट पड़ी। पिएर एकटक उधर देख रहा था। उसे मालूम पड़ा, जैसे वे शीतल किरणें शरीर में घुस-घुस कर उसके उद्विग्न हृदय को शान्त कर रही थीं।

सहसा उसके निकट ही अंधकार में एक छपाका हुआ। श्यामल जल पर एक नौका जोर से जाती हुई दिखाई पड़ी। चन्द्र के उज्ज्वल प्रकाश में उस अगम्य जल के ऊपर किसी पक्षी की तरह उड़ती-सी, वह नौका बड़ी भली प्रतीत होती थी।

पिएर को उस समय नौका-विहार की कल्पना बड़ी सुखद मालूम पड़ी। कुछ दूर पर बेंच पर बैठे हुए, एक मनुष्य की छाया दृष्टिगोचर हुई। कौन है यह, कोई कवि, कोई निराश हृदय-प्रेमी, कोई काल्पनिक, कौन? वह उस मनुष्य को निकट से देखना चाहता था। आगे बढ़ते ही उसने अपने भाई को पहचान लिया।

'कौन, ज्याँ तुम हो?'

'हाँ, पिएर! तुम यहाँ कैसे?'

'जरा ताज़ी हवा के लिए चला आया था! और तुम?'

ज्याँ ने हँसकर कहा—मैं भी उसी के लिए!

पिएर अपने भाई के बगल में बैठकर चारों ओर मन्त्र-मुग्ध-सा देखता हुआ बुदबुदाया—कितना मनोरम है!

'हूँ—अत्यन्त मनोरम!'

'इस ओर निकल आता हूँ, तो बस मन यही करता है कि कोई नौका ले लूँ और उसी पर घूमा-घूमा फिरूँ। स्वच्छ-तारिका-खचित आकाश के नीचे सागर की तालों पर नृत्य करती नौका की छाती पर सवार होने में कितना आनन्द आता है! इस

प्रकार विहार करते हुए किसी फूलों के अथवा परियों के देश में जा पहुँचें ! वहाँ.................'

सहसा पिएर चुप हो गया। ज्याँ अब अमीर हो गया है। उसके सामने रोटीका प्रश्न नहीं। चारों ओर सुख-ही-सुख है। वह मैडम रोज़-मिली से विवाह करके चैनकी वंशी बजायेगा।—इन्हीं भावनाओं ने उसकी कल्पना के पंख तोड़-से दिये। पुराने भाव फिर जागृत हो चले।

उठते हुए, भाई के दोनों हाथ अपने हाथों में लेकर उसने भारी आवाज में कहा—अच्छा चलता हूँ। ... तुम्हारे भाग्य के लिए मैं बधाई देता हूँ।

नेक दिल ज्याँ ने कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा—धन्यवाद, मेरे अच्छे भाई, धन्यवाद !

और पिएर फिर नगर के कोलाहलमय भाग की ओर चला। उसने मारोवसको के साथ एक गिलास मदिरा पीने का निश्चय किया था।

मारोवसको को उसने पहले-पहल पेरिस के एक अस्पताल में देखा था। उसके विषय में लोगों ने न मालूम कितनी धारणाएँ कर रखी थीं। कहा जाता है, वह एक क्रान्तिकारी दल का सदस्य है, जान हथेली पर लिये फिरता है, मृत्यु भी उससे डरती है। डाक्टर से वह कुछ ऐसा घुलमिल गया था कि उसी के साथ वह भी हावेर चला आया। यहाँ उसने दवाइयों की दुकान खोल रखी थी। सोचा था—डाक्टर के भाग्य-सितारे के चमकने के साथ ही मेरी दुकान भी चमक उठेगी।

पिएर बहुधा उसकी दुकान पर जाया करता था। शान्त मुख-मण्डल, गढ़े में धँसी तेज आँखें, तथा चुप रहने की आदत—इन सब बातों ने उसके चारों तरफ़ रहस्य का ऐसा आवरण डाल रखा था, जिसकी ओर मन अनायास ही आकर्षित हो जाता है।

दुकान पर केवल एक बत्ती जल रही थी। किफायतशारी के लिए खिड़की की बत्तियाँ बुझा दी गई थीं। एक आरामकुर्सी पर दोनों टाँगे फैलाये, छाती पर मुँह लटकाये, मारोवसको सो रहा था। उसकी लम्बी नाक स्वर में घर्र-घर्र कर रही थी। दुकान की घंटी की आवाज़ पर वह जाग उठा, और पिएर को देखते ही उसने बड़े तपाक से उससे हाथ मिलाया, और उसे अपने बगल में बिठाता हुआ बोला—कहो डाक्टर, क्या हालचाल है ?

'कोई नई बात नहीं। वही रफ्तार बेढंगी।'

'आज तुम प्रसन्न नहीं मालूम पड़ते।'

'मैं बहुधा ऐसा ही रहता हूँ।'

'हूँ, गोली मारो इस उदासीनता को। जीवन में सरसता को स्थान देना चाहिए !...हाँ, एक प्याला...क्यों ?'

'हाँ, हाँ, कोई हर्ज नहीं।'

'आज मैं तुम्हें एक नई चीज पिलाऊँगा। अभी तक अंगूरों का रस ही निकलता था, मैंने उससे मदिरा तैयार की है। एक नया आविष्कार !'

'हः-हः-हः !!!'

और दवाइयों की मेज पर से एक लाल बोतल उठा लाया। छलकते नेत्रों से उसने काग खोला और फिर दो गिलासों में मदिरा उँडेली।

पिएर ने गिलास के भीतर देखकर मदिरा का रंग पहचानने का प्रयत्न करते हुए कहा—हलका गुलाबी, क्यों ?

मारोवसको को मदिरा की गंध ने उन्मत्त बना दिया था। नशे में झूमते हुए उसने कहा—हाँ !

डाक्टर ने एक-एक घूँट पी कर गिलास खाली कर, ओठ चाटते हुए कहा—ओह, वहुत ही स्वादिष्ट ! बहुत ही स्वादिष्ट ! बधाई मारोवसको। तब, मारोवसको ने यह प्रसंग छेड़ दिया कि उस मदिरा का नाम क्या रक्खा जाय। बड़ी देर की बहस के बाद उसका नाम 'अंगूरी' रखने का निश्चय हुआ। फिर, वे कुछ देर चुप बैठे रहे।

आज सन्ध्या को एक नई घटना हो गई !—पिएर ने प्रकोष्ठ की नीरवता को भंग करते हुए कहा—मेरे पिता के एक मित्र की मृत्यु का समाचार मिला है। वह अपना दानपत्र ज्याँ के नाम लिख गया है।

मारोवसको पहले तो बात ठीक तरह से समझ न पाया। उसने सोचा कि आधी जायदाद ज्याँ को मिली होगी, आधी पिएर को ; पर जब पिएर ने बात स्पष्ट करते हुए उससे फिर कहा, तो उसने आश्चर्य-मुद्रा धारण कर कहा—यह तो ठीक नहा जँचता

अन्तर्वेदनाओं से तड़पते हुए, पिएर को मारोवसको के यह शब्द बड़े मधुर लगे।

आखिर यह क्यों नहीं ठीक जँचता ? इसमें ठीक न जँचने की कौन-सी बात है ! पिएर ने खोद-खोदकर पूछना चाहा ; पर वृद्ध ने इतना ही कहा—भई, मेरी समझ में यह बात ठीक नहीं जँचती। तुम दोनों को आधी-आधी जायदाद मिलनी चाहिए थी।

और जब डाक्टर घर लौटकर आया, तब भी उसके कानों में मारोवसको के उक्त शब्द गूँज रहे थे। बगल के कमरे में ज्याँ के टहलने की पद-ध्वनि सुनाई पड़ी। उसने एक गिलास पानी से अपना गला तर किया और फिर सो गया।

३

दूसरे दिन प्रातःकाल जब डाक्टर सोकर उठा, तो उसने स्वयं रुपया पैदा करने का दृढ़ निश्चय कर लिया था। कितनी बार वह ऐसा निश्चय कर चुका था; पर कल्पना के वे विशाल महल जरा-सी ठेस लगते ही चकनाचूर हो जाते थे। और वह फिर किसी नई कल्पना का स्वप्न देखता था। लिहाफ़ में पड़ा, कोमल शय्या पर लेटा, वह सोच रहा था कि कितने डाक्टर देखते-देखते करोड़पति बन गये हैं, क्या वह नहीं हो सकता? बस आदमी में जरा दुनियादारी होनी चाहिए। कितने ऐसे डाक्टरों को वह जानता है; पर उसके कथनानुसार वे सब निरे गधे हैं, गधे! वह उन लोगों से कहीं अच्छा है। बस हावेर के दस-पाँच बड़े-बड़े घरों में उसकी धाक जम जाय, फिर हज़ार रुपये महीने की आमदनी तो निश्चित है। और वह सोचने लगा कि जब वह इतना प्रसिद्ध डाक्टर हो जायगा, तब उसका कार्यक्रम क्या होगा? ...सुबह के समय मरीज़ों को

उनके घर पर देखने जाना। फ़ीस बीस फ्रांक ! अगर दस मरीज़ रोज़ भी देखे, तो बहत्तर हज़ार फ्रांक प्रति वर्ष तो पक्के रहे। दोपहर के समय मरीज़ों को अपने घर पर देखना। फ़ीस दस फ्रांक ! दस मरीज़ रोज़ देखे तब भी छत्तीस हज़ार फ्रांक की वार्षिक आय होगी। कभी-कभी कोई रिश्तेदार अथवा कोई मित्र आ जायगा, तो मुरौवत में वह उनसे फ़ीस न लेगा, और अगर लेगा भी, तो नाममात्र ! कभी घटनावश एक के दो भी तो मिल जाते हैं। बस लेखा-ड्यौढ़ा बराबर रहेगा। दस हज़ार फ्रांक प्रति मास खाने-खरचने, और मौज उड़ाने के लिए काफ़ी हैं।

इस स्वप्न को सत्य में परिणत करने के लिए उसे प्रथम आवश्यकता है एक शानदार बंगले की, आकर्षण सबसे बड़ा विज्ञापन है। तब वह अपने भाई से अधिक अमीर हो जायगा, और अपने बल पर। वह एक ख्यातनामा प्रतिष्ठित नागरिक बन जायगा। माता-पिता भी, फिर फूले न समाएँगे। वह बीबी-बच्चों का झगड़ा तो पालेगा नहीं। हाँ, जीवन का आनन्द लूटने के लिए, वह कोई प्रेमिका रख लेगा, खूब सुन्दर, नवयुवती, हंसमुख !

अपनी इन कल्पनाओं में डूबकर पिएर इतना हर्षोत्फुल्ल हो उठा कि वह बिछौने पर से उछल पड़ा। उसने उसी समय कोई सुन्दर बंगला खोज निकालने का निश्चय किया था।

सड़कों पर भटकते समय वह अपने को धिक्कारने लगा कि

उसने यह निश्चय महीने भर पहले क्यों न कर लिया, मैरीकल की वसीयत का समाचार मिलने से पहले। अब तक तो उसकी प्रैक्टिस चमक चुकी होती, और इस घटना पर उसे इतना दुःख भी न होता।

किसी मकान पर 'किराये पर जायगा' की तख़्ती टँगी देखते ही वह रुक कर उसे एक नज़र देखता और फिर उसे मनोनुकूल न पा, आगे बढ़ता। दोपहर को भोजन के समय जब वह घर लौटकर आया, तो उसने कितने ही ऐसे बंगलों के नाम, जो अच्छे हैं और खाली भी हैं, अपनी डायरी में नोट कर लिये थे। अब उनमें से सबसे अधिक उपयुक्त बंगले को छाँटना भर शेष रह गया था। बड़े कमरे से तश्तरियों के खिसकाने की तथा चम्मचों की खनखनाहट की आवाज़ आ रही थी। तो क्या अब मैं दूध की मक्खी हो गया? किसी को मेरा ख़याल ही नहीं, मेरे बिना ही भोजन आरम्भ हो गया! पिएर की भृकुटि चढ़ गई। माथे पर बल पड़ गया।

'पिएर! ऊँह, जल्दी आओ जी! जानते नहीं कि आज दो बजे वकील साहब के यहाँ जाना है! आज का एक-एक मिनट अमूल्य है।'—पिएर के हाल में आते ही पिता ने कहा।

माँ का मस्तक चूम कर तथा पिता व भ्राता से हाथ मिलाने के पश्चात् वह एक कुर्सी पर बैठ गया। माँ ने उसकी रकाबी उसके सामने खिसकादी। भोजन ठंडा हो गया था।

उसके आने के कारण होती बातचीत में विघ्न पड़ गया था। वह अब फिर आरम्भ हो गई।

'अगर मैं तुम्हारी जगह होती'—मैडम रोलेन्ड ने ज्याँ की ओर देखते हुए कहा—'तो जानते हो क्या करती? एक शानदार बंगला लेती, जिससे लोगों का मन उसकी ओर आकृष्ट हो। रोब गाँठने के लिए नित्य प्रति घोड़े पर बैठ कर सैर करने के लिए जाती, महीने में दो-चार अच्छे-अच्छे मुकद्दमे ले लेती, कोर्ट में अपना प्रभाव जमाने के लिए। मैं अपने को एक उच्चकोटि का वकील प्रदर्शित करने का प्रयत्न करती। छोटे, ग़रीब मुवक्किलों से तो बात न करती। ईश्वर की कृपा से अब तुम्हें किसी बात की चिन्ता नहीं। अब तुम जो चाहो कर सकते हो। हाँ, बेकार बैठना ठीक नहीं, आदमी को कुछ-न-कुछ अवश्य करना चाहिए। रुपये के लिए न सही, तो सेवा के लिए ही सही।'

वृद्ध रोलेन्ड नासपाती छील रहा था। उल्लसित स्वर में उसने कहा—लूसी! जानती हो मैं क्या करता? एक सुन्दर नौका लेता, ऐसी नौका कि किसी के पास न हो, और फिर आनन्द-पूर्वक समुद्र की सैर करता।

पिएर ने भी अपनी राय जाहिर की। 'यह दौलत नहीं है।'—उसने कहा—'जो आदमी को आदमी बनाती है, वह बुद्धि है। धन तो एक बहुत बड़ा अस्त्र है, अयोग्य पुरुष के हाथ में जा कर उसके पतन का कारण बन जाता है और एक योग्य पुरुष के हाथ में

जा कर लोकोपकार का साधन हो जाता है ! दुनिया में योग्य पुरुष कम होते हैं। ज्याँ को चाहिए कि अब यह दिखा दे कि उसमें भी कुछ योग्यता है। उसे चाहिए कि पहले से भी अधिक परिश्रम करे। मुकद्मों में सत्य का पक्ष ले। ग़रीबों का गला न घोंटे, उनकी मदद करे।' —और उसने अपना वक्तव्य इस प्रकार समाप्त किया—'अगर मैं उसकी जगह पर होता तो ऐसा ही करता !'

फ़ादर रोलेन्ड ने कन्धा सिकोड़ते हुए कहा—यह सब कोरी दार्शनिकता की बातें हैं। जीवन वही उत्तम है, जिसमें काम अधिक न करना पड़े, सरलता से, आनन्द से दिन कटते जाँय ! हम आदमी हैं, जानवर नहीं ! अगर कोई ग़रीब है, तो उसे मजबूरन काम करना पड़ेगा ; पर जब हम अमीर हैं, तो क्यों न टाँग फैला कर सोवें, आनन्द से दिन काटें ?

पिएर ने नाक सिकोड़ते हुए उत्तर दिया—हम लोगों में मत-भेद है। मैं तो दुनिया में किसी चीज़ को महत्व नहीं देता, बस केवल विद्या और बुद्धि प्रधान मानता हूँ। इनके सम्मुख और सब चीज़ें हेय हैं।

चतुर मैडम रोलेन्ड ने झगड़ा बढ़ने की आशंका देख बात का प्रसंग बदल दिया। थोड़े ही दिनों पहले पड़ोस में एक खून हो गया था। उसने उसी विषय को छेड़ दिया। सब के मस्तिष्क इस बात को लेकर नाना प्रकार की विवेचना करने लगे। खूनी

कैसे घर में घुसा होगा, भागा कैसे होगा, फिर क्या हुआ होगा !—आदि आदि। रोलेन्ड तब तक अपनी कलाई में बँधी घड़ी को देखता जाता था। सहसा उठते हुए उसने कहा—अच्छा अब चलना चाहिए, समय हो गया।

पिएर ने देखा, अभी एक बजा है और इन लोगों को अभी से इतनी जल्दी है। उसके शरीर में एक आग-सी लग गई।

'वकील साहब के यहाँ तुम भी चलते हो ?'—माँ ने पूछा। 'मैं ? नहीं जाऊँगा !' उसने रूखे स्वर में उत्तर दिया—'वहाँ मेरी क्या आवश्यकता है ?'

ज्याँ ऐसा चुप बैठा था, जैसे उसे इन बातों से कोई सरोकार ही नहीं। हाँ, जब खून वाला प्रसंग छिड़ा था, तब उसने जब-तब दो-एक शब्द कह दिये थे, वह भी इसलिए कि वह एक वकील था। अब वह चुप बैठा था; पर उसकी चमकती आँखें तथा आभायुक्त कपोलों को देखकर कहना पड़ेगा कि वह प्रसन्न है, अति प्रसन्न है।

सब लोगों के जाते ही पिएर भी उपयुक्त बंगला पसन्द करने के लिए चल पड़ा। बहुत देर की छान-बीन के पश्चात् 'बोलीवार्ड .फ्रैंकोयस' नामक सड़क पर उसे एक मनोनुकूल बंगला मिल गया। बंगला बाज़ार के निकट ही लबेसड़क था। बाहर से दिखाई पड़ने वाले चमकते शीशे के खूबसूरत दरवाज़ों की ओर मन अनायास ही आकर्षित हो जाता

था। बंगला छोटा भी न था। बाहर की ओर दो बड़े-बड़े कमरे थे, जो कि मरीज़ों के बैठने के काम में आ सकते थे। भीतरी भाग भी हवादार था, सुन्दर ढंग से बना हुआ था।

परन्तु जब उसे मालूम हुआ कि उसका वार्षिक किराया तीन हज़ार फ्रांक है, जो कि पेशगी देना होगा, तो वह संकुचित हो उठा। उसके पास एक फ्रांक भी न था। माता-पिता की वार्षिक आमदनी केवल आठ हज़ार फ्रांक थी, जो कि घर के खर्च में काम आ जाती थी। दो दिन पश्चात् अपना निर्णय देने के लिए कह कर वह लौटा। मार्ग में उसने सोचा—अगर यह रुपया ज्एाँ से माँगूँ तो? इसमें हर्ज़ क्या है? रुपया बतौर कर्ज़ के लिया जाय! डाक्टरी चलते ही सब रुपया उसे अदा कर दूँगा। बस यही ठीक है!

उस समय चार भी न बजे थे। पिएर ने घर लौट चलना उचित न समझा। निरुद्देश्य वह सड़कों पर इधर-उधर भटकता फिरा। मस्तिष्क शून्य-सा हो रहा था। दिन भर की थकावट के कारण आँखें झिंपी जाती थीं, अंग-अंग टूट रहा था।

ओह, जीवन में कितना परिवर्तन हो गया! वह किस व्यथा और क्लेश में दिन काट रहा है! क्या जीवन का नग्न सत्य यही है?

वह योंही सड़कों पर भटकता रहा। उसकी अभिलाषाएँ

एक सुन्दर घोड़ागाड़ी पर बैठ कर, नगर के एकान्त भाग की ओर जा कर उन्मुक्त पवन के रोमांचकारी स्पर्श का आनन्द लूटने के लिए मचल रही थीं। पर पैसा...? एक प्याला मदिरा के लिए उसे पहले यह देखना पड़ता है कि जेब में पैसा है, अथवा नहीं। तीस वर्ष का युवक, ज़रा-ज़रा सी बातों के लिए माँ के सम्मुख हाथ पसारे, छिः! यह उसके लिए कितनी लज्जा की बात है। और ज्यों? अब वह...!

विचारधारा उसे एक प्रदेश की ओर घसीटे ले जा रही है जहाँ ईर्ष्या की चिनगारियाँ धधकती रहती हैं। उसने दृढ़ता-पूर्वक अपने को रोका।

सड़क के किनारे कुछ लड़के खेल रहे थे। धूल से लिपटे, केश बिखेरे वे एकाग्र चित्त हो बालू का किला बनाने का प्रयत्न कर रहे थे। सबों में एक प्रतियोगिता-सी चल रही थी कि देखें किसका किला सबसे ऊँचा बनता है।

'यही हाल हमारी अभिलाषाओं का है।'—पिएर ने उन्हें देख कर सोचा। और फिर उसने इन्हीं बालकों की भाँति सब कुछ भूल कर इसी तन्मयता से प्रयत्न करते रहने का विचार किया। उसे इस समय अपने निकट एक स्त्री की आवश्यकता प्रतीत हुई। अकेला न होने पर आदमी इस प्रकार चिन्तित नहीं होता। कोई-न-कोई आकांक्षा उसे उलझाये रहती है। हृदय अपने निकट एक स्त्री के हृदय की धड़कन सुन कर इस प्रकार व्यथित

नहीं होता। दिल की व्यथा दूसरे के सम्मुख कह देने पर, मन बहुत कुछ हलका हो जाता है।

तब वह स्त्रियों की कल्पना करने लगा। वह उनके विषय में बहुत कम जानता है। डाक्टरी पढ़ते समय उसकी जान-पहचान दो-चार नर्सों से हुई थी; पर उसकी शुष्कता के कारण उस परिचय से कुछ लाभ न हुआ। अगर वह कुछ साहस से काम लेता, तो अवश्य उनमें से कोई न कोई युवती अपने मनोनुकूल पा ही जाता। और उससे घनिष्ठता कर वह इस समय कितना प्रसन्न होता! आह!

सहसा, किसी प्रेरणा ने उसे मैडम रोज़मिली के घर जाने को उत्तेजित किया; परन्तु वह फिर ठिठक गया। वह उसके मनोनुकूल नहीं! क्यों? असभ्य है, शुष्क है, और फिर वह ज्याँ को पसन्द करती है! और इसी बात से उसका मन उसकी ओर से खट्टा हो गया है। ज्याँ उसका भाई है तो सही; पर अगर कोई उसके हृदय में बैठ कर देखे, तो पायेगा कि वह अपने को ज्याँ से श्रेष्ठ समझता है। और अगर मैडम रोज़मिली उसकी अपेक्षा ज्याँ को पसन्द करती है, तो इसके माने हैं कि उसकी रुचि हेय है। वह उस नीच के यहाँ कदापि न जायेगा।

'तो फिर क्या करूँ?'—पिएर ने स्वगत पूछा। पिछली रात की तरह, वह यह रात भी किसी नीरव स्थान में ठंड से सिकुड़ते हुए तो काट नहीं सकता!

उसे इस समय चाहिए एक सुन्दरी युवती, जिसके आलिङ्गन में बँध कर वह दुनिया को, अपने को, सबको भूल जाय। हृदय-से-हृदय, मुँह-से-मुँह, कमर-से-कमर, जाँघ-से-जाँघ—दोनों शरीर परस्पर में घुलमिल जाने की चेष्टा करने लगें। वह अपनी भावनाओं का ठीक प्रकार विश्लेषण न कर सकता था; पर उसका थकित शरीर एवं मन ऐसी अवस्था में था, जब कि पुरुष किसी स्त्री के अंक में होने की आकांक्षा करता है, उसके आवेशपूर्ण आलिङ्गन तथा मधुर चुम्बन-द्वारा अपने ठंडे हृदय में स्फूर्ति-संचार होने का स्वप्न देखता है, उन प्रेम से छलकती दो नीली आँखों के सन्देश पर उन्मत्त होकर, उसके शरीर में अपना शरीर मिला कर किसी नई दुनिया का सुख लूटने की कल्पना करता है। और उसी समय उसे काफ़े में नौकर एक युवती की याद आई, जिसके साथ वह एक बार घूमने गया था, और तब से आँखें कई बार स्नेह का आदान-प्रदान कर चुकी थीं।

वह उस युवती को देखने के लिए चंचल हो उठा। मार्ग में वह सोचता जाता था कि क्या कहूँगा उससे? वह अपने मन में मुझे क्या समझेगी? सम्भवतः कुछ नहीं! वह जाते ही उसके कोमल हाथों को अपने हाथों में लेकर, उन्हें धीरे से दबायेगा, ओठ के कोने चढ़ा, आँखों से मुस्करायगा, बस युवती उसका आशय समझ जायगी।

काफ़े में कोई था नहीं। युवती खिड़की में बैठी ऊँघ रही थी।

मालिक आराम कुर्सी पर मजे से दोनों टाँग फैलाये मीठी नींद ले रहा था।

पिएर को देखते ही युवती झट से उठ खड़ी हुई।

'कहिए महाशय, सब कुशल !'—दुकान की सीढ़ी पर पैर रखते ही उसने एक युवती का कोमल कंठ-स्वर सुना। पिएर ने प्रसन्न नेत्रों से उसकी ओर देखते हुए, उससे हाथ मिलाया।

'हूँ, तुम तो अच्छी तरह हो ?'—उसने पूछा।

'हाँ, अच्छी समझिए। आप तो अब इधर आते ही नहीं।'

'छुट्टी कम मिलती है। जानती हो, मैं डाक्टर हूँ।'

'अच्छा ! अभी थोड़े दिन हुए मैं बीमार पड़ गई थी। पहले मुझे यह मालूम होता, तो आप ही को बुलवाती।...अच्छा, क्या लाऊँ आपके लिए ?'

'अंगूरी ! और आप क्या पिएँगी ?'

'जब आप कहते हैं, तो मैं भी अंगूरी पी लूँगी।'

और फिर वे दोनों एक मेज़ पर पास-ही-पास बैठ गिलास खाली करने लगे। वह चपल युवती बातचीत करती-करती उसकी ओर एक कटाक्ष कर मुस्करा देती। वह गज़ब की मुस्कराहट थी—चुम्बक पत्थर की भाँति उसमें एक आकर्षण शक्ति थी, जिससे खिंच कर पुरुष उन मुस्कराते कपोलों को अपने अधरों से दबा देने के लिए चंचल हो उठता है।

पिएर का हाथ अपने हाथों में ले, वह उन्हें दबाती, जैसे

कहती हो—बड़े मूर्ख हो, जो इस तरह गुम-सुम बैठे हो। हँसते-हँसते वह उसके ऊपर झुक जाती थी, अपनी टाँगों को उसकी टाँगों पर रख देती, और फिर जैसे यह कृत्य अनजाने में किया हो, लज्जा से लाल हो अलग हो जाती।

पिएर का तथा अपना गिलास दूसरी बार भर कर युवती ने उन्मत्त दृगों से उसकी ओर देखते हुए एक अँगड़ाई ली। पीठ पीछे की ओर तन जाने से, स्वस्थ उन्नत उरोज किसी क्रान्तिकारी की भाँति सिर ऊपर उठा कर जैसे ललकारने लगे—जानते हो, अगर तुमने हमें न दबाया, तो हम हलचल मचा देंगे।

पिएर एकटक उस युवती की ओर निहार रहा था। उसकी प्रत्येक भाव भंगी में एक उच्छृङ्खलता थी, आमंत्रण था—प्यारे, संकुचित क्यों होते हो? आओ कर्म करो। मै हर तरह से तुम्हारे लिए प्रस्तुत हूँ। उसके उस बाज़ारूपन के कारण उसके मन में एक घृणा उपज रही थी। नीच लड़की, जो अपना शरीर चाँदी के कुछ गोल-गोल सिक्कों के लिए विक्रय करती है! वह तो चाहता था एक सुन्दरी, कवियों की कल्पना सरीखी, जिसकी नीली आँखों में, मधुर झिड़कियों में, वह एक प्रेम की दुनिया बसा सके।

'कल प्रातःकाल आप एक सुन्दर नवयुवक के साथ घूमने जा रहे थे! क्या वह आपके भाई हैं?'—युवती ने पूछा।

'हाँ, मेरा भाई है।'

'बहुत सुन्दर !'

'अच्छा !'—पिएर ने आश्चर्य से मुँह बना कर कहा।

'हूँ, उनकी आकृति में, चाल-ढाल में एक मस्तानापन था, जैसे बड़े चैन से वे अपने दिन काट रहे हैं !'

पिएर न मालूम क्यों यह बात सुन संकुचित हो उठा। उसके मन में आया कि मैरीकल के दान-पत्र वाली बात, जो बार-बार उसके हृदय में एक शूल उठाती है, उगल क्यों न दे ?

उसने अपने पैर बाँधते हुए कहा—वह बड़ा भाग्यशाली है। अभी ही वह एक जायदाद का मालिक हो गया है—बीस हजार फ्रांक प्रति वर्ष के मूल्य की ! युवती ने अपनी नीली आँखें फैला कर जैसे इस बात को जानना चाहा।

'अच्छा, तो किसने उसे वसीयत की ? उसकी दादी ने, कि नानी ने ?'

'नहीं, हमारे पिता के एक मित्र ने !'

'एक मित्र ने ! असम्भव ! उन्होंने आपको कुछ नहीं दिया ?'

'नहीं, उनका ज्याँ पर विशेष प्रेम था।'

क्षण-भर पश्चात् युवती ने मुस्करा कर कहा—अच्छा है, ऐसे मित्र भी बड़े भाग्य से मिलते हैं। मैं आश्चर्य किया करती थी कि आपकी और उनकी सूरत में इतना अन्तर क्यों है ! अब समझी !

यह सुन पिएर उत्तेजित-सा हो उठा। इस शोख़ लड़की

के मुँह पर एक तमाचा जमाने के लिए हाथ तन गये। वह इस चहकती चिड़िया को कुचल देना चाहता था, मिट्टी में मिला देना चाहता था; पर फिर भी उसने अपने को रोकते हुए, ओठ चबाते हुए पूछा—क्या समझीं आप ?

युवती ऐसी भोली बन गई थी, जैसे वह कुछ जानती ही न हो। सरलता से उसने उत्तर दिया—यही कि वह आपसे अधिक भाग्यशाली हैं।

मेज पर एक फ्रांक फेंक, पिएर झपट कर बाहर चला आया। उसके कानों में युवती के व्यंग्य-पूर्ण शब्द—'अब समझी !' तब भी गूँज रहे थे। उसके इस कथन का आशय क्या है ? उसके स्वर में व्यंग्य था, अधरों पर एक कुटिलता थी, जैसे कोई घृणा की बात कही हो। शायद वह छोकड़ी ज्याँ को मैरीकल का पुत्र समझ रही है। और इस विचार के आते ही, भावों के अत्यधिक उद्वेलन के कारण वह क्षणभर के लिए स्तम्भित हो गया। फिर, पार्श्ववर्त्ती दूसरे काफे में जा, मुँह मूँद कर वह एक कुर्सीपर बैठ गया। नौकर के आने पर उसने उसे एक गिलास मदिरा लाने की आज्ञा दी।

उसका हृदय तीव्र वेग से धड़क रहा था। क्रोध के आवेग में अंग-अंग काँप रहा था, आँखों से चिनगारियाँ निकल रही थीं। एक दिन पहले मारोवसको ने भी इस घटना को सुन आश्चर्य प्रकट किया था—यह तो ठीक नहीं जँचता ! आज काफे की इस

साधारण युवती ने भी व्यंग्य किया। गिलास में छलकती फेनिल मदिरा की सतह पर उठते और दूसरे क्षण विलीन हो जाते बुलबुलों को देखते हुए उसने स्वगत पूछा—क्या यह सत्य है ?

चाम के उस शरीर में एक तूफान-सा उठ रहा था। उसे प्रतीत हो रहा था कि लोगों का यह सन्देह बिना किसी जमीन के नहीं है। वह कुँआरा पुरुष अगर अपने मित्र के दोनों लड़कों को आधी-आधी जायदाद दे जाता, तो इसमें कोई आश्चर्य की बात न थी ; पर जब वह केवल छोटे भाई के नाम अपनी वसीयत कर गया है, तो लोग स्वाभाविकतया इसमें किसी रहस्य की कल्पना करेंगे। उसे आश्चर्य हो रहा था कि माता-पिता के दिमाग़ में यह बात क्यों न धँसी ! सम्भवतः वे दौलत की खुशी में सब-कुछ भूल गये हैं। फिर, क्या कभी वे ऐसी घृणित बात की कल्पना कर सकते हैं ?

पर पास-पड़ोसी तो खूब हँसेंगे, उसकी माँ का मज़ाक उड़ायेंगे, जैसा कि उस युवती के कथन से प्रतीत होता है। लोगों के मन में ज्यों और उसकी आकृति में अन्तर देख संदेह होता ही है। अब तो वे खुल खेलेंगे ! जब कभी रोलेन्ड के लड़कों की चर्चा होगी, तो कोई उत्सुकता से आँखें उठाकर पूछेगा—कौन-सा, असली कि नकली ?

वह एक झटके के साथ उठ खड़ा हुआ। माँ से सब बातें साफ-साफ कहने के लिए उसने निश्चय कर लिया था। इस

लाञ्छना का प्रतिकार करने के लिए, अब बस एक उपाय था—ज्याँ दानपत्र को अस्वीकृत कर दे।

ड्राइंग-रूम से गिलासों के खनकने की तथा तीव्र अट्टहास की ध्वनि आ रही थी। भीतर जाकर उसने देखा कि गोलाकार मेज के चारों ओर कैप्टन व्यूसायर, मैडम रोज़मिली तथा घर के तीनों प्राणी बैठे थे। रोलेन्ड ने इस हर्ष-समाचार के उपलक्ष में एक भोज का आयोजन किया था। नाटा-सा गोल-गोल आदमी, कैप्टन व्यूसायर, रोलेन्ड का मित्र तथा मैडम रोज़मिली के मृत पति का घनिष्ठ, अपनी हँसी से सारे वायुमण्डल को कम्पित कर रहा था। ज्याँ प्रसन्नता से सब के गिलास भर रहा था। मैडम रोज़मिली ने जब दूसरा गिलास पीने से नहीं कर दिया, तो कैप्टन व्यूसायर ने उल्लसित स्वर में कहा—अरे पियो जी, पियो! मुझे देखो मैं कितने गिलास चढ़ा चुका हूँ, और अभी और पियूँगा। मदिरा की तरी से शरीर में एक स्फूर्ति का संचार होता है। विश्वास रखिए, यह कभी नुक्सान नहीं करती।

उस समय रोलेन्ड भी खूब प्रसन्न हो रहा था। हँसते-हँसते उसकी आँखों में पानी भर आया था। गोल-गोल शरीर, तोंद फूली हुई, कुर्सी में धँसा, जब वह हँसता, तो एक अजीब प्रकार का जन्तु प्रतीत होता था।

मैडम रोलेन्ड भी हर्षोत्फुल्ल हो ज्याँ को देख रही थीं।

हँसी के इस बाजार को देख पिएर के माथे पर बल पड़ गये। झुँझलाया हुआ वह एक कुर्सी पर चुपचाप बैठ गया।

भोजन आरम्भ होने पर, ज्याँ ने सब को परोसा। न्यूसायर एक घटना बताने लगा कि कैसे एक भोज्य में सब ने छक-छक कर खाया और फिर दूसरे ही दिन वे सब बीमार पड़ गये। मैडम रोजमिली, ज्याँ और माँ परस्पर एक सैर के लिए प्रोग्राम बना रहे थे। पिएर उत्तरोत्तर क्रोधित होता जा रहा था। किसी काफे में भोजन न करने से वह खिन्न हो रहा था। उसे आश्चर्य हो रहा था कि अब वह कैसे अपना निश्चय माँ और ज्याँ से कह सकेगा। वे दोनों तो खुशी में फूले नहीं समाते। अभी तो भोज का ही आयोजन हुआ है, भविष्य में न मालूम कितने आयोजन होंगे।

नौकरानी ने शेम्पेन की बोतल खोली। हर्षोन्मत्त, रोलेन्ड ने मुँह से वैसा ही शब्द सृजन करने का प्रयत्न करते हुए कहा—मुझे यह आवाज पिस्तौल की आवाज से भी अधिक मधुर प्रतीत होती है।

पल-पल पर क्रोधित होते पिएर ने मुँह सिकोड़ कर कहा—और तुम्हारे लिए उससे भी अधिक घातक है।

'क्यों ?'

रोलेन्ड बहुधा अपने अस्वस्थ होने की शिकायत किया करता था। आज सिर भारी है, तो कल चक्कर आ रहा है।

'पिस्तौल का निशाना तो चूक भी सकता है; पर यह अचूक है!'

'हूँ, तो फिर?'

'तो फिर क्या?'—डाक्टर ने और अधिक झुँझला कर उत्तर दिया—'तब शिकायत कीजिएगा कि यहाँ दर्द हो रहा है, यहाँ। यह मदिरा रक्त को दूषित कर देती है, शरीर को गला डालती है।'

रोलेन्ड का चेहरा उतर गया। ओठ तक आये हुए गिलास को उसने मेज पर रख दिया। झेंपा-सा वह पुत्र को देखने लगा।

व्यूसायर चिल्लाया—यह डाक्टर लोग ऐसे ही बका करते हैं। न खाओ, न पियो, कुछ न करो! तब जिन्दगी का लुत्फ ही क्या? मैं तो कहता हूँ, सब काम करो। जितना आनन्द लूट सकते हो, लूटो। मै इतनी शराब पीता हूँ, पर मुझे कभी कोई शिकायत नहीं होती।

पिएर ने रूखे स्वर में उत्तर दिया—एक तो आपका स्वास्थ्य पिताजी की अपेक्षा कहीं अच्छा है, फिर भी जब खाट पर पड़िएगा, तब कहिएगा कि डाक्टर ठीक कहता था। पिताजी को अगर कोई अनुचित कृत्य करते देखूँ, तो यह मेरा धर्म है कि उन्हें आगाह कर दूँ।

मैडम रोलेन्ड ने क्षुब्ध होकर कहा—अरे पिएर, क्यों इतने व्यग्र होते हो। एक गिलास में कुछ नहीं हो जायेगा। समय देखा करो। इस समय रंग में भंग करना अशिष्टता है।

कंधा सिकोड़ते हुए पिएर बुदबुदाया—मेरा काम कहने का था, कह दिया। जिसका जो मन आये करे।

परन्तु रोलेन्ड ने तब मदिरा न पी। वह ललचाई दृष्टि से गिलास में उफनाती मदिरा को एकटक देखता बैठा रहा। मिनट-भर पश्चात् उसने हिचकिचाते, बिना पिएर की ओर देखे धीमे स्वर में पूछा—क्या यह वाकई नुक्सान करेगी ?

पिएर स्वयं अपने ऊपर क्रोधित हो रहा था कि मैं क्यों बोला। 'नहीं'—उसने कहा—'इस बार पी लीजिए; पर अधिक पीना ठीक नहीं। किसी चीज की लत बुरी होती है।'

रोलेन्ड ने गिलास उठाकर, हिचकिचाते हुए उसे ओठों से लगाया। एक घूँट, दो घूँट, उसने पल भर में गिलास खाली कर दिया! और फिर इस प्रकार मुँह बनाया, जैसे उसने जबरन मदिरा पी हो। हृदय में एक ताजगी और गर्माहट का अनुभव हो रहा था।

सहसा पिएर की दृष्टि मैडम रोज़मिली पर जा पड़ी। आँखों ने उसके हृदय की तह में पैठ उसे पढ़ने का प्रयत्न किया। मैडम रोज़मिली ने एक बार उपेक्षा की दृष्टि से उसको देखकर जैसे कहा—छिः ! ईर्ष्या में जले जाते हो, क्यों ?

पिएर ने आँखें नीची कर लीं। उसे भोजन रुचिकर न लग रहा था। वह चाहता था कि किसी दूर एकान्त स्थान में भाग जाय—जहाँ यह हँसी-मजाक कुछ न सुनाई पड़े।

रोलेन्ड पिएर का वक्तव्य भूलकर, ललचाई दृष्टि से शैम्पेन की बोतल की ओर देख रहा था। उस उफनाते तरल पदार्थ को ओठों से लगाने के लिए उसकी इच्छा फिर प्रबल हो उठी थी। चारों ओर आँखें दौड़ाकर वह सोचने लगा कि कैसे बोतल उड़ा लूँ और पिएर भी क्रोधित न हो पाये! आखिर उसने एक चाल खेली। कुर्सी पर से उठ, उदासीन भाव से उसने मेज पर से बोतल उठाई और फिर अतिथियों का गिलास भरने लगा। सबके गिलास भर कर जब अपना गिलास भरने की बारी आई, तो सबका ध्यान अपने में आकर्षित करने के लिए वह जोर-जोर से बातें करने लगा, और फिर जैसे अनजाने में अपना गिलास भर लिया।

पिएर ने पिता की यह चाल न देखी। उसकी आँखों में मदिरा के लाल डोरे चमकने लगे थे। शरीर में एक विद्युत-धारा-सी दौड़ती प्रतीत हो रही थी। सब बातें ध्यान से उतार, वह गिलास-पर-गिलास खाली कर रहा था।

भोजन के पश्चात् व्यूसायर ने अपने मेहरबान मेज़बान को धन्यवाद दिया।

ज्याँ ने हँसते हुए प्रत्युत्तर दिया—धन्यवाद तो मुझे देना चाहिए, जो आप लोगों ने पधार कर इस घर की शोभा बढ़ाई। मैं शब्दों द्वारा आपकी कृपा का आभार प्रदर्शित नहीं कर सकता, हाँ, अपने कृत्यों द्वारा करने का प्रयत्न करूँगा।

माँ ने ज्याँ की पीठ थपथपाते हुए कहा—शाबाश!

व्यूसायर ने कहा—मैडम रोज़मिली, आप भी कुछ कहिए !

गिलास वाला हाथ ऊपर कर, नशे में लड़खड़ाते हुए मैडम रोज़मिली ने बैठ कर कहा—मैं आप लोगों से प्रार्थना करूँगी कि क्षण-भर के लिए आप महाशय मैरीकल की मृतात्मा की शान्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करें।

दूसरे क्षण कमरे में निस्तब्धता थी। समय बीत जाने पर व्यूसायर ने रोलेन्ड से पूछा—हाँ, यह तो बताइए, महाशय मैरीकल कौन थे ?

वृद्ध ने लड़खड़ाते स्वर में उत्तर दिया—भाई थे, भाई ! ऐसे मित्र कम देखने में आते हैं। बस क्या कहूँ, मैं उन्हें अपने से अधिक मानता था।

मैडम रोलेन्ड ने भी कहा—हाँ, वे हमारे एक अभिन्न हृदय मित्र थे। पिएर ने एक बार आँखें तरेर कर माँ को देखा और फिर पिता को। फिर उसने एक गिलास मदिरा और पी। जीवन की सारी चिन्ताओं को, दुःख-स्मृतियों को वह मदिरा से धो डालना चाहता था।

४

दूसरे दिन दोपहर को जब पिएर सो कर उठा, तो उसका मन हलका था। पिछले दिनों की बातें उसे दुःखद स्वप्न-सी प्रतीत होती थीं, जिसमें कोई सत्य नहीं। काफे वाली छोकरी के व्यंग्य का आधार सम्भवतः मिथ्या था। ऐसी बजारू छोकरियाँ सब को अपने ऐसा समझती हैं। किसी सच्चरित्र स्त्री का उल्लेख अपने सामने होते ही, पतन के खड्ड में गिरी यह कामिनियाँ दृष्टि में उबल कर चिल्ला उठती हैं—हाँ, मैं जानती हूँ उसे !

उसके तो हम लोगों से अधिक यार हैं। पवित्रता का ढोंग रचने वाली यह विवाहिताएँ पति की आड़ में शिकार खेलती हैं !

और किसी अवसर पर अपनी पवित्रात्मा माँ के चरित्र पर सन्देह करने की कल्पना तक वह न कर सकता था। एक ईर्ष्या के भाव, जो अब तक चुपचाप उसके हृदय-मन्दिर में सो रहे थे, मेरीकल के दानपत्र का समाचार सुनते ही हड़बड़ा कर जाग उठे हैं। उस काफे वाली युवती को इस दानपत्र का समाचार

सुनाते समय क्या उसके हृदय में ईर्ष्या न विद्यमान थी ? सम्भवतः उसी की कलुषित छाया के कारण उस युवती के मुँह से ऐसे वाक्य निकल सके। वह स्वयं अभी अपने हृदय को नहीं समझ पाता।

मैडम रोज़मिली भी तो एक आदर्शवादी स्त्री है ! उसे भी भले-बुरे का ज्ञान है। उसके मन में ऐसा सन्देह क्यों न हुआ ? उसने मैरीकल की मृतात्मा की शान्ति के लिए क्यों प्रार्थना की ? अगर उसे किंचित-मात्र भी संदेह होता, तो वह कभी ऐसा न करती !

पिएर के मन में माँ और भाई के प्रति प्रेम और आदर की भावनाएँ फिर लहलहा उठीं। उसने एक आनन्द-रश्मि देखी, जिसका उद्गम वह इन्हीं सद्भावनाओं में समझता था। उसने निश्चय किया कि अब वह घर में हर एक से नम्रता, विनय और प्रेम-पूर्वक पेश आयगा।

प्रातःकाल जलपान के समय, उस की लच्छेदार तथा सरस बातों पर सब लोग हँसते-हँसते दुहरे हो गये। प्रकोष्ठ में एक आनन्द की धारा बह चली।

माँ ने हँसी से खिलते हुए पिएर से कहा—अच्छे लड़के, सम्भवतः तुम्हें स्वयं इस बात का ज्ञान नहीं है कि तुम कितने हँसमुख हो सकते हो।

और, बात-चीत के बीच-बीच में पिएर कोई ऐसा शब्द कह

देता कि सब के मुख पर अनायास ही हँसी फूट पड़ती। ज्याँ भी प्रसन्न नेत्रों से अपने भाई की ओर देख रहा था।

काफी पीते-पीते पिएर ने पिता से पूछा—आज आप नौका पर तो न जाएँगे ?

'नहीं बेटे।'

'तो आज मैं उसे ले जाऊँ ?'

'हाँ, हाँ, इसमें पूछना क्या !'

एक तम्बाकू वाले की दूकान से उम्दा सिगार खरीद कर पिएर आनन्द से टहलता हुआ घाट की ओर गया।

मल्लाह नौका पर पड़ा ऊँघ रहा था। पिएर की आवाज सुनते ही वह जाग पड़ा।

'चलो, आज हम तुम घूमने चलेंगे !'—पिएर ने कहा और लोहे की सीढ़ियों से उतर कर वह नौका पर कूद पड़ा।

आसमान साफ था। दिन सुहावना प्रतीत होता था। समतल पानी को चीरती हुई नौका आगे बढ़ी। स्निग्ध पवन बहुत धीरे-से पाल को छू-भर देता था। नौका, मालूम पड़ता था, हवा पर अपने-आप बही चली जा रही है। दोनों टाँगें फैलाये, पीठ की ओर हाथ टेके पिएर आनन्द-पूर्वक सिगार पीता हुआ पल-पल पर दूर होते घाट को देख रहा था।

सागर के मध्य भाग की ओर पहुँचते-पहुँचते नौका की गति सहसा दुगनी हो गई। शीतल पवन का एक तीव्र झकोरा पिएर

के शरीर से टकराया। चारों ओर जल, अब शान्त न प्रतीत होता था। छोटी-छोटी शब्दमय लहरों पर नौका डगमगा रही थी। किनारे से दिखाई पड़ते मकानात और पेड़-पल्लव अब सुविशाल गगन के निचले भाग पर खिंची एक काली रेखा-से प्रतीत होते थे।

पिएर एक अपूर्व आनन्द का अनुभव कर रहा था। अपनी मनोरम कल्पनाओं का स्वप्न देखता हुआ वह पुलकित मन से सोच रहा था—कल ज्याँ से रुपया उधार माँग लूँगा, फिर उस नये मकान में जा कर रहूँगा, प्रैक्टिस चमक उठेगी, सब लोग मेरा सम्मान करने लगेंगे, और...और......सहसा पूर्व दिशा की ओर संकेत करता हुआ मल्लाह चिल्ला उठा—महाशय, देखिए, बर्फ का तूफान आ रहा है!

बादलों की भाँति एक भूरा घना कोहरा-सा तैरता चला आ रहा था। पिएर के आदेश पर नौका घाट की ओर मोड़ दी गई; पर वे लोग घाट तक पहुँच भी न पाये थे कि वह तूफान उनके निकट आ पहुँचा। पिएर के अंग-अंग में एक कँपकँपी-सी दौड़ गई। दम घुटने-सा लगा। उसने दोनों हाथों से अपना मुँह मूँद लिया। जब वे लोग घाट पर पहुँचे, तो बर्फ से भीग कर वे बेदम-से हो गये थे। घर पहुँचते ही पिएर कपड़े बदल कर गर्म बिछौने में घुस गया।

सन्ध्या को भोजन के समय जब वह हाल में गया, तो माँ

ज्यों से कह रही थी—लोग उन शीशे के दरवाजों को देखते ही रह जायेंगे ! जब उनमें फूलों के गमले चुन दिये जायेंगे, तब वे और अधिक आकर्षक हो जायँगे। देखना, मेरा हाथ लगते ही वह घर स्वर्ग-सा बन जायेगा।

'कौन-सा स्वर्ग, माँ !'—डाक्टर ने पूछा।

'ओह, एक बंगला है, जो तुम्हारे भाई के लिए पसन्द किया है !'—माँ ने कहा—'बाहर दो ड्राइंगरूम हैं। भीतर के कमरे भी हवादार हैं। घर-भर में शीशे के खूबसूरत दरवाजे लगे हैं ! बड़ा सुन्दर बंगला है।'

पिएर के माथे पर बल पड़ गये। भौंहें सिकोड़ कर उसने पूछा—कहाँ पर है ?

'बोलीवार्ड फ्रैंकोयस' पर !'

संदेह के लिए अब किंचित्-मात्र भी स्थान न था। वह वही मकान था, जिसे डाक्टर अपने लिए पसन्द कर आया था। वह कुछ उद्विग्न हो उठा।

मैडम रोलेन्ड प्रसन्नता-पूर्वक कहती गई—अट्ठाईस सौ रुपये साल पर तय किया है। मकान-मालिक तीन हजार वार्षिक माँग रहा था। मैंने कह-सुन कर दो सौ रुपये कम करवा दिये। वकीलों के लिए ऐसा ही मकान चाहिए। मुवक्किलों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए यह एक साधन होगा।

और क्षण-भर चुप रहने के पश्चात् उसने फिर कहा—अब तुम्हारे लिए भी एक अच्छा सा मकान ढूँढना शेष रह गया है। डाक्टरों को भी.........

नाक सिकोड़ कर पिएर ने बीच ही में कहा—मेरे लिए आप चिन्ता न करें। मैं अपना भार अपने ही ऊपर रखना चाहता हूँ।

माँ ने कहा—हाँ, यह तो ठीक है; पर तब भी हमें तो कुछ करना चाहिए।

भोजन करते-करते सहसा पिएर ने पिता से पूछा—आपसे मैरीकल की जान-पहचान कैसे हुई थी ?

रोलेन्ड ने माथेपर हाथ फेरकर सोचते हुए कहा—देखो बताता हूँ। बात पुरानी हो गई है न, इसीलिए...हाँ, याद आ गया। तुम्हारी माँ जब दुकान पर बैठी थी, तभी परिचय हुआ था, क्यों ठीक है न लूसी ? उसने आ कर तुमसे कोई चीज माँगी थी ! और फिर वह एक ग्राहक से मित्र बन गया था।

'कितने वर्ष हुए इस बात को ?'

रोलेन्ड ने फिर माथे पर हाथ रखते हुए, पत्नी की ओर देख कर कहा—जरा बताओ तो लूसी ! मुझे ठीक याद नहीं आता। तुम्हारी स्मरण-शक्ति मुझसे अधिक तेज है।

क्षण-भर सोचने के पश्चात् लूसी ने गम्भीर स्वर में उत्तर दिया—पचीस वर्ष से अधिक हो गये। तब पिएर तीन वर्ष

का था। उसी साल तो इसे लाल बुखार आया था। उस उस समय मैरीकल ने इसके लिए बहुत दौड़-धूप की थी।

रोलेन्ड चिल्लाया—हाँ, ठीक, ठीक। बिचारा रोज़ दवाई लेने जाता था। बड़ा नेक नीयत आदमी था। तभी से तो हम लोग गहरे मित्र बन गये। इसके अच्छे होने पर उसे बड़ी प्रसन्नता हुई थी।

और तब अनायास ही पिएर को विचार आया कि यह मनुष्य मुझे पहले से जानता था, मुझे प्रेम भी करता था, मेरे ही कारण गहरी मित्रता हुई, तब भी उसने सारी जायदाद केवल मेरे भाई के नाम ही क्यों लिखी ? मेरे नाम एक पैसा नहीं ! फिर वह खिन्न-सा हो गया। उसके हृदय में एक शूल उठ रहा था। वह चुपचाप बैठा रहा।

भोजन के पश्चात् वह घूमने चला गया। सड़कों पर घना कोहरा छाने के कारण रात्रि का अंधकार उग्र हो उठा था। चारों ओर बिजली के बल्बों के घिरे क्षीण प्रकाश में जल-थल स्पष्ट दिखाई पड़ते थे। ठंडी हवा कलेजे में घुसकर जैसे उसे कँपा देती थी।

पिएर कंधे सिकोड़े, जेबों में हाथ छिपाये चला जा रहा था—मारोवसको की दुकान पर ! अधेड़ अत्तार सदा की भाँति कुर्सी पर पैर फैलाये सो रहा था। पिएर के आने की आहट पाते ही, उसने आँखें खोल दीं। एक अँगड़ाई ले नींद को झझकोरते हुए

उसने दड़े तपाक से पिएर से हाथ मिला, उसे एक कुर्सी पर बिठा दिया। और फिर काँच के दो गिलासों में 'अंगूरी' भर कर देते हुए उसका स्वागत किया।

'कहो, कैसी बिक्री चल रही है ?'—डाक्टर ने पूछा।

'अच्छी चल रही है। आज-कल खूब जोरों से विज्ञापनबाजी कर रहा हूँ।'

कुछ देर इधर-उधर की बातों के पश्चात् मारोवसको ने पूछा, कि ज्याँ को जायदाद मिल गई ?—और इसी सम्बन्ध में उसने और दो-चार बातें पूछीं। और उत्तर देते समय पिएर, जैसे उसकी झिझकती आवाज, फड़कते ओठ, तथा आश्चर्य से फैलती आँखों की ओर, देखते हुए उसकी मनोभावनाओं को पढ़ता जाता था। यह ठीक नहीं जँचता। आधी तुम्हें मिलनी चाहिए थी। यह सब लोग तुम्हारी माँ पर कलंक लगाएँगे।

और सहसा पिएर व्यग्र हो उठा। अवश्य मारोवसको समझ रहा है कि ज्याँ मैरीकल का लड़का है। अवश्य उसके दिल में यह विचार जम रहे हैं। जब कि घटना इतनी स्पष्ट है, तो फिर संदेह क्यों न हो ? जब कि स्वयं वह संदेह कर रहा है, तो क्या और लोगों के दिल में ऐसे विचार न उठते होंगें ?

उसे इस समय एकान्त की आवश्यकता प्रतीत हुई, जहाँ वह इस बात का अनुवीक्षण कर सके, अपने संदेह से लड़ सके।

गिलास खाली करते ही उसने मारोवसको से हाथ मिलाया, और दूसरे क्षण वह सड़क पर था।

उसने स्वगत पूछा—मैरीकल ने अपनी वसीयत ज्याँ के नाम क्यों लिखी ?

वह जनता था कि वह अपने से यह प्रश्न किसी ईर्ष्यावश नहीं पूछ रहा है; बल्कि अपनी शंका के समाधान के लिए, अपने को शान्त करने के लिए।

नहीं, वह कभी इस बात को सच नहीं मान सकता। ऐसी बात का मन में ध्यान तक लाना पाप है। यह संदेह निष्प्राण है, निर्मूल है, उसे इसको अपने से दूर भगाना होगा, दूर भगाना होगा, दूर भगाना होगा। वह अपने चारों ओर प्रकाश चाहता है, अंधकार नहीं! अंधकार पाप का साथी होता है। बस, मनोभावनाओं का विश्लेषण करते ही यह अंधकार अनायास ही दूर हो जायेगा, प्रकाश लहलहा उठेगा। तब वह घर जाकर चैन से सोयेगा।

स्मृति के आलोक में वह सारी घटनाओं का अनुवीक्षण करने लगा—मैरीकल उसे बचपन से जानता था, जब ज्याँ पैदा भी न हुआ था तब से। जब मैं ज्वर-ग्रसित था, तो उसने मेरे लिए दवा आदि लाने का प्रबन्ध किया, इसके मानें कि वह मुझसे स्नेह करता था। मेरे ही कारण माता-पिता से उसकी गहरी मित्रता हुई। तब उसे मेरे नाम वसीयत करनी थी; क्योंकि वह मुझे

ज्याँ से पहले जानता था, और इसीलिए उसे उससे अधिक मुझे प्रेम करना चाहिए था।

और फिर, पिएर ने मैरीकल को अपने सम्मुख चित्रित करना चाहा—उसकी आकृति, उसकी चाल-ढाल, उसका रहन-सहन!

...पर इस तरह टहलते-टहलते विचार एक बात पर नहीं जम पाते थे। घड़ी में कोई विचार आता है, घड़ी में कोई। उसे एक जगह निश्चिन्त बैठ कर इन बातों पर गौर करना चाहिए। और उसने समुद्र-तट की ओर जाने का निश्चय किया।

दूर ही से समुद्र के भीषण गर्जन की ध्वनि कर्णगोचर हुई। पवन चीख-सा रहा था, जैसे कोई मानसिक व्यथा हो। पिएर के अंग-अंग में एक कँपकँपी-सी दौड़ रही थी। तब भी एक बेंच पर बैठ कर वह सब बातों पर गौर कर रहा था।

'मैरीकल! मैरीकल!!'

और सहसा उसके हृत्पटल पर एक छाया स्पष्ट-सी हो चली—अधेड़ पुरुष, जो कि देखने में सुन्दर लगता है। न बहुत लम्बा है, न ठिंगना। आँखों में एक विशेष आकर्षण है। वह दूर से देखने में नेकदिल और एक अच्छा आदमी जँचता है। पिएर और ज्याँ को 'मेरे बेटे' सम्बोधित करता था। अधिकतर वह उन दोनों की अँगुली एक-एक हाथ में पकड़ कर अपने साथ घुमाने ले जाता।

और तब पिएर ने यह याद करने का प्रयत्न किया कि कैसे

वह उन दोनों से बोलता, बोलते समय उसके मुख पर क्या भाव रहते ? क्षण भर पश्चात् उसकी आँखों के सामने वह कमरा नाच गया, जहाँ वे तीनों बैठ कर भोजन करते थे, गपशप लड़ाते थे। दो नौकरानियाँ उनकी कुर्सी से कुछ दूर हट कर हाथ बाँधे खड़ी रहती थीं। वे उसे 'महाशय पिएर' और ज्यूँ को 'महाशय ज्यूँ' कह कर सम्बोधित करतीं।

मैरीकल उन्हें आते देखकर ही उल्लसित स्वर में चिल्ला उठता—आ गये बेटे ! आओ मेरे अच्छे बच्चो ! कहो, घर पर सब कुशल मंगल तो है ?

बातें अधिक और भिन्न-भिन्न विषयों पर होतीं। कभी-कभी वह उन्हें पैसे भी देता था, मिठाई खाने के लिए।

तब पिएर ने स्वगत कहा—जब कि वह हम दोनों को बराबर प्यार करता था, तो उसने सारी जायदाद केवल ज्यूँ के नाम क्यों लिखी ? उसके व्यवहारों से तो कभी न प्रतीत होता था कि वह छोटे भाई की ओर अधिक आकृष्ट है। तो कोई रहस्य है ?

जितना ही वह सोचता, उतना ही अधिक उलझन में पड़ता जाता था। एक शूल, भयानक शूल उसके हृदय में उठ रहा था। वह अत्यधिक बेचैन हो उठा था।

'ओह, परमेश्वर ! क्या बात है ? मुझे सब ज्ञान होना चाहिए !'

उसने फिर उन भूले दृश्यों पर दृष्टिपात किया ; पर अब दृश्य धुँधले-से प्रतीत हो रहे थे । वह एक बार फिर मैरीकल को देखना चाहता था ; पर धुँधलेपन के सिवाय उसे कुछ न दिखाई पड़ा । हाँ, इतना उसे अवश्य याद था कि मैरीकल कोमल-हृदय था, आता था तो अपने साथ फूलों के खूबसूरत गुच्छे लाता था । पिता जब-तब कहा करते थे—यह क्या, तुम फिर फूलों के गुच्छे ले आये । आज, मालूम पड़ता है तुम इनके पीछे पड़े हो । और मैरीकल उत्तर देता—कोई बात नहीं, मुझे यह बहुत प्रिय लगते हैं ।

फिर उसे माँ का चित्र दिखाई पड़ा—लालिमा-रंजित कपोल और नीली आँखें, जिनमें प्रसन्नता का उन्माद ! मैरीकल के हाथों को अपने हाथों से ले, उन्हे धीरे से दबा कर कहती है—धन्यवाद, ऐ मेरे सहृदय मित्र !

अवश्य माँ मैरीकल का इसी प्रकार स्वागत करती होगी, तभी तो उसे अभी तक वह मित्र याद है ।

हाँ, तो मैरीकल नित्यप्रति फूलों के गुच्छे लाया करता था, उसकी माँ को भेट करने के लिए । तो क्या वह उससे प्रेम करता था ? इन व्यापारियों से मित्रता करने में अवश्य उसका कोई स्वार्थ रहा होगा ? बहुधा वह कविता की पंक्तियां गुनगुनाया करता था । क्यों ? वह कवि तो न था । वे पंक्तियाँ उसकी हृत्तन्त्री की आवाज के साथ गूँज उठती होंगी, इसीलिए ! हूँ ! पिएर सब बातें अच्छी तरह समझ रहा है ।

सुन्दर युवक जिसके पास धन था, हृदय था, भावुकता थी, किसी दिन उस दुकान पर गया। वहाँ एक सुन्दरी युवती देखी, लालसाओं ने उसे उकसाया। वह नित्यप्रति दुकान पर खरीदारी के बहाने जाने लगा, उसे देखने के लिए, उससे बातें करने के लिए, घनिष्ठता करने के लिए। इस युवति के कोमल हाथों को स्पर्श करने में उसको आनंद आता होगा।

तो, और फिर, और फिर? उसने अपने हृदय मन्दिर में उसी सुन्दरी की प्रतिमा विराजमान की, उसकी पूजा की। भक्ति पर प्रसन्न हो, देवी ने उसकी मनोकामना पूर्ण की। जब वह मरा तब भी वह अपनी देवी को याद कर रहा होगा, और इसीलिए इसके पुत्र के नाम अपना दानपत्र लिख गया; परन्तु केवल एक ही पुत्र के नाम क्यों?

सहसा एक नवीन विचार आते ही पिएर पसीना-पसीना हो गया। मैरीकल भी सुन्दर था, ज्यॉं भी है। मैरीकल की बड़ी-बड़ी आँखें भी, उसकी-सी थीं। तो क्या ज्यॉं मैरीकल की प्रतिमूर्ति है? और तब उसे एक फोटो का ख़याल आया, जो कि पेरिस के ड्राईंग रूम में लगा रहता था। वह मैरीकल का था। अब वह कहाँ गया? नष्ट हो गया, अथवा किसीने उसे छिपा दिया। अवश्य वह उसकी माँ के पास होगा?

पिएर ने एक निःश्वास छोड़ा! वह निःश्वास दिल का एक फफोला था, जो भाफ बन कर उड़ गया; और वह जैसे इस

निःश्वास का उद्गम, उसका कारण ठीक-ठीक समझ गया। वह निःश्वास, समुद्र के गर्जन से भी अधिक भयंकर, तथा चारों ओर उमड़ते अंधकार से भी अधिक भयंकर था। उसे प्रतीत हुआ कि सारा विश्व एक निःश्वास छोड़ रहा है।

घड़ी भर पश्चात् प्रकृतिस्थ होने पर पिएर अपने आप को धिक्कारने लगा—मैं भी कैसा कृतघ्न हूँ, जो माँ पर संदेह करता हूँ। और माँ के प्रति उसका प्रेम, उसकी श्रद्धा फिर उमड़ पड़ी।

माँ, सरलता, सहृदयता, और करुणा की सजीव मूर्ति माँ भला वह उस पर संदेह कर सकता है? नहीं अणुमात्र भी नहीं। माँ अगर इस समय उपस्थित होती, तो वह उसके चरणों पर गिर कर रोता, अपने अपराधों की क्षमा माँगता।

भला माँ देवता पिता के साथ विश्वासघात कर सकती है? पिता! सीधा,सरल विनोदी पुरुष, जिसकी हँसी में शिशु की हँसी थी। भावुकताकी रानी, सौन्दर्य की साम्राज्ञी माँ ने इस व्यवसायी को क्यों पसन्द किया? सभी लड़कियाँ धन की ओर आकर्षित होती हैं। अगर वह भी हुई तो इसमें आश्चर्य की कौन-सी बात है। कल्पनाओं का एक मनोरम स्वप्न लिये हुए, उस नव विवाहिता ने उस गृह में प्रवेश किया होगा; पर एक व्यवसायी का हृदय...? जीवन का प्रेम न सही, धन का सुख तो प्राप्त हुआ होगा?

तो क्या बिना प्रेम-निधि पाये, सुखी रहना एक स्त्री के लिए सम्भव है? एक नवयुवती, जो भावुकता को दाद देती है,

अभिनेत्रियों के प्रेम-पूर्ण अभिनय पर तालियाँ पीटती है, रोमान्टिक पुस्तकें पढ़ती है, क्या जीवन में बिना प्रेम-रस पाये शान्ति से सुख-पूर्वक रह सकती है ? पिएर को किसी प्रकार विश्वास नहीं होता था कि ऐसा सम्भव हो सकता है; गो कि वह उसकी माँ थी।

वह अधेड़ माँ एक नवयुवती भी रह चुकी है। कोमल कल्पनाओं को वह अपने हृदय में पाल चुकी है। तो क्या उसका हृदय प्रेम की रंग-रेलियों को खेलने के लिए लालायित न हुआ होगा ? दुकान के जेलखाने में बन्द, एक व्यवसायी के बगल में बैठी हुई, क्या वह उन चाँदनी रातों का स्वप्न न देखती होगी, जब कि किसी पेड़ की शीतल छाया में एक आवेश-पूर्ण चुम्बन का आदान-प्रदान होता है। तो क्या उसने मैरीकल को न प्यार किया होगा ? वह उसकी माँ है; पर क्या उस ढले शरीर के अन्दर एक स्त्री का हृदय नहीं है ? तो उसने अपना सर्वस्व, उस प्रेमी के चरणों में अर्पण कर दिया होगा ? अवश्य ! प्रेम की दुनियाँ में उन्मत्त युवती अपना लोक-परलोक, तन-मन, धर्म-अधर्म, सब कुछ भूल जाती है। उस समय अगर उसके लिए इस संसार में कोई सत्य नाम की वस्तु है, तो वह प्रेम ; अगर उसके यौवन का, उसके सौन्दर्य का उपभोग करने का हक किसी को है, तो उसके प्रेमी को ! हूँ ! तभी तो मैरीकल अपनी वसीयत ज्यॉं के नाम लिख गया है !

पिएर बेंच पर से उछल पड़ा। उसकी आँखों से रोष की चिनगारियाँ निकल रहीं थीं। मुट्ठी कसे, ओठ चबाता हुआ वह चाहता था कि बस मार डालूँ! किसे? अपने भाई को, पिता को, माता को, सब को!

पर क्षण-भर पश्चात् पिएर निर्जीव-सा ओस से भीगी दूर्वा पर गिर पड़ा। उसके पैरों में खड़े होने तक की शक्ति न रह गई थी। आँखें निकलीं पड़ती थीं। वह सिर थाम कर बैठ रहा।

कुछ देर पश्चात् सीटी की आवाज़ के साथ ही उसने एक जहाज को जाते देखा। अंधकार के वक्षस्थल को चीरती हुई वह बहती, प्रकाश-रेखा भी कितनी सुन्दर प्रतीत होती थी! पिएर मंत्र-मुग्ध उसे देखता रहा। सारी पीड़ा जैसे उस प्रकाश-रेखा में निहित हो धीरे-धीरे ओझल हो गई। तब पवन के शीतल स्पर्श ने उसके अन्दर एक स्फूर्ति का संचार किया। चारों ओर वनस्पति के साम्राज्य ने अपना हरापन उसके अन्दर भी उँडेल दिया। रात्रि की निस्तब्धता में उन्मीलित निद्रा-सुन्दरी ने उसे कुछ सन्देश भेजे। किसी शराबी की भाँति लड़खड़ाता हुआ वह घर की ओर चला।

५

घर आकर पिएर सो तो गया; पर उसे अच्छी तरह नींद न आई। हृदय को रह-रह कर जैसे कोई नोच रहा था। मानसिक वेदना के बोझ से वह दबा-सा जा रहा था। थोड़ी देर बाद जब उसने आँखे खोलीं, तो सर्वत्र अंधकार छाया था। उसे बड़ी जोरों से प्यास लग रही थी। दम घुट-सा रहा था। उसने उठ कर खिड़की खोल दी। ठंडी हवा का एक झँकोरा उसके शरीर से टकराया। खिड़की की ओर मुँह किये खड़ा वह जैसे ताजी हवा को पीकर अपने को हरा करने का प्रयत्न कर रहा था।

बगल के कमरे से ज्याँ के खर्राटे खींचने की आवाज आई। वह निश्चिन्त सुख की नींद सो रहा है। उसके हिसाब जैसे कोई बात ही नहीं हुई है, उसकी माँ का एक मित्र उसके नाम अपना दान-पत्र लिख गया और वह उसे सहर्ष स्वीकृत कर, ऐसे सो रहा है, जैसे कोई साधारण घटना हुई हो। उसे नहीं मालूम कि लोग उसके और माँ के विषय में क्या कहते हैं! उसे नहीं मालूम

कि उसका भाई किस तरह बेचैन है! पिएर उस सुख की नींद में सोने वाले पर अत्यन्त क्रोधित हो उठा।

कल ही तो उसने निश्चय किया था कि किस प्रकार वह अपने भाई को प्रेम से समझाएगा, उससे कहेगा—ज्याँ, इस दानपत्र को, जिसके कारण माँ के स्वच्छ चरित्र पर कलंक का धब्बा लगने का भय है, अस्वीकृत कर दो और आज वह कुछ नहीं कह सकता। वह ज्याँ से कैसे कहे कि वह उसके पिता का पुत्र नहीं है। नहीं, उसके मुँह से यह शब्द कभी नहीं निकल सकते। उसे इस सन्देह को विस्मृति की कब्र में दफना देना होगा। उसे इस कलंक के धब्बे को अपने हृदय-प्रदेश के घोर तर अंधकार-भाग में छिपा देना होगा, जहाँ कोई आँखें उसे न देख सकें, कोई नहीं, उसका भाई भी नहीं!

वह अब लोकोक्ति की परवाह न करेगा। समस्त संसार उसके ऊपर लाञ्छना का कीचड़ फेंके, उस पर हँसे, तब भी वह प्रसन्न होगा, यदि उसे विश्वास हो जाय कि माँ निष्पाप है, निष्कलंक है, पवित्र है। छोटा भाई एक अजनबी के प्रेम का फल है—इस विचार को लिये हुए वह कैसे इस घर में रह सकता है?

माँ कितनी शान्त और सरल प्रतीत होती है, जैसे उसे किसी बात की खबर ही नहीं। क्या यह सम्भव है, कि इतनी पवित्र और दृढ़ आत्मा-धारी यह स्त्री वासना की चकाचौंध में अपने कर्त्तव्य-

पथ पर से विमुख हो गई, और अब उसे अपने कृत्यों के लिए किंचित्-मात्र भी पश्चात्ताप नहीं।—सम्भवतः उसके हृदय में पश्चात्ताप की चिनगारियाँ धधकी हों; पर अब समय के प्रवाह में वह आग जलकर राख हो गई है। यह स्त्रियाँ कितनी शीघ्र उन पुरुषों तक को, जिनको अपने कोमल अधरों का चुम्बन प्रदान किया था, जिनके साथ प्रेम की रंग-रेलियाँ खेलीं थीं, भूल जाती हैं। ओह, कितनी शीघ्र वे अपने को परिस्थितियों के अनुकूल बना लेती हैं। उन मधुर चुम्बनों की स्मृति बिजली की चकाचौंध की भाँति झटपट से विलीन हो जाती है। वह प्रेम किसी आँधी की भाँति न मालूम कहाँ भाग जाता है और झटपट फिर स्वच्छ नीलाकाश की भाँति चमकने लगता है। मालूम पड़ता है, उन पर बादल कभी छाये ही नहीं।

पिएर अब वहाँ एक क्षण के लिए नहीं ठहर सकता। पिता का घर जैसे उसे काटे खाता था, उसे प्रतीत हुआ कि कमरे की छत जैसे उसके ऊपर गिरने को है, चारों ओर दीवारें उसे दबोच लेने के लिए उसकी ओर बढ़ रही हैं। डरते हुए उसने मोमबत्ती जला कर कमरे का अंधकार दूर किया।

घड़ी-भर पश्चात् जब पिएर प्रकृतिस्थ हुआ, तो उसे फिर प्यास मालूम पड़ी। जीने से उतर, वह रसोईघर से पानी लाने गया। फिर लौटते-लौटते उसने एक साँस में भरा गिलास खाली कर दिया और जीने पर 'धम्म' से बैठ गया। क्षण-भर

पश्चात् घर की निस्तब्धता फिर अनुभव होने लगी। तब भोजनालय में टँगी घड़ी की टिक-टिक क्षण-प्रति-क्षण तेज होती प्रतीत हुई। बेखबर सोते रोलेन्ड के गले से निकली आवाज घर्र-घर्र उत्तरोत्तर उग्र होती मालूम पड़ी।

पिएर मूर्तिवत बैठा सोच रहा था—एक ही छत के नीचे बाप बेटे के आवरण में सोते इन दो आदमियों में कोई बन्धन नहीं। दोनो परस्पर प्रेम करते हैं, सुख-दुःख में भाग लेते है, जैसे दोनों की नसों में एक ही रक्त तो बह रहा है? यह नहीं जानते कि हम मिथ्या के आवरण में बँधे हैं और पिएर इस सत्य को जानता है।

पिएर के मुख पर एक क्रूर हँसी दौड़ गई। क्षण-भर उसके मन में आया—कहीं वह गलती पर तो नहीं है? अगर वह उन दोनों की आकृति मे जरा-सा भी सादृश्य पा सके, तो वह फिर निश्चिन्त हो जायेगा। वह डाक्टर है, आँखों के बीच का फासला, बालों का रंग, दाँतो की बनावट आचार-व्यवहार उन दोनों में किंचित् मात्र सादृश्य को उसकी तेज आँखें उसी दम देख लेंगी।

उसने बहुत सोचा कि देखूँ बाप-बेटे में कोई सादृश्य है, पर विचारों के अन्धड़ में वह कुछ निश्चय न कर सका।

जब वह अपने कमरे में जाने लगा, तो वह जीने पर बहुत सावधानी से पैर रख रहा था, जिससे कोई शब्द न हो।

मार्ग में पड़ते भाई के कमरे के सामने पहुँच वह ठिठक गया। उसका हाथ दरवाजे पर था, मन में हिचक थी, भीतर जाऊँ कि न जाऊँ! संदेह-निवारण के लिए निश्चिन्त सोते भाई की आकृति निकट से देखने की इच्छा उसके पैरों को आगे बढ़ने का आदेश दे रही थी; पर अगर कहीं वह जाग गया, तो वह क्या कहेगा? क्या बतायेगा कि वह किस लिए आया है?

एक सप्ताह पूर्व ज्याँ उससे दाँतों के दर्द की दवा वाली शीशी ले गया था। पिएर को एक बहाना मिल गया। वह कह देगा कि उसके दाँतो में दर्द हो रहा है, दवा की शीशी लेने आया है।

पैरों की आहट तक को रोकते हुए चोरों की भाँति ज्याँ के कमरे में प्रवेश किया। मुँह खोले, बाल बिखेरे, ज्याँ निश्चिन्त सो रहा था। पिएर के उसके मुख तक प्रकाश ले जाने पर भी उसकी नींद न खुली; हाँ, नाक की आवाज़ होना बन्द हो गई पिएर भूली आँखों से उसे देख रहा था। उस युवक और रोलेन्ड की सूरत में किंचित्-मात्र भी साहश्य न था। उसे प्रतीत हो रहा था कि जैसे इस चेहरे के अन्दर से मैरीकल का चित्र झाँक रहा है! अवश्य उसके चेहरे पर मैरीकल की छाप है। निर्णय के लिए उसे मैरीकल का चित्र ढूँढना होगा!

ज्याँ ने एक करवट ली। सम्भवतः वह प्रकाश के कारण विचलित हो उठा था। डाक्टर अँगूठों के बल बाहर चला आया। द्वार निःशब्द बंद किया और अपने कमरे में चला गया। उसे

फिर नींद न आई। सूर्योदय में तब भी विलम्ब था। रह-रह कर घड़ी टन-टन की ध्वनि में समय का नाप बताती जाती थी। वह बेचैनी से कमरे में टहलता रहा। क्या करे अब वह ? वह घर के कोलाहलमय वातावरण में तो रह नहीं सकता। उसे चाहिए एकान्त, नितान्त एकान्त, जहाँ वह कुछ विचार सके, अपने जीवन का कार्य-क्रम निश्चित् कर सके।

अच्छा, अगर वह समुद्र-तट की ओर जाये तो ? वहाँ तैरते, उछलते, कूदते नर-नारी की अपार भीड़ सम्भवतः उसका मन आकर्षित कर ले ? वायुपरिवर्त्तन सम्भवतः उसका दिल हरा कर दे। पूरब में उजियाली फूटते ही वह स्नानादि के लिए चला गया।

कोहरा साफ हो चला था। दिन सुहावना प्रतीत होता था। समुद्र-तट पर नौ बजे के पहले भीड़ नहीं होती; इसीलिए जाने से पहले पिएर ने माँ से प्रातः भेंट कर लेना अनुचित न समझा।

सूर्योदय के पश्चात् वह माँ के कमरे की ओर गया। उसका हृदय धड़क रहा था। जब उसने द्वार पर थपथपी लगाई, तो उसकी सारी इन्द्रियाँ स्तम्भित रह गईं; केवल कर्णेन्द्रिय सजग थी, उत्तर सुनने के लिए।

भीतर से कोमल स्त्री-कंठ से आवाज आई—कौन ?

'मैं, पिएर !'

'क्या काम है ?'

'कहने आया हूँ कि दोस्तों के साथ समुद्र-तट की ओर जा रहा हूँ।'

'अच्छा ठहरो!'

नंगे पैरों द्वार तक आने की, तथा सिटकनी खुलने की आवाज़ उसने सुनी।

क्षण-भर पश्चात् माँ की आवाज आई—आओ!

वह भीतर गया। माँ बिछौने पर लिहाफ से शरीर ढाँके बैठी थी। रोलेन्ड दीवाल की ओर मुँह किये, सिर पर एक रेशमी रूमाल बाँधे सो रहा था।

पिएर ने माँ को अचकचा कर ऐसे देखा, जैसे पहले उसे कभी देखा ही न हो। धीरे-धीरे जा उसने माँ के मस्तक का चुम्बन लिया।

'तो तुमने यह कार्यक्रम शायद कल ही निश्चित किया था?'—माँ ने पूछा।

'हाँ, कल शाम को।'

'भोजन के समय तो लौट आओगे?'

'कह नहीं सकता। आप लोग मेरी प्रतीक्षा न कीजिएगा।'

पिएर माँ को बहुत गौर से देख रहा था। यह स्त्री, जिसे वह शैशवकाल से देखता आ रहा है, जिसकी बोलचाल, हँसी, एक-एक भाव-भंगी से वह परिचित है, आज अजनबी क्यों प्रतीत होती है? ममता से पूर्ण इस मुख को वह वर्षों से देखता आ रहा है, आज वह भिन्न क्यों प्रतीत होता है?

जब पिएर चलने के लिए उठ खड़ा हुआ, तो उससे यह पूछे बिना रहा न गया—हाँ, मुझे याद पड़ता है पहले ड्राइंग रूम में मैरीकल का चित्र टँगा था ?

वह पहले हिचकिचाई ; पर क्षण-भर पश्चात् जैसे उसने अपनी इस हिचकिचाहट का अनुभव कर, साहस कर कहा—हाँ शायद टँगा तो था !

'तो वह अब कहाँ है ?'

'...देखो मुझे ठीक याद नहीं पड़ता ! शायद मेरी अलमारी में है।'

'कृपया उसे निकाल दीजिएगा।'

'अच्छा, देखूँगी ! उससे तुम्हें क्या काम है ?'

'मुझे तो कोई काम नहीं ; पर सोचता हूँ अगर वह ज्याँ को दे दिया जाय तो, उसे बहुत प्रसन्नता होगी।'

'हाँ, ठीक तो है ! सोकर उठूँगी, तो देखूँगी।'

और वह चला गया।

हवा तेज न थी। दिन साफ था। दुकान खोलने के लिए जाती क्लर्क युवतियाँ तथा तगादों पर जाते व्यवसायी—सब के मुख पर प्रसन्नता खेल रही थी। पिएर खिन्न-मन स्वगत पूछता जा रहा था—चित्र की बात सुन माँ क्यों हिचकिचाई थी ? क्या उसने चित्र नष्ट कर दिया है, अथवा उसे छिपा कर रख दिया है ? उसने छिपा कर रखा, तो क्यों ?

और विचार-धाराओं को समेटते हुए उसने यह निष्कर्ष निकाला कि एक प्रेमी का चित्र ड्राइंग रूम में सब की आँखों के सामने टँगा था। वह उस चित्र से ज्याँ का सादृश्य अनुभव कर डरी होगी। पाप को छिपाने के लिए उसने चित्र छिपा दिया होगा, उसको नष्ट करने का साहस तो उसे हुआ न होगा।

तब पिएर को याद आया कि बहुत दिन हुए, वह चित्र एकाएक ड्राइंग-रूम से गायब हो गया था; सम्भवतः तभी से जब ज्याँ के यौवन-पूर्ण चेहरे पर उस चित्र की छाप प्रतीत होती अनुभव हुई।

समुद्र-तट का कोलाहलमय वातावरण स्पष्ट होते ही उसकी विचार-तन्द्रा भंग हो गई। पीली बालुका पर छितरी रंग-बिरंगी पोशाकों से सजी, वह असंख्य सूरतें दूर से किसी उद्यान में खिले लाल, पीले, नीले आदि रंग के फूलों-सदृश प्रतीत होती थीं। बच्चों की किलकारी, युवतियों के कोमल स्वर, तथा पुरुषों की कर्कश हँसी से मुखरित वातावरण को वह चीरता हुआ आगे बढ़ा चला जा रहा था। समुद्र-स्नान के लिए इकट्ठा इस अपार भीड़ को देख-देख, उसके मन में कुतूहल की अपेक्षा घृणा के भाव उदित हो रहे थे। भिन्न-भिन्न रंग के वस्त्रों को धारण किये उछलतीं-कूदतीं, हँसतीं-खेलतीं, व्यंग्य-कटाक्ष करतीं यह स्त्रियाँ मानवजाति की एक दूषित अंग हैं। यह नहाने की भड़कीली पोशाक पहन रक्खी है—शरीर को ढाँकने के लिए नहीं; परन्तु

स्निग्ध गोलाकार जाँघों तथा स्वस्थ उरोजों की ओर लोगों का मन आकृष्ट करने के लिए। हँसती-उछलती हुई, यह पीठ की ओर झुक कर दुहरी हो जाती हैं, कटिभाग और जाँघों के बीच का शरीर का ढाँचा स्पष्ट करने के लिए, पुरुषों के मन में लालसा जागृत करने के लिए।

पिएर को प्रत्येक ओर आकर्षण का बाज़ार लगा प्रतीत हो रहा था, जहाँ मूर्ख पुरुष लूटे जाते हैं। इस कोलाहल में स्त्रियाँ आती हैं—पर-पुरुषों से चुम्बित होने के लिए, उनके आवेशपूर्ण आलिङ्गन-पाश में बँधने के लिए, उन्हें अपने रूप के बाज़ार में निमंत्रित करने के लिए। कहती हैं—इस अस्थायी यौवन-श्री से रंजित शरीर का, जिन पर दूसरों का अधिकार हो चुका है, अथवा होने वाला है, तुम भी उपभोग कर लो; नहीं तो समय बीत जाने पर पछताओगे! और उसने सोचा कि यह बात इसी देश में नहीं; परन्तु संसार के सभी सभ्य कहलाने वाले देशों में है।

तो उसकी माँ ने भी वही किया, जो सब स्त्रियाँ करती हैं। सब? नहीं, उनमें भिन्न भी हैं; परन्तु फैशन की इन पुतलियों के लिए, जिनकी आँखों में मद है, शरीर में रुपये की गर्मी है, मस्तिष्क में प्रेम की गंध बनी है, विनाश ही अन्तिम शब्द है। सच्चरित्र, नारियाँ, आडम्बर-विहीन, अपने घर की दुनिया में रहती हैं।

उस भीड़ को देखकर पिएर के मन में इतनी घृणा उपज रही थी, कि वहाँ से उल्टे पैर लौट आया ; शहर में आकर एक काफे में काफी पी, और फिर एक वृक्ष की छाया में पड़ी बेंच पर बैठकर सुस्ताने लगा। उसके मन में अब घर जाने की इच्छा जागृत हुई। वह जानना चाहता था कि माँ ने मैरीकल का फोटो ढूँढ निकाला अथवा नहीं। फोटो के लिए उसे फिर कहना पड़ेगा अथवा वह योंही दे देगी ? अगर फोटो देने में वह कुछ टालमटोल करती है, तो अवश्य कोई गूढ़ रहस्य है !

परन्तु अपने कमरे में पहुँचकर, उसे सब के सामने जाने में हिचकिचाहट मालूम पड़ने लगी। इतने शीघ्र लौट आने पर वे लोग क्या कहेंगे ? परन्तु फोटो को देखने की इच्छा उत्तरोत्तर प्रबल हो रही थी। जब वह भोजनालय में पहुँचा, तो सब के चेहरों पर प्रसन्नता थिरक रही थी। रोलेन्ड कह रहा था—हाँ, तो तुम लोगों ने सब आवश्यक सामान खरीद लिया ? जब मैं जाऊँ तो घर लैस मिले।

माँ ने उत्तर दिया—अभी तो खरीदारी हो रही है। चीजें पसन्द करने में बड़ा वक्त लग जाता है। फरनीचर का मामला ही ऐसा होता है।

मैडम रोलेन्ड का वह दिन ज्याँ के साथ खरीदारी करने में ही बीता था। वह भड़कीली चीजें चाहती थी, जिन्हें देखते ही लोगों की तबियत फड़क उठे। ज्याँ आडम्बर-विहीन

वस्तुएँ चाहता था। माँ कहती थी—मुवक्किलों को आकर्षित करने के लिए, उन पर शान गाँठने के लिए, भड़कीला फरनीचर चाहिए! ज्यूाँ कह रहा था—मैं गधे मुवक्किलों से बात नहीं करूँगा। बस, इने-गिने रईसों के मुकदमें लूँगा। फरनीचर ऐसा हो कि जिसे देखकर कोई कहे—हाँ, यह एक चीज है! चाहे वह आकर्षण-युक्त न हो। और यह वाद-विवाद इस समय भी चल रहा था।

रोलेन्ड ने कहा—जो कुछ हो, मैं जब जाऊँ, तो घर लैस मिलना चाहिए। मैडम रोलेन्ड ने अपने ज्येष्ठ पुत्र से निर्णय की याचना की।

'अच्छा तुम बताओ पिएर, क्या होना चाहिए ?'—उसने पूछा।

पिएर ने रूखे स्वर में उत्तर दिया—ज्यूाँ का कहना ठीक है। सादगी हर जगह ठीक होती है, आचार-व्यवहार में भी और घर-बार में भी।

माँ ने कहा—पर तुम्हें यह भी याद रखना चाहिए कि हम लोग व्यापारियों के बीच में रहते हैं, जहाँ आकर्षण श्रेष्ठ है, सादगी हेय !

पिएर ने उत्तर दिया—इसके मानें कि कोई बेवकूफ हो, तो हम भी बेवकूफ बन जायें। एक औरत पतन के पथ पर इसलिए दौड़े कि और स्त्रियाँ भी ऐसा कर रही हैं ?

ज्यूाँ हँसने लगा।

'तुम तो इस तरह उदाहरण देते हो, जैसे कोई आदर्शवादी तोता बोल रहा हो।'—ज्याँ ने पिएर से कहा।

पिएर ने कोई उत्तर न दिया। माँ-बेटे में उस विषय पर फिर कोई बातचीत न हुई। वह प्रातःकाल की भाँति माँ को एक खोज-भरी दृष्टि से देख रहा था।

पिता, वह उसे और आश्चर्य में डाले था, वह गोलमटोल नाटा आदमी ज्याँ से किंचित्-मात्र भी न मिलता था।

उसका परिवार

इन्हीं दिनों एक अदृश्य शक्ति ने, एक मृत मनुष्य ने, जैसे अपने हाथों उसके और परिवार के बीच के स्नेह-बंधन के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। अब उसके लिए इस दुनिया में कुछ भी शेष नहीं रहा। माँ नहीं, क्योंकि हृदय में उसके प्रति आदर और प्रेम के भाव नहीं। भाई नहीं, क्योंकि वह एक अजनबी की सन्तान है। पिता, वह भी नहीं के बराबर है। जिस मनुष्य को उसने अपने बाल्यकाल से ही प्रेम नहीं किया, उसे अब वह कैसे प्रेम कर सकता है।

और सहसा उसने पूछा—माँ, तुमने वह फोटो ढूँढ निकाला ?

उसने आश्चर्य से आँखें फैला कर कहा—कौन-सा फोटो ?

'वही मैरीकल का !'

'नहीं, अभी मैंने उसे नहीं ढूँढा। अब देखूँगी !'

'क्या बात है ?'—रोलेन्ड ने पूछा।

पिएर ने उत्तर दिया—आपको शायद याद हो कि पहले ड्राइंग रूम में मैरीकल का चित्र टँगा रहता था। मैं समझता हूँ, ज्यों उसे पा कर प्रसन्न होगा।

उल्लसित स्वर में रोलेन्ड चिल्लाया—ठीक, ठीक ! अभी पिछले सप्ताह ही तो मैंने उसे देखा था। तुम्हारी माँ अपनी अलमारी खोले बैठी थीं तभी तो। बृहस्पतिवार का दिन था, या शायद शुक्रवार का। मुझे याद है, मैं दाढ़ी बना रहा था कि तुमने मेरे बगल से कुर्सी घसीट ली थी, चिट्ठियों का बन्डल रखने के लिए। आधी चिट्ठियाँ तो तुमने उस दिन जला दी थीं। आश्चर्य है कि वसीयत का समाचार सुनने के दो ही दिन पहले तुमने मैरीकल का चित्र देखा था।

मैडम रोलेन्ड ने क्षीण स्वर में कहा—देखो, अलमारी में जाकर देखती हूँ।

सम्भवतः वह पिएर से झूठ बोली थी। सवेरे ही उसके पूछने पर उसने कहा था—देखो मुझे ठीक याद नहीं पड़ता। शायद मेरी आलमारी में है। वह सरासर झूठ बोली थी। थोड़े ही दिन पहले उसने उस चित्र को देखा, फिर चिट्ठियों के बन्डल के साथ, जो सम्भवतः प्रेम-पत्र होंगे, छिपाकर रख दिया, और तब भी कहती थी—देखो, मुझे ठीक याद नहीं पड़ता।

पिएर अपनी उस विश्वासघातिनी माँ को क्रुद्ध नेत्रों से देख

रहा था। अगर उसका बस चलता, तो वह उसकी मूक प्रतिमा को चकनाचूर कर देता, उसे मिट्टी में मिला देता; परन्तु वह उसका पुत्र है। भला वह उससे बदला क्यों कर ले सकता है? तब भी क्या उसके साथ विश्वासघात नहीं किया गया?

नहीं, उसने पिएर के साथ नहीं; परन्तु अपने नारीत्व के साथ विश्वासघात किया है। माँ के आसन पर विराजमान होने पर उसका एक कर्त्तव्य था। अगर पिएर अपनी माँ से क्रोधित है, तो इसीलिए कि उसने पति के प्रति इतना विश्वासघात नहीं किया है, जितना अपने प्रति!

पति-पत्नी का प्रेम-बन्धन— वह वासना की लहरों के अनुसार दृढ़ अथवा शिथिल होता रहता है; पर माँ का प्रेम, वह अत्यन्त पवित्र है, सर्वोत्कृष्ट है। स्त्री में माँ के हृदय का सृजन स्वयं प्रकृति ने किया है, और प्रेमिका के हृदय का सृजन वासना ने। अगर स्त्री माँ का कर्त्तव्य पूरा करने से विमुख होती है, तो वह कायर है, नाचीज़ है, उसकी उत्पत्ति का कोई मूल्य नहीं।

मैडम रोलेन्ड दो-तीन मिनटों में चित्र लेकर लौट आईं; पर पिएर को प्रतीत हुआ, जैसे वह न मालूम कितनी देर पश्चात् लौटी हैं।

'यह रहा!'—मैडम रोलेन्ड ने फोटो मेज़ पर पटकते हुए कहा।

डाक्टर ने चित्र उठा कर देखा। उसे ज्ञात था, माँ उसे एकटक देख रही है; पर तब भी उसने सहज गंभीर भाव से आँखें उठाकर चित्र और ज्याँ का मिलान किया। दोनों में काफ़ी सादृश्य था—एक ही प्रकार की भौंहें, एक ही ढाँचे की नाक; पर तब भी यह कह देना कि यह बाप है, यह बेटा, कठिन था। यह एक प्रकार का कौटुम्बिक सादृश्य प्रतीत होता था, जिनकी नसों में एक ही ख़ून बहता है। इस सादृश्य की अपेक्षा माँ का आचार-व्यवहार संदेह की पुष्टि अधिक करता था। पिएर को यह मिलान करते देख, उसने किसी अपराधी की भाँति अचकचा कर पीठ फेर ली थी। भावों को छिपाने के लिए वह चाय में शक्कर मिलाने का उपक्रम कर रही थी।

'जरा फोटो मुझे भी दिखाना!'—क्षण-भर पश्चात् पिता ने कहा।

पिएर से फोटो ले वह उसे प्रकाश में ले जाकर देखने लगा। फिर करुणभाव से बुदबुदाया—आह! पहले हमने कभी यह सोचा न था कि तुम इतने सहृदय होगे! लूसी, समय कितनी शीघ्रता से भागता है। आज यह नेक आदमी दुनिया में नहीं है।

लूसी ने कोई उत्तर न दिया। रोलेन्ड कहता गया—इसे कभी क्रोधित होते तो मैंने देखा ही नहीं। बहुत ही शान्त-स्वभाव का आदमी था। इसी से तो इसने हमारे दिल में घर कर लिया। मरते समय इसने अवश्य हम लोगों को याद किया होगा।

फिर, ज्यँा ने फ़ोटो ले कर देखा।

क्षण-भर पश्चात् उसने भी सकरुण भाव से कहा—मैं तो अब उसे पहचान ही नहीं पाता। मुझे तो उसके पके-बालों वाला झुर्रीदार चेहरा याद पड़ता है।

तब उसने फ़ोटो माँ को दे दिया। माँ ने डरते हुए फ़ोटो की ओर एक बार देखा और फिर उसने गम्भीर स्वर में कहा—ज्याँ! अब तुम इनके उत्तराधिकारी हुए हो। इस फ़ोटो को अपने ड्राइंग रूम में टाँगना।

और जब सब लोग ड्राइंग रूम में चले गये, तो उसने फ़ोटो को ताक पर घड़ी के निकट खड़ा कर दिया।

रोलेन्ड हुक्का गुड़गुड़ाने लगा। पिएर और ज्याँ ने सिगरेट जलाई। मैडम रोलेन्ड एक सोफे पर बैठी, एक कपड़े पर कसीदा काढ़ रही थीं। ज्याँ का कमरा सजाने के लिए वह एक मेज़पोश बना रही थीं। कपड़े पर आँखें गड़ाये वह कभी-कभी घड़ी के निकट रखे मैरीकल के फोटो को देख लेती थीं।

पिएर का मन उद्वेलित हो रहा था। उसकी आँखों में व्यथा भरी थी। मेरा संदेह अनुभव करके माँ को वेदना हो रही है—यह भावना पिएर के सन्तप्त हृदय को सान्त्वना दे रही थी। कभी-कभी आँखें उठा कर वह फ़ोटो की ओर देख लेता। उसे मालूम पड़ रहा था, जैसे फ़ोटो सजीव हो उठा है, और उन लोगों को डरा-डरा कर हँस रहा है।

सहसा स्ट्रीट-बेल बजी, और दूसरे क्षण मैडम रोज़मिली कमरे में थीं।

'सोचा, चलो चाय पी आऊँ !'—सान्ध्य-वन्दन के पश्चात् मुस्कराते हुए मैडम रोज़मिली ने कहा।

चाय पीने के समय हँसी का फौवारा फूट चला। पिएर को यह सब अच्छा न लगा। वह उठ कर चला गया।

उसकी इस अशिष्टता पर ज्यौं ने घृणा से नाक सिकोड़ कर कहा—अजीब वहशी माल्रूम होता है।

मैडम रोलेन्ड ने कहा—तुझे क्रोधित न होना चाहिए, बेटे ! देखता नहीं, आज-कल वह अशान्त रहता है। फिर आज समुद्र तक घूमने गया था, थक गया होगा। रोलेन्ड ने कहा—यह तो ठीक है ; पर उसे ऐसी मूर्खता न करनी चाहिए थी। श्रीमती रोज़मिली ने सब को शान्त करने की गरज़ से कहा—अरे कोई बात नहीं, माल्रूम पड़ता है, आजकल वह इंगलिश-फैशन ग्रहण कर रहे हैं।

६

एक-दो सप्ताह तक कोई विशेष घटना न हुई। रोलेन्ड मछली का शिकार खेलने जाता। ज्याँ, माँ के साथ नये घर को सजाने में व्यस्त रहता। उदास पिएर, बस भोजन के समय ही घर में दिखाई पड़ता।

पिता ने एक दिन उससे पूछा भी था—आजकल तुम्हारे चेहरे पर हर समय मातम क्यों छाया रहता है ? क्या बात है ?

डाक्टर ने उत्तर दिया था—बात यह है कि आजकल मुझे जीवन भार-स्वरूप प्रतीत होता है।

वृद्ध, पिएर का आशय न समझ पाया। मुँह सिकोड़ते हुए उसने कहा—यह तो अच्छी बात नहीं। जब से हम लोगों के दिन फिरे, तभी से सब के चेहरे खुशी की मज़ार बन रहे हैं। मालूम पड़ता है, जैसे कोई दुर्घटना हो गई और हम सब मातम-पुर्सी कर रहे हैं।

'हाँ, मैं एक मनुष्य के लिए पश्चात्ताप कर रहा हूँ।'

'किसके लिए ?'

'एक के लिए, जिसको मैं अत्यधिक प्यार करता था।'

पिता ने समझा कि पिएर अपनी किसी प्रेमिका की बात कह रहा है।

'मैं समझता हूँ कोई स्त्री है ?'—उसने कहा।

'हाँ, एक स्त्री !'

'मर गई ?'

'नहीं, यह अच्छा होता; पर वह पतन के खड्ड में गिर गई।'

पिएर एक अजीब ढंग से बातें कर रहा था, रोलेन्ड ने यह अनुभव किया; पर तब भी उसने फिर कुछ न पूछा। उसके विचारानुसार यौवन-काल की इन प्रेम-कहानियों को किसी तीसरे पर प्रकट न करना चाहिए।

मैडम रोलेन्ड पीली पड़ गई थीं। ऐसा मालूम पड़ता था कि वर्षों की बीमार हों। जब वह कुर्सी पर बैठतीं, तो मालूम पड़ता, जैसे कोई कटा पेड़ गिर पड़ा हो। उन्हें ठंडी श्वासें छोड़ते देख, एक दिन रोलेन्ड ने कहा भी था—लूसी, तुम बीमार प्रतीत होती हो। सम्भवतः ज्याँ के साथ दौड़ते-घूमते तुम थक गई हो। अपने शरीर को आराम दो, समझीं !—उन्होंने निरुत्तर सिर हिला दिया था।

परन्तु आज उनकी दशा कुछ ऐसी गिरी मालूम पड़ती थी, कि रोलेन्ड के हृदय में करुणा उत्पन्न हो आई।

'हूँ, इस तरह ढीली-ढाली क्यों बैठी रहती हो प्रिये ! अपने स्वास्थ्य की ओर ध्यान दो।'

और फिर उसने अपने ज्येष्ठ पुत्र से कहा—देखते नहीं, तुम्हारी माँ की दशा ठीक नहीं है। भले आदमी ! तुम्हें पूछना तो चाहिए था, कि कैसी तबियत है ?

पिएर ने उत्तर दिया—पर मैं तो कोई ऐसी चिन्ता की बात नहीं देखता।

रोलेन्ड ने क्रोध से गरज कर कहा—नालायक हो ! तुम्हारे डाक्टर होने से क्या फायदा, जब तुम अपनी माँ की देख-भाल तक नहीं कर सकते ! आँखों के सामने आदमी मर जाय; पर यह नहीं पूछोगे, क्या हुआ ?

मैडम रोलेन्ड कठिनता से श्वासें ले पाती थीं। उनका चेहरा रूप-विहीन-सा हो रहा था। पति ने चिल्ला कर कहा—देखो, वह बेहोश हो रही हैं।

'नहीं, कुछ नहीं। मैं अच्छी हो जाऊँगी।'—लूसी ने क्षीण स्वर में कहा। निकट जाकर पिएर ने उसकी ओर देखते हुए पूछा—क्यों, क्या कोई कष्ट है ?

उसने दीन नेत्रों से पुत्र की ओर देखते हुए, क्षीण स्वर में उत्तर दिया—नहीं, कुछ नहीं। मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूँ, कुछ नहीं।

पिएर ने उसकी नाड़ी की गति देखनी चाही; पर उसने इतने जोरों से झटका दिया कि हाथ पास में रखी कुर्सी से जा टकराया।

पिएर ने काँपते स्वर में कहा—हाथ इधर लाओ। देखूँ क्या बात है ?

तब माँ ने हाथ पिएर के सामने कर दिया, नाड़ियों में रक्त तीव्र गति से झटके के साथ दौड़ रहा था। त्वचा अंगारे-सी तप रही थी।

'तुम वाकई बीमार हो'—उसने कहा—'तुम्हारे लिए दवा की आवश्यकता है।' और वह झुक कर दवा का नुस्खा लिखने लगा। सहसा उसने सिसकने की आवाज़ सुनी। माँ, दोनों हाथों से मुँह मूँदे सिसक-सिसक कर रो रही थी।

रोलेन्ड द्रवीभूत हो गया था। उसने घबरा कर पूछा—लूसी, लूसी! क्या बात है ? तुम्हें किस बात का दुःख है ?

उसने कोई उत्तर न दिया ; पर उसकी ठंडी आहें बतला रहीं थीं कि वह गहरी अन्तर्वेदना से पीड़ित हो रही है। रोलेन्ड ने मुँह पर से उसका हाथ हटाना चाहा ; पर उसने हाथ न हटाया, न हटाया।

नहीं ! नहीं !! नहीं !!!

तब रोलेन्ड ने सकरुण भाव से ज्येष्ठ पुत्र की ओर देखकर कहा—मैंने तो इसे इस तरह बेहाल कभी नहीं देखा ! क्या बात है ?

कोई विशेष बात नहीं। हिस्टीरिया का दौरा-सा प्रतीत होता है।

और उसे अनुभव हुआ कि माँ को इस प्रकार व्यथित देखकर उसके सन्तान हृदय में शान्ति का संचार हो रहा है। सिर उठाये वह माँ को ऐसे देख रहा था, जैसे अपराधी को दण्ड देने के पश्चात् जज देखे।

सहसा मैडम रोलेन्ड उठी और अपने कमरे में भाग कर भीतर से कुन्डी बंद कर ली।

रोलेन्ड आश्चर्य्यचकित पिएर की ओर देखता हुआ बोला—क्या तुम इसका कारण बता सकते हो?

'बताया तो, हिस्टीरिया का दौरा है।'

सत्य बात तो यह थी कि पिएर की संदेह-भरी दृष्टि ने मैडम रोलेन्ड को इतना विचलित कर दिया था; पर पिएर बिचारा करे क्या? वह भी तो हृदय-पीड़ा-ग्रसित था। अब माँ को प्रेम नहीं कर सकता, उसका आदर नहीं कर सकता—यह भावना हर समय उसके हृदय में चुटकियाँ लिया करती है। और अब, जब कि उसने माँ के हृदय के घाव को तराश दिया है, वह उसके हृदय की असीम पीड़ा को समझ रहा है, उसे दुःख होता है, पश्चात्ताप होता है, चाहता है कि समुद्र के गर्भ में अपने इस काले मुँह को सदा के लिए छिपा ले।

आह! वह माँ को क्षमा कर कितना प्रसन्न होता; पर वह कैसे उन बातों को भूले! वह उसके हृदय को पीड़ा नहीं पहुँचाना चाहता; पर वह यह कैसे करे, जब कि स्वयं वेदना की

आग में तड़फ रहा है। अपने को धिक्कारता हुआ, पवित्र विचारों को धारण करके वह भोजनालय में जाता है; परन्तु एक समय विश्वास और पवित्रता से भरी माँ की आँखों में अब डर और हिचकिचाहट के भाव पढ़कर उसके अन्दर प्रतिशोध की अग्नि भभक उठती है। वह अपने को रोकने का प्रयत्न करता है; पर मुँह से ऐसे शब्द निकल ही जाते हैं, जो अचूक तीर की भाँति उसके हृदय पर लगें।

माँ के उस कुत्सित प्रेम का ध्यान आते ही पिएर क्रोध से उबल पड़ता है। यह भावना जैसे जहर की नाईं उसके रक्त में मिल गई है और रह-रह कर उसे किसी पागल कुत्ते की भाँति काट खाने को उसकाती है।

ज्याँ अपने भाई के उच्छृङ्खलता-पूर्ण व्यवहार का कारण उसकी ईर्ष्या समझता था। उसने मन-ही-मन निश्चय कर लिया था कि बच्चा को एक दिन ऐसा छकाऊँगा कि जन्म भर याद रक्खेंगे; परन्तु क्योंकि अब वह घर से दूर रहता था, इसलिए उसकी यह भावना शान्ति की चादर में लिपटी पड़ी रहती थी। धन ने उसके अन्दर नवीन कल्पनाएँ भर दी थीं। जब-तब वह घर आता, तो किसी नये ढंग का कोट अथवा कोई वस्तु बनवाने या खरीदने की इच्छा उसके मन में लहरें मारती रहतीं।

ज्याँ के नये घर के प्रवेश की खुशी में एक प्रीति-भोज का

आयोजन किया गया था। कार्यक्रम इस प्रकार था—प्रातःकाल सब लोग सेंटजुइन सैर के लिए जायँ, और वहाँ से लौट कर नये घर में भोजन हो। रोलेन्ड ने पहले प्रस्ताव किया था कि नौका-द्वारा सैर के लिए चलें; परन्तु अगर मनोनुकूल हवा न हुई, तो बड़ा कष्ट होगा—यह विचार कर घोड़ागाड़ी पर चलने के लिए तय हुआ था।

निश्चित किये हुए दिन, सब लोग दस बजे प्रातःकाल रवाना हुए। सड़क कच्ची थी, जिस पर धूल के बादल उड़ते थे। सड़क के दोनों किनारों पर पेड़ों की छाया थी, थोड़ी-थोड़ी दूर पर भरे-हरे उद्यान दिखाई पड़ते थे। गाड़ी हिलती-डुलती उस ऊँची चढ़ाई वाली सड़क को तय कर रही थी। रोलेन्ड परिवार श्रीमती रोज़मिली, तथा कैप्स व्यूसायर, छहों आदमी चुपचाप आँखें मूँदे, गाड़ी की गड़-गड़ की आवाज सुनने में व्यस्त थे।

हारवेस्ट-टाइम था। सुनहली फसल से लहलहाते खेतों ने जैसे सूर्य की स्वर्णिम किरणों का रंग चुरा लिया था। यत्र-तत्र किसान-समूह खेतों की कटाई में व्यस्त नज़र आता था।

दो घंटे की यात्रा के पश्चात् गाड़ी एक सराय के सामने जा खड़ी हुई। गृह-स्वामिनी ने मुस्करा कर सब का स्वागत किया।

हरी घास पर लगे खेमों की छाया में कुछ यात्री भोजन कर रहे थे। घर के भीतर से तश्तरियों के खड़कने की तथा खिल-खिलाहट की आवाज़ आ रही थी। उन लोगों के लिए एक अलग कमरा ठीक कर दिया गया था।

दीवाल पर छोटी-छोटी महीन जाकटों को टँगी देख, रोलेन्ड ने बच्चों की तरह किलकारी मार कर कहा—ओहो, इधर केंकड़ों का शिकार होता है !

ब्यूसायर ने उत्तर दिया—हाँ, इधर यह जानवर बहुतायत से होते हैं। ओहो, अगर जलपान के पश्चात् हम लोग इनका शिकार करें, तो !...

किसी ने इस प्रस्ताव का खंडन न किया। जलपान के समय लोगों ने नाम-मात्र को खाया, सन्ध्या के समय एक विशाल भोज का आयोजन हुआ था, इसलिए। तब रोलेन्ड ने कई जाल खरीद लिये। गृहस्वामिनी ने कपड़े लाकर दिये। सब लोग कपड़े बदल-बदल कर, जाल अपने-अपने कँधे पर रख कर, शिकार के लिए चल पड़े।

आज मैडम रोज़मिली विशेष आकर्षक प्रतीत होती थीं। गृहस्वामिनी की दी हुई पोशाक फिट बैठी थी। उस पोशाक में कसे अंगों ने माधुर्य को अपना दास बना लिया था। चंचलता उसकी सखी बनी थी। पथरीले मार्ग पर किसी अल्हड़ नवयौवना की भाँति वह उछलती-कूदती, मचलती-खिलती चली जा रही थी।

धन के आगमन के पश्चात्, ज्याँ बहुधा विचार किया करता कि इससे विवाह करूँ या नहीं। उसे देखते ही विवाह का प्रस्ताव पेश करने की इच्छा लहलहा उठती; परन्तु वह फिर

सोचने लगता—पहले मैं अपने को स्थिर कर लूं। अब वह उससे अधिक धनवान था; परन्तु फिर भी वह ऐसी गरीब न थी। दोनों की सामाजिक स्थिति समकक्ष थी।

और आज उसे देखते ही वह अत्यधिक चंचल हो उठा।

'अब मुझे हिचकिचाहट में न पड़ना चाहिए। इससे सुन्दर स्त्री मिल नहीं सकती।'—उसने स्वगत कहा।

चारों ओर हरियाली से घिरी उस पहाड़ी चढ़ाई पर वे सब चले जा रहे थे। पार्श्व की ओर देखने पर दूर लहराता समुद्र दृष्टिगोचर होता था। सूर्य की किरणें इस प्रकार पृथ्वी पर पड़ रही थीं कि पीछे उजियाला नजर आता था, आगे अँधेरा-सा। एक मनोरम दृश्य था।

मदान्ध पवन के मधुर झकोरों से उत्तेजित ज्याँ, हसरत-भरी निगाह से मैडम रोज़मिली के नग्न—स्निग्ध बाहुओं, मुस्कान विकसित मुख तथा उसकी लचकती कमर को देख रहा था।

चढ़ाई का सिलसिला खत्म होने पर उन्हें दूर-दूर तक फैली ऊबड़-खाबड़ भूमि दिखाई पड़ी। यत्र-तत्र पत्थरों के ढोंके बिखरे दिखाई पड़ते थे। बगल से घने जंगली पेड़ों को चीरती हुई एक पगडंडी चली गई थी, जो सम्भवतः समुद्र-तट को जाती थी।

मार्ग में ऊबड़-खाबड़ जमीन देख ज्याँ ने मैडम रोज़मिली की ओर अपने हाथ फैला दिये। मैडम रोज़मिली ने प्रसन्नता-पूर्वक सहारे के लिए उन्हें थाम लिया।

मैडम रोलेन्ड व्यूसायर का, और फादर रोलेन्ड पिएर का सहारा लिये धीरे-धीरे चल रहे थे। कुछ समय के पश्चात् वे दोनों जोड़े पीछे छूट गये।

सहसा मैडम रोज़मिली रुक गई। निकट ही एक मौसमी जल-प्रपात था, जिसका कल-कल करता पानी, किसी नाली की भाँति पगडंडी को काटता चला जा रहा था।

'प्यास लगी है!'—मैडम रोजमिली ने बच्चों की भाँति मचलते हुए कहा। पर वह पानी पिये कैसे? उसने अंजलि बाँधकर उसमें पानी भरना चाहा; पर ज्योंही वह जल भरती, त्योंही सब जल अँगुलियों के बीच से बह जाता। ज्याँ ने जल के प्रवाह में एक बड़ा-सा पत्थर का ढोंका रख दिया। जल उस पर चढ़ कर, एक धार में आगे की ओर गिरने लगा। मैडम रोज़मिली ने झुक कर जैसे-तैसे अंजलि बाँधकर हथेलियों से अपने ओठ लगा लिये।

जब पानी पीकर वह सीधी हुई, तो उसकी छाती पर, बालों पर और मुख पर, यत्र-तत्र जल-कण चमक रहे थे। उषा-सी स्निग्ध, वह एक अनिंद्य सुन्दरी प्रतीत होरही थी।

ज्याँ धीरे-से उसके कंधों पर झुककर, उन्हें दबाता हुआ बुद-बुदाया—आह, तुम कितनी सुन्दर प्रतीत होती हो!

जैसे कोई अज्ञात-यौवना बालिका झिझके, मैडम रोज़मिली ने छिटक कर कहा—अच्छा-अच्छा, आप तारीफ करना रहने दीजिए।

ज्याँ के हृदय को एक आकांक्षा गुदगुदा रही थी। शरारत से हाथ पकड़ कर, उसे खींचते हुए उसने कहा—आओ आगे बढ़ चलें, जिससे वे लोग हमें पकड़ न पायें। वे दोनों पुनः दौड़ते हुए आगे बढ़े। अब पेड़ों का झुरमुट अधिक सघन न था; परन्तु पगडंडी अधिक सकड़ी और चक्करदार हो गई थी। समुद्र का गर्जन कोई मधुर स्वर-लहरी-सा कर्ण-गोचर होने लगा। इधर-उधर बरसाती पानी से भरे गड्ढे दिखाई पड़ते थे, जिनमें कितने ही केंकड़े तैर रहे थे।

सहसा पायजामा घुटनों तक चढ़ा, एक छिछले गड्ढे में उतरते हुए मैडम रोज़मिली चिल्लाई—अरे देखो तो, इसमें बहुत से केंकड़े हैं!

ज्याँ भी पायजामा जाँघों तक चढ़ाकर, मैडम रोज़मिली के निकट गया।

'तुम्हें कुछ दिखाई पड़ता है?'—कोमल स्वर में उससे पूछा गया।

मैडम रोज़मिली के कंधों पर झुककर पानी में देखते हुए, उसने उत्तर दिया—हाँ, तुम्हारा सुन्दर मुख!

'तब तुम केंकड़ों का शिकार कर चुके!'

'मैं तो तुम्हारा शिकार करना चाहता हूँ!'—भावुकता की लहर में बहते हुए धीरे-से मैडम रोज़मिली का कंधा दबाकर ज्याँ ने कहा।

'कोशिश करो; पर मैं तुम्हारे जाल में फँसने वाली नहीं।'—

मैडम रोज़मिली ने एक हृदय-वेधी कटाक्ष करके, ओठों के बीच मुस्कराते हुए कहा।

'अगर फँस गईं ?'

'अच्छा-अच्छा, बातें न बनाइए!' और सहसा पानी की सतह पर उतराते एक केंकड़े की ओर देखते हुए उसने कहा—'लो, इसे पकड़ो।'

ज्याँ ने उसकी ओर आँखें उठा कर देखा, जैसे कहा हो—बड़ी निष्ठुर हो! और फिर उसने पानी में जाल फेंका। केंकड़ा डुबकी मारकर पानी की गहराई में हो रहा; पर दूसरे क्षण किनारे की ओर जाते हुए, पानी की सतह पर आते ही वह जाल में फँस गया। तब ज्याँ ने उसे हाथ से पकड़ कर घास पर रखते हुए कहा—लो।

मैडम रोज़मिली, काँटेदार सिर के कारण, उसे छूने से डरती थी। केंकड़ा तब भी धीमे-धीमे साँस ले रहा था। साहस करके उसने दुम पकड़कर उसे उठाया, और अपनी टोकरी में बिछी गीली घास पर रख दिया।

फिर तो वह इधर-उधर गड्ढों में खोज-खोज कर केंकड़ों का शिकार करने लगी। उसका डर भाग गया था। वह उन्हें बड़ी आसानी से अपनी टोकरी में रखती गई।

ज्याँ केवल उसके पीछे-पीछे दौड़ रहा था। वह शिकार में इतना निमग्न न था, जितना मैडम रोज़मिली के अंगों की गति

निहारने में। जब मैडम रोज़मिली पानी में जाल फेंकने लगती, तो वह उसके ऊपर झुक कर, जाल फैलाने में सहायता देता हुआ कहता—देखो ऐसे! समझीं! और वह उसके मुँह को देख कर मुस्करा देता।

वह अधिक देर तक अपनी भावनाओं पर नियंत्रण न कर सका। सहसा, एक बार इस प्रकार मुस्कराते समय, उसने मैडम रोज़मिली को अपने बाहुपाश में आबद्ध करके, उसके कोमल अधरों पर एक आवेशपूर्ण चुम्बन अंकित कर दिया।

रोज़मिली ने छिटक कर, ओठों पर लगी मिठास को पोंछते हुए आँखों से मुस्कराकर कहा—तुम भी कैसे ख़राब आदमी हो! भला एक साथ दो काम होते हैं?

ज्यॉं के चेहरे पर उन्माद हँस रहा था।

'मैं तो केवल एक काम कर रहा हूँ—बस तुम्हें प्यार!'—उसने कहा।

मैडम रोज़मिली ने लज्जा से लाल होकर कहा—आज क्या हो गया तुम्हें? कुछ दिमाग तो नहीं फिर गया!

'हूँ, मैं तुम से प्रेम करता हूँ।...सच, हृदय से प्रेम करता हूँ।'

घुटनों पानी में खड़ी, हाथ में जाल का कोना पकड़े, मैडम रोज़मिली ने अकचंका कर ज्यॉं की आँखों की ओर देखा और कहा—उँह, इसके लिए क्या यही समय है! क्या कल तक नहीं ठहर सकते, जो आज शिकार में बाधा डाल रहे हो।

उसके स्वर में झुँझलाहट थी; पर प्रसन्नता-मिश्रित वह झुँझलाहट भी कितनी मधुर प्रतीत होती है !

'परन्तु मुझसे तो एक क्षण के लिए भी नहीं रुका जाता। कितने महीनों से इस हृदय-कुंड में प्रेमाग्नि धधक रही थी। आज तुमने उसमें और ईंधन डाल दिया।'

तब उसने मुस्करा कर कहा—अच्छा, आओ चलो उस शिला-खण्ड पर बैठें। वहाँ ठीक से बातें होंगी।

क्षण-भर पश्चात् वे दोनों धूप में चमकते शिलाखण्ड पर बैठे थे।

मैडम रोज़मिली ने ज्याँ का हाथ अपने हाथों में ले, उसके मुख को देखते हुए, प्रेम-पूर्ण; परन्तु गम्भीर स्वर में कहा—प्रिय मित्र, अब न तुम ही अबोध बालक हो, न मैं एक उच्छृङ्खल नवयुवती। हम दोनों ने दुनिया अच्छी तरह देखी है। अगर तुम मुझ से प्रेम करते हो, तो इसका अर्थ है कि तुम मुझ से विवाह करना चाहते हो।

ज्याँ अभी विवाह के लिए किंचित्-मात्र भी प्रस्तुत न था, तब भी उसने आवेश-पूर्ण स्वर में कहा—हाँ, और क्या।

'तो तुमने अपने माता-पिता से आज्ञा ले ली है ?'

'अभी तो नहीं। पहले मैं यह जानना चाहता था कि तुम तैयार हो या नहीं !'

तब मैडम रोज़मिली ने ज्याँ का हाथ चूमते हुए कहा—मैं प्रस्तुत

हूँ। मेरा अनुमान है, तुम एक सहृदय तथा सज्जन पुरुष हो; पर तब भी मैं तुम्हारे माता-पिता की इच्छा के विरुद्ध कोई काम न करूँगी।

'माँ को कोई आपत्ति न होगी। वह तुम्हें प्रसन्नता-पूर्वक अपनी पुत्र-वधू बनाना स्वीकार करेंगी।'

फिर, मैडम रोज़मिली सिर नीचा किये चुप बैठी रहीं। इस विवाह के प्रस्ताव ने उसकी हृदय-तंत्री को झंकृत कर दिया था। ज्याँ भी चुप बैठा रहा। ज्वार के पश्चात् जो दशा समुद्र की होती है, वही उसकी थी। आह, इन थोड़े-से शब्दों ने, एक क्षणिक उन्माद की लहर ने, उनको प्रणय-सूत्र में बाँध दिया!

सहसा रोलेन्ड की आवाज ने उन दोनों को चौंका दिया।

'इधर आओ बच्चो, इधर आओ। देखो तो, ब्यूसायर ने गड्ढे-के-गड्ढे साफ कर दिये!'—वह उल्लसित स्वर में चिल्ला-चिल्ला कर उन्हें पुकार रहा था।

घुटनों तक पायजामा चढ़ाये कैप्टेन ब्यूसायर एक-एक गड्ढों को साफ़ कर रहा था। उसकी तेज आँखें केंकड़े पर पड़ी नहीं, कि वह गरीब जानवर दूसरे क्षण उसकी टोकरी में था। मैडम रोज़मिली आश्चर्य और प्रसन्नता से उस निपुण शिकारी की एक-एक गति देखने लगी।

सहसा रोलेन्ड चिल्लाया—वह लो, लूसी भी आ गई!

इस तरह बालकों की भाँति दौड़-दौड़कर शिकार करना उन्हें अच्छा न लगता था, इसीलिए वह और पिएर, दोनों एक शिला-खण्ड पर बैठे आराम कर रहे थे। वह पिएर से डरती थीं, तब भी थकन के कारण पस्त, वह साहस करके उसके पार्श्व में बैठी रहीं। समुद्र की ओर से आती शीतल पवन से धुली सूर्य-किरणों का स्पर्श बड़ा सुखद प्रतीत हो रहा था। उनके मन में भावनाएँ उठतीं, वह कुछ कहना चाहतीं; पर पिएर के डर से कुछ न कहतीं। जानती थीं कि पिएर कोई ऐसी ही बात कह बैठेगा, जो उनके कलेजे में लगेगी।

पानी से भीगे पत्थर के टुकड़ों को गेंद की तरह एक हाथ से दूसरे हाथ में उछालता हुआ बैठा, पिएर सब कुछ देख रहा था। यात्रा के आरम्भ से ही मैडम रोज़मिली को ज्याँ से सट कर चलते देख, तथा ज्याँ को हसरत-भरी निगाह से उसकी ओर ताकते देख, उसने समझ लिया था कि आज दोनों पर एक नया रंग चढ़ा है, जिसे उसकी भाषा में मूर्खता कहते हैं।

पिएर उनकी ओर देख घृणा से हँसने लगा।

विना उसकी ओर देखे माँ ने पूछा—क्या बात है?

शिला-खण्ड पर पास-पास बैठे ज्याँ तथा मैडम रोज़मिली की ओर संकेत करके उसने मुँह सिकोड़ कर कहा था—ज़रा उन लोगों को देखो तो! ऐसे ही मूर्ख मनुष्य स्त्रियों के जाल में फँसते हैं।

माँ ने क्षीण; परन्तु व्यथित स्वर में जैसे अपने भीतर से द्वन्द्व करते हुए कहा था—आह ! पिएर, तुम कितने निष्ठुर हो। वह स्त्री सहृदया है। तुम्हारा भाई उससे सुन्दर एवं सच्चरित्र पत्नी नहीं पा सकता !

वायुमण्डल को अपने भीषण अट्टहास से गुंजाते हुए, उसने उत्तर दिया—सच्चरित्र ! जैसे सभी स्त्रियाँ सच्चरित्र ही होती हैं ! तभी तो वे अपने पतियों के साथ विश्वासघात करती हैं।

माँ ने फिर कोई उत्तर न दिया। वह उसी क्षण उठ खड़ी हुई। पैर लड़खड़ा रहे थे, शरीर काँप रहा था; पर वह भागती चली जा रही थी। गिर पड़े, चोट लग जाये, हाथ-पैर टूट जायें; पर वह पिएर के निकट एक पल भी नहीं बैठ सकती, एक पल भी नहीं !

'माँ, तुम आ गईं।'—ज्यााँ ने पुलकित स्वर से, उसके निकट जाते हुए कहा। माँ ने जैसे गिरने से बचने के लिए कसकर ज्याँ को पकड़ लिया। वह हाँफ रही थी। हृदय की तीव्र धड़कन स्पष्ट सुनाई पड़ती थी। मुँह फीका पड़ गया था। उसकी कातर आँखें दया की भीख माँग रही थीं।

उसे इस प्रकार विचलित देख, ज्याँ ने घबड़ा कर सकरुण भाव से पूछा—क्या बात है ?

उसने अस्पष्ट स्वर में उत्तर दिया—मैं मरते-मरते बची हूँ। इन भयावनी पहाड़ियों को देखकर डर गई !

तब ज्यॉं उसको अपना सहारा देकर ले चला। मैडम रोलेन्ड की अजीब हालत हो रही थी। वह चाहती थीं कि कोई मेरा मुँह न देखे। कहाँ जा छिपें कि जिससे इन लोगों की आँखों से दूर हो जायँ।

पुत्र का धीमा स्वर उसके कानों में पड़ा—जानती हो आज मैंने क्या किया ?

क्षीण स्वर में उसने उत्तर दिया—मैं नहीं जानती।

'सोचो ?'

'मैं नहीं सोच सकती। मै नहीं जानती।'

'मैंने आज मैडम रोज़मिली से विवाह का प्रस्ताव किया। वह राजी है !'

माँ ने कोई उत्तर न दिया। उसके हृदय ने कहा था—ठीक किया; परन्तु यह शब्द जैसे मुँह से निकले ही नहीं। वह अत्यधिक व्यग्र हो उठी थी।

'हाँ, तो मैंने ठीक किया ?'—क्षण-भर उत्तर की प्रतीक्षा के पश्चात् ज्यॉं ने फिर पूछा।

'हाँ, ठीक किया।'

'परन्तु तुम इतने धीमे स्वर में क्यों कह रही हो। प्रसन्न नहीं दीखतीं।'

'मैं बहुत प्रसन्न हूँ।'—मैडम रोलेन्ड ने हँसने का प्रयत्न करते हुए कहा।

'सचमुच ?'

'सचमुच !'

और अपनी प्रसन्नता प्रकट करने के लिए उन्होंने फीकी हँसी से ओठ फड़का दिये। वात्सल्यपूर्ण प्रेम में ज्यॉं का मुंह चूम लिया। तब उन्होंने अपनी भीगी आँखें पोंछीं और एक बार पीछे फिर कर देखा। एक शिला-खण्ड पर औंधा मुँह किये एक मनुष्य लेटा था, निर्जीव-सा! विचारों के गर्त्त में दबा वह पिएर था। मैडम रोलेन्ड अन्दर-ही-अन्दर काँप-सी गई। वह ज्यॉं के बाहुओं के अन्दर सिकुड़-सी गई।

जगाये जाने पर पिएर इस तरह कुनमुना उठा, जैसे सो रहा हो।

७

दिन-भर की थकन से चकनाचूर होकर सब लोग नये-घर लौटे। व्यूसायर में इतना भी दम न था कि द्वार पर दो मिनट के लिए ठहर सके। वह अपने घर जाने के लिए उद्यत हो रहा था। प्रसन्न-मन ज्एँ के अन्दर, सब को विशेषकर दोनों अतिथियों को अपना सुन्दर मकान दिखाने की लालसा उछल रही थी! उसने विनम्रता-पूर्वक व्यूसायर से रुकने के लिए आग्रह किया और फिर दौड़ा-दौड़ा अकेला भीतर गया—सम्पूर्ण मकान को प्रकाश से आलोकित करने के लिए।

अँधेरे में दीवार के सहारे सब लोग बेदम-से खड़े थे। सहसा सामने जैसे इन्द्रपुरी का द्वार खुल गया। प्रकाश में चमकता एक चेहरा कह रहा था—आइए, आप लोग भीतर आइए!

हरे-नीले फूलों के गमलों की ओर से आती प्रकाश-किरणों से वह गैलरी जगमगा रही थी। बीचों-बीच एक सुन्दर झाड़ टँगा था, जिसमें से छन-छन कर आते तीव्र प्रकाश से गैलरी

की आभा दुगुनी हो गई थी। रोलेन्ड का हृदय हर्ष से थिरक रहा था। उसके मन में आया कि तालियाँ बजाये। द्वार के खुलते ही जैसे उसने कोई मनोरम दृश्य देखा हो।

गैलरी को पार कर दूसरा ड्राइंग-रूम था, जिसमें ज्याँ मुवक्किलों से बातचीत करेगा। चारों ओर स्प्रिंगदार कोच पड़े थे, और बीच में एक गोलाकार सुन्दर मेज़।

मेज़ पर सुनहली जिल्दों में बँधी न मालूम कितनी कानून की किताबें रक्खी थीं। कमरा विशेष रूप से सजा न था, तब भी उसमें एक आकर्षण था।

बाईं ओर का द्वार खोलने पर शयनागार दृष्टिगोचर हुआ। इसे सजाने में मैडम रोलेन्ड ने अपनी सारी बुद्धि-चातुरी .खर्च कर दी थी। चारों ओर दरवाज़ों पर सुनहले पर्दे टँगे थे, जिन पर सुन्दर नवयुवतियाँ भेड़ चराने जाती दिखाई पड़ती थीं। उन भोले-भाले सुन्दर मुखड़ों को देखिए, वे सलोनी आँखें एकटक आपको देखती प्रतीत होंगी। एक किनारे बिछा पलंग, बीच में रखी आराम कुर्सियाँ तथा अष्टकोण मेज, सभी चीज़ों में एक सादगी थी। और वही सौन्दर्य उस शयनागार का सौन्दर्य था।

मैडम रोज़मिली ने आनन्दोल्लसित स्वर में कहा—वाह! बड़ा सुन्दर मकान है!

'तुम्हें पसन्द आया?'—ज्याँ ने पूछा।

'बहुत!'

"मुझे असीम प्रसन्नता हुई !'

और मुस्कराते हुए दोनों ने एक दूसरे को देखा, जैसे परस्पर भावों को पढ़ लिया हो। दोनों के कपोलों पर एक क्षणिक लालिमा दौड़ गई।

पिएर भूखे शेर की भाँति उस मकान की एक-एक चीज़ को देख रहा था।

उसकी आँखों में ईर्ष्या प्रज्ज्वलित हो उठी थी। आह! यह सुन्दर मकान उसका होता।

मैडम रोज़मिली का हृदय पुलक और सराहना से परिपूरित हो रहा था। यह सुन्दर मकान शीघ्र ही उसका होगा। मालूम पड़ता है, माँ-बेटों ने मेरे आगमन की तैयारियाँ अभी से कर ली हैं। पलंग लिया गया है, खूब लम्बा चौड़ा, जैसे एक दम्पती के सोने के लिए हो।

भोजनालय में एक गोलाकर मेज़ पर फल आदि सभी चीजें कायदे से थाली में चुनी रक्खी थीं। किसी को ऐसी भूख तो न थी; पर तब भी उन्हें खाना पड़ा। घंटों बाद सब लोगों ने विदा माँगी। मैडम रोलेन्ड घर में आवश्यक चीजें धर-उठा रही थीं, इसीलिए वह रुक गई।

'क्या तुम्हें लिवाने के लिए मुझे फिर आना पड़ेगा ?'—रोलेन्ड ने पूछा। वह पहले हिचकिचाई; परन्तु फिर कहा—नहीं, तुम आराम करना। पिएर रुका है, मैं उसके साथ चली आऊँगी।

उन लोगों के जाते ही उसने अनावश्यक प्रकाश बुझा दिया। केक, शक्कर मदिरा आदि चीजें फिर अलमारी में चुन दीं। फिर शयनागार में देखने गई कि सुराही में ताज़ा पानी भर दिया गया है अथवा नहीं।

पिएर, ड्राइंग-रूम में एक कुर्सी में घुसा बैठा, मजे से धुएँ के बादल उगल रहा था

सहसा उसने मुस्करा कर ज्एाँ से कहा—आज तो विधवा, लिल्ली घोड़ी प्रतीत होती थी। है तो खूसट ही!

इन शब्दों द्वारा अंकित आन्तरिक चोट ने जैसे ज्एाँ का सारा खून खौला दिया। क्रोध से मुँह तमतमा उठा।

'देखो' मैं बतलाये देता हूँ, आज से फिर कभी मैडम रोज़मिली का अपमान करने का साहस न करना!'—उसने चिल्ला कर कहा।

पिएर ने ईंट का जवाब पत्थर से दिया।

'तो आप मुझे हुक्म दे रहे हैं! दिमाग तो नहीं फिर गया?'

क्रोधावेश में ज्एाँ पृथ्वी पर पैर पटकता हुआ चिल्लाया—मेरा नहीं, तुम्हारा दिमाग फिर गया है! अब मैं अधिक नहीं बरदाश्त कर सकता!

'ऐसे गर्मा रहे हैं, जैसे वह लिल्ली घोड़ी इनकी कोई लगती ही हो।'

'हाँ, तुम्हें मालूम हो कि मैं शीघ्र ही मैडम रोजमिली से विवाह करने वाला हूँ!'

पिएर के भीषण अट्टहास से कमरा गूँज उठा।

'अब समझा! तुमने बड़े मौके से विवाह का आयोजन किया है।'

क्रोध चरम सीमा तक पहुँच चुका था। ज्याँ का मुख पत्थर की भाँति कठोर हो रहा था। आँखें विशेष रूप से चमक रही थीं। पिएर के मुँह के पास जाकर उसने चिल्लाकर कहा—चुप रहो! देखो मेरा मज़ाक़ उड़ाने का प्रयत्न न किया करो।

क्रोध में पिएर भी भयंकर हो उठा था। इतने दिनों की संचित ईर्ष्या आज धधक उठी थी। मूक वेदनाओं से पीड़ित, वह पागल कुत्ते की भाँति हो रहा था।

'तुम्हारी इतनी हिम्मत! तुम्हारी इतनी हिम्मत!! ज़बान रोकोजी! मैं हुक्म देता हूँ!'—क्रोध से काँपते हुए, गरज कर उसने कहा।

उसे देख ज्याँ क्षण-भर के लिए स्तम्भित रह गया। क्रोध से पागल, वह कोई शब्द अथवा वाक्य खोज रहा था, जो उसके प्रतिद्वन्द्वी के हृदय पर अचूक तीर-सा लगे। क्षण-भर पश्चात् उसने धीमे; परन्तु कड़े स्वर में पिएर के मुँह को देखते हुए कहा—मैं आज से नहीं, वर्षों से जानता हूँ कि तुम मुझसे ईर्ष्या करते हो। मेरा क्रोध उभारने के लिए ही उस युवती का अपमान करने का प्रयत्न करते हो।

पिएर के मुख पर एक पैशाचिक हँसी दौड़ गई।

'आह ! मैं तुमसे ईर्ष्या करता हूँ ! मैं ! मैं !! और तुमसे ? हः हः हः !!!'

ज्याँ समझ गया कि निशाना ठीक बैठा है। वह उसी प्रकार कहता गया—हाँ तुम, तुम, तुम मुझसे ईर्ष्या करते हो ! आज से नहीं, बचपन से ! और मैडम रोज़मिली को अपने बजाय मुझसे प्रेम करते देख, तुम्हारी यह ईर्ष्याग्नि धधक उठी है।

पिएर वैसी ही हँसी से वाक्य दुहराता रहा !

'मैं ! मैं !! तुमसे ईर्ष्या करता हूँ ? उस खूसट घोड़ी के कारण ! हः हः हः !!!

ज्याँ उसी भाव से कहता गया।

'उस दिन नौका-विहार के समय तुमने मुझे उसके सामने नीचा दिखाने का प्रयत्न किया। हर मौके पर तुम ऐसा करते हो। और जब से मुझे धन मिला है, तब से तो तुम ईर्ष्या से पागल हो उठे हो। तुम्हारे ही कारण घर में उदासी फैल रही है। तुम्हारे ही कारण...'

पिएर का मुख क्रोध से अत्यन्त विकृत हो उठा था। उसने मुट्ठी कस ली। आँखें तरेर कर भाई के मुख को देखते हुए वह चिल्लाया—चुप रहो ! धन का नाम न लेना !

ज्याँ कहता गया।

'तुम्हारे रोम-रोम में ईर्ष्याग्नि धधक रही है। चाहे तुम न मानो, मैं सच कहता हूँ, तुम मुझसे ईर्ष्या करते हो। तुम मुझसे घृणा

करते हो, इसी ईर्ष्या के कारण ! तुम मुझसे झगड़ा मोल लेना चाहते हो, इसी ईर्ष्या के कारण ! अब मैं धनवान हो गया हूँ, तो तुम्हारी यह ईर्ष्याग्नि और अधिक उग्र हो उठी है। तुम्हारे ही इस विष-मय व्यवहार से माँ की यह दशा हो रही है।'

अँगीठी के पास दिवाल से टिका हुआ पिएर, मुँह बाये, आँखें फैलाये भाई को देख रहा था। उसकी आँखों में खून चढ़ आया। उसकी दशा उस समय ऐसी हो रही थी, जिसमें मनुष्य भीषण-से-भीषण चोट करने के लिए कमर कस कर तैयार हो जाता है।

क्षण-भर पश्चात् जैसे अपनी भावनाओं से स्वयं घुट कर कठिनता से साँस लेते हुए, वह चिल्लाया—बन्द करो अपनी ज़बान ! मैं कहता हूँ, खुदा के लिए अपनी ज़बान बन्द करो !

'नहीं, मैं बहुत दिनों सब्र किये रहा। अब जब तुम चोट करने से बाज़ नहीं आते, तब तुम भी इसका नतीजा देख लोगे। मैं उस युवती से प्रेम करता हूँ, यह जानकर भी तुम मेरा मज़ाक उड़ाने का प्रयत्न करते हो। हूँ, मैं समझ लूँगा ! तुम्हारे इन ज़हरीले दाँतों को तोड़ न दूँ, तो बात नहीं ! मैं बताऊँगा कि इस तरह मेरा सम्मान करो।'

'तुम्हारा सम्मान !'

'हाँ, मेरा सम्मान !'

'ह: ह: ह: ! तुम्हारा सम्मान ! जिसके कारण हमारे कुल पर धब्बा लगा !'

'क्या कहा ?...फिर तो कहो !'

'मैं कहता हूँ कि तुम्हारे ऐसे दोगले अब अपने सम्मान की चिन्ता करेंगे ?'

ज्याँ स्तम्भित रह गया। वह ऐसी लांछना सुनने के लिए स्वप्न में भी तैयार न था।

'क्या कहा ? जरा फिर से तो कहना !'

'मैं तो वही कहता हूँ, जो सब कहते हैं ! तुम उसके लड़के हो, जिसने तुम्हारे नाम वसीयत की है। कोई समझदार बेटा, इस वसीयत को स्वीकार करके अपनी माँ के माथे पर कलंक का टीका लगाने का साहस न करता !

'पिएर ! पिएर !! सोचो तो, तुम क्या कह रहे हो ? मैं क्या सुन रहा हूँ ?'

'सत्य सुन रहे हो ! जानते हो, इसी कड़वे सत्य को जान कर मैं इतना उद्वेलित हो रहा हूँ। न मुझे रात में नींद है, न दिन में चैन ! लज्जा ने मेरा मस्तक नीचा कर दिया है। मैं नहीं जानता कि दूसरे क्षण मैं क्या करूँगा !'

'पिएर, चुप रहो ! माँ बगल के कमरे मे हैं। कहीं वह सुन न लें।'

लेकिन अब पिएर ने जब कि अपने को खोल दिया है, तो पूरी

तरह से खोल देगा। जो हो, वह अब अपने दिल पर रक्खा हुआ बोझ, हल्का करके ही रहेगा ! वह भावों के तूफान में रुक-रुक कर ज्एँा के सामने अपने दिल की सम्पूर्ण बातें उगल रहा था, जैसे रात को सोते-सोते कोई विक्षिप्त अपने आप बड़बड़ाए। अब उसे माँ की लेश-मात्र भी परवाह न थी। वह ऐसे बोल रहा था जैसे माँ हैं हीं नहीं। जब उसके हृदय का मवाद बहने लगा है, तो वह उसे साफ करके ही रहेगा। पीठ पर हाथ बाँधकर, शून्य में निहारता, कमरे में इधर से उधर, उधर से इधर टहलता हुआ, वह बके चला जा रहा था।

ज्एाँ को जैसे किसी ने तोड़कर चकना चूर कर दिया हो। दरवाजा थामे वह अपराधी की भाँति निर्जीव-सा खड़ा था। उसे अनुभव हो रहा था कि माँ ने सारी बातें सुन ली हैं, नहीं तो वह कमरे के बाहर अवश्य आती। अब उसमें साहस नहीं है, इसी लिए नहीं आती।

सहसा पिएर जमीन पर पैर पटकते हुए चिल्लाया—मैं वहशी हूँ, तभी तो इस प्रकार बक-बक कर रहा हूँ।

और वह नंगे सिर घर से भाग गया।

जब बाहर के सदर दरवाजे के बन्द होने की आवाज आई, तो ज्एाँ जैसे स्वप्न से चौंक पड़ा। युगों की भाँति लगनेवाले कुछ क्षणों से वह संज्ञा-हीन खड़ा था। उसे अनुभव हो रहा था कि कुछ निर्णय करना चाहिए; पर तब भी वह हक्का-बक्का-सा विचार-

शून्य खड़ा था। वह चैन की बंशी बजानेवाले उन मनुष्यों में से था, जो सोचने-समझने का काम 'कल' पर छोड़ रखते हैं, और जब समय आता है, तब क्षण-भर के लिए स्तम्भित रह जाते हैं।

जब पिएर की इतनी चीख-चिल्लाहट के पश्चात्, एक दम सन्नाटा छा गया, तो ज्याँ को यह सन्नाटा काल-सा लगा। कमरे की छोटी-छोटी चीज तक उसे डराने-सी लगी।

तब उसने कल्पना-शक्ति का आवाहन करके कुछ सोचने-समझने का प्रयत्न किया।

अभी तक उसे किसी कठिनाई का सामना न करना पड़ा था। दुनिया में ऐसे कितने आदमी हैं, जिनकी जिन्दगी बड़ी सुगमता-पूर्वक कट जाती है। सज़ा के भय ने उसे कर्त्तव्य-परायण और परिश्रमी बनाया था। बड़ी आसानी से उसे विद्यालय से वकालत की डिगरी मिली थी। उसे चारों ओर शान्ति प्रतीत होती थी, और इसीलिए संसार की वस्तु में उसे नवीनता अथवा आकर्षण न प्रतीत होता था। वह जीवन में सदा शान्ति और आनन्द की इच्छा करता था, और अब इस विषम समस्या का सामना करके उसकी दशा उस मनुष्य के सदृश हो रही थी, जो पानी में गिर पडा है; पर तैरना नहीं जानता।

पहले उसने पिएर की बातों पर विश्वास न करके, उन्हें विस्मृत करने का प्रयत्न किया। सम्भवतः ईर्ष्या और घृणा के कारण वह झूठ बोला हो! पर क्या केवल इस द्वेष–भाव के कारण,

वह माँके चरित्र पर कलंक का टीका लगाने का साहस कर सकता है ? उसके स्वर तथा वेदना-पूर्ण आकृति की ओर से सत्य झाँक रहा था। हृदय उसके कथन को मिथ्या मानने के लिए राज़ी ही नहीं होता था।

दारुण व्यथा ने जैसे ज्याँ की रक्त-धमनियों की उष्णता हर ली थी। उसे विश्वास था कि बगल के कमरे में बैठी माँ ने सब कुछ अवश्य सुन लिया होगा।

अब उसकी क्या दशा है ? कमरे में तो एकान्त निस्तब्धता छाई है। एक निःश्वास अथवा हिलने-डुलने तक की ध्वनि नहीं सुनाई पड़ती ! सम्भवतः वह भाग गई हो ! पर कहाँ ? भागी तो नहीं; पर शायद खिड़की में से नीचे सड़क पर कूद पड़ी हो ! ज्याँ के ऊपर एक आतंक-सा छा गया। हाँ, ऐसा आतंक, जो उसे शयनागार में घसीट ले गया।

कमरे में कोई न था। मोमबत्ती का क्षीण प्रकाश वहाँ के अंधकार को भगाने का असफल प्रयत्न कर रहा था। ज्याँ दौड़ कर खिड़की तक गया; पर वह बन्द थी। तब उसने अँधेरे में चारों ओर आँखें गड़ा-गड़ा कर देखा। पलँग पर किसी मनुष्य की छाया प्रतीत हुई। वह उसकी माँ थी। तकिये में मुँह गड़ाये, कानों में अँगुली डाले वह औंधी पड़ी थी।

पहले ज्याँ ने सोचा, सम्भवतः वह बात को पी गई है। उसने उसे झझकोर कर सीधा कर दिया। वह लपट तो गई; पर

तकिया उसके मुँह से ही दबा रहा। अपनी हृदय-विदारक चीख को रोकने के लिए उसने अपने पूरे जोर से तकिये को जबड़ों में दबा रक्खा था। हाथ-पैर लकड़ी से हो रहे थे। अपनी अकथनीय वेदना को वक्षःस्थल में छिपाये रखने के लिए वह सजीव मूर्त्ति, जैसे अपनी सम्पूर्ण शक्ति खर्च करके अब निर्जीव होकर पड़ रही थी। ज्याँ कोई योगी अथवा महात्मा नहीं था! हाड़-मांस का बना वह एक पुतला था, जिसमें माँ के प्रति प्रेम और मानव-हृदय की समस्त दुर्बलताएँ भरी थीं। पिएर के मुँह से सुनी सारी बातें विस्मृत हो गई थीं। करुणा से उसका हृदय पानी-पानी हो गया था।

माँ के मुँह से तकिया हटाने के प्रयत्न में असफल हो, ज्याँ उसे झझकोरता हुआ, हृदय-विदारक स्वर में चिल्ला रहा था—माँ! माँ!! मेरी प्यारी माँ !!! जरा इधर तो देखो! माँ! मेरी अच्छी माँ!!

माँ मूक रही; पर पुत्र की इस करुण चीत्कार ने उसे विचलित कर दिया था। उसका रोम-रोम केले के पत्ते की भाँति थर-थर काँप रहा था।

'माँ! माँ! मेरी तो सुनो। मैं जानता हूँ कि यह बात असत्य है! मैं जानता हूँ कि यह बात असत्य है!'

माँ के हृदय की दृढ़ता शिथिल पड़ गई। उसकी कसी अँगुलियाँ ढीली पड़ गईं। दाँत खुल गये। तकिया मुँह से अलग हो गया।

वह बिलकुल पीली पड़ गई थी। ऐसा मालूम पड़ता था कि उसके शरीर में रक्त है ही नहीं! मुकुलित पलकों से टप-टप आँसू टपक रहे थे। ज्एाँ ने प्यार से माँ की कमर में हाथ डालकर, उसकी भीगी पलकों को चूमते हुए कहा—रोओ न माँ! मैं जानता हूँ कि वह बात असत्य है। रोओ मत!'

उसने अपने को छुड़ाते हुए आँखें पोंछीं, और फिर अपने स्त्री-हृदय का साहस बटोर कर क्षीण-स्वर में कहा—नहीं बेटे, यह सत्य है!

क्षण-भर के लिए वे दोनों स्तब्ध रह गये। गला साफ करते हुए तथा भावनाओं के तूफान के कारण दम घुट-सा जाने पर, साँस लेने का प्रयत्न करते हुए, माँ ने फिर कहा—बेटे, वह नितान्त सत्य है। झूठ क्यों बोलूँ, वह बात सत्य है! अगर मैं नहीं करूँ, तो और पाप होगा!

सन्तापों की जीवित-समाधि, माँ के मुख पर कुछ ऐसे भाव थे, कि ज्एाँ किसी अनिष्ट की कल्पना कर भय से काँप उठा। माँ के पैरों पर गिर कर बोला—हिश, चुप रहो माँ!

माँ का मुख पत्थर-सा हो रहा था। न मालूम उसमें कौन-सी भावना झाँक रही थी, कि ज्एाँ विचलित हो उठा।

'अच्छा, अब चलती हूँ बेटे! गुडबाई!'

कह कर माँ द्वार की ओर बढ़ी।

उसने दौड़ कर उसे पकड़ते हुए कहा—माँ, यह तुम क्या सोच रही हो! तुम कहाँ जाती हो?

'स्वयं नहीं जानती कहाँ जाऊँगी ! अब मेरा इस दुनिया में कोई नहीं ! अब मैं अकेली हूँ !'

उसने छूटने का प्रयत्न किया; पर ज्यों उसे कस कर पकड़े रहा। अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए उसे उस समय कोई शब्द ही न मिल रहे थे। पागलों की भाँति वह धीमें स्वर में रुक-रुक कर कह रहा था—माँ !—माँ !—माँ !

और माँ अपने को छुड़ाने का प्रयत्न कर रही थी।

'नहीं, अब मैं तुम्हारी माँ नहीं हूँ। मैं तुम्हारी कोई नहीं हूँ, कोई नहीं। अब तुम्हारे न बाप है, न माँ !...मुझे छोड़ दो ! नादान बच्चे, मुझे छोड़ दो ! गुडबाई !

न मालूम किस भावना ने ज्यों से कह दिया था कि अगर उसने इस समय माँ को जाने दिया, तो बस जाने दिया। वह उसे फिर कभी न देख सकेगा ! उसने ज़बरदस्ती गोद में उठा, उसे पलँग पर बिठा दिया। और फिर स्वयं जमीन पर घुटनों के बल बैठ, माँ की गोद में अपना सिर रखते हुए उसने कहा—तुम इस जगह से नहीं जा सकतीं, माँ ! मैं तुम्हें प्यार करता हूँ। मैं तुम्हें न जाने दूँगा। मैं तुम्हें प्यार करता हूँ, तुम मेरी हो, मैं तुम्हें कभी न जाने दूँगा।

माँ ने निराशस्वर में कहा—नहीं, मेरे बेटे, यह असम्भव है। आज तुम मुझे रोक रहे हो, कल घर से निकालने के लिए तैयार हो जाओगे। तुम मुझे कभी नहीं क्षमा कर सकते !

उसने उत्तर दिया—मैं! मैं! तुम यह कैसे कहती हो?

उसके इन शब्दों में, उसका स्वच्छ, सरल, ममता से पूर्ण हृदय घुला था। माँ ने पुलकित हो, उसका सिर अपने वक्षस्थल में दबा लिया, और फिर ममता के आवेश में उसके मुँह पर चुम्बनों की झड़ी लगा दी।

फिर, किसी छोटे बालक की भाँति उसे अपने पार्श्व में बैठा, वात्सल्य-पूर्ण हाथों से उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा—ज्यों, मेरे प्यारे ज्यों! तुम मुझे कभी नहीं क्षमा कर सकते। सम्भवतः तुम अभी स्वयं धोखे में हो। सोचो तो, आज तुमने मुझे क्षमा कर दिया और इस क्षमा ने मेरी जान बचाली; पर कल मेरा मुँह देखना भी पसन्द न करोगे।

ज्यों, माँ की कमर में हाथ डालकर, उसके कंधों पर सिर रखता हुआ बोला—ऐसा न कहो, माँ!

'नहीं बेटे, मैं सत्य कहती हूँ। मैं स्वयं नहीं जानती कि कहाँ जाऊँगी; पर मुझे जाना ही होगा! अब मैं तुम्हें कभी आँखें उठा कर भरपूर नज़र देखने का साहस तक नहीं कर सकती।'

'नहीं माँ, तुम हरगिज़ नहीं जा सकतीं! मैं तुम्हें प्यार करता हूँ, तुम मेरी माँ हो, मैं तुम्हें न जाने दूँगा।'

'नहीं बच्चे, ऐसा न कहो!'

'नहीं माँ, तुम्हें रहना होगा, रहना होगा। मैं तुम्हें कभी न जाने दूँगा।

'नहीं बच्चे, यह असम्भव है। मेरी उपस्थिति सब के लिए दुखदाई होगी! अभी तो तुम ऐसा कह रहे हो; पर जब तुम्हारे विचार भी पिएर के ऐसे हो जायँगे, तो तुम मेरी छाया तक से घृणा करने लगोगे!'

'मैं किसी दशा में तुम्हें नहीं जाने दूँगा। इस दुनिया में तुम्हारे सिवाय मेरा है कौन?'

'पर सोचो तो बेटे, हम लोगों के बीच अब एक दीवार खड़ी है। अब तुम मुझे कभी प्रतिष्ठा की नजरों से नहीं देख सकते!'

'नहीं माँ! ऐसा नहीं हो सकता!'

'हाँ, ऐसा ही होगा बेटे! मैं तुम्हारे ग़रीब भाई के हृदय को अच्छी तरह जानती हूँ। जिस दिन से उसकी आँखों में संदेह झाँकने लगा था, उसी दिन से मैं उसकी दारुण व्यथा का अनुभव कर रही हूँ। अब उसकी पद-ध्वनि सुनते ही, मेरा हृदय इतने ज़ोरों से धड़कने लगता है, जैसे वह विदीर्ण ही होकर रहेगा। अब तक मैं तुम्हें अपना समझती थी; पर अब वह आशा भी गई। सोचो तो ज्याँ, अब मैं इस घर में किस प्रकार रह सकती हूँ?'

'बड़े आराम से रह सकती हो! मैं तुम्हें इतना प्यार करूँगा कि तुम इन बातों को भूल जाओगी।'

'यह सम्भव नहीं!'

'यह सम्भव है!'

'मैं कैसे विश्वास करूँ कि तुम आज की बातों को भूल जाओगे ?'

'मैं विश्वास दिलाता हूँ कि भूल जाऊँगा !'

'नहीं ज्याँ, अभी तुम उन्माद में हो ! तुम इस बात को कभी नहीं भूल सकते !'

'माँ' !—ज्याँ ने उत्तेजित होकर कहा—'अगर तुम चली गईं, तो जानती हो मैं क्या करूँगा, जानती हो...?'

ज्याँ के मुख पर एक भयंकरता खेलने लगी थी। माँ उसकी ओर विस्फुरित नेत्रों से देखती रह गई। दूसरे क्षण उच्छ्वसित हृदय के आवेश में उसने उसका मुँह अपने वक्षस्थल में दबा लिया। ज्याँ कहता गया।

'मैं तुम्हें हृदय से प्यार करता हूँ। तुम मेरे इस प्यार की कल्पना तक नहीं कर सकतीं। तुम मुझसे वायदा करो कि मुझे छोड़ कर न जाओगी ! बोलो...वायदा करो माँ !'

माँ के मुख पर एक फीकी मुस्कान खेल गई। ज्याँ के मुँह को दोनों हाथों से थाम, उसके मुँह को देख जैसे उसे पढ़ने का प्रयत्न करते हुए माँ ने कहा—अच्छा बेटे, अब हमें शान्त हो जाना चाहिए। पहले तुम मेरी बात सुनो ! अगर मैंने तुम्हारे मुँह से कभी वह बात सुनी, जो आज महीने भर से तुम्हारे भाई के मुख से सुन रही हूँ, तो फिर तुम मेरी सूरत कभी न देख सकोगे। तब मेरे मन में जो आयेगा, करूँगी।'

'मैं कसम खाता हूँ कि...'

'पहले मुझे कह लेने दो। जिस क्षण से तुम्हारे भाई की आँखों में संदेह का सूत्रपात हुआ है, मैं अकथनीय वेदना भोग रही हूँ। मेरा एक-एक रोआँ-रोआँ कलप...'

उसके स्वर में कुछ ऐसी व्यथा घुली थी कि ज्याँ की आँखों में आँसू आ गये।

वह कहती गई—'हाँ, देखो रोओ धोओ मत! पहले मुझे कह लेने दो।...हाँ, मैं चाहती हूँ कि तुम्हें अँधेरे में न रक्खूँ। तुम्हारे सामने अपना हृदय खोल कर रख दूँ।...तुम चाहते हो कि मैं रहूँ, जिससे तुम्हारे दिल में हर समय यह भावना बनी रहे कि मेरे भी माँ है! तुम अपनी माँ को देख सको, प्यार कर सको!...अगर तुम्हें ऐसा करना है, तो पहले मेरे सारे पापों को क्षमा करना होगा। तुम्हें इतना साहस बटोरना होगा कि किसी के सम्मुख, बिना झेंपे, बिना शर्माये कह सको कि मैं रोलेन्ड का पुत्र नहीं हूँ। मैंने अब तक बहुत सहा; पर अब एक क्षण के लिए भी नहीं सहन कर सकती। यह एक दिन की बात नहीं है कि हो गई, वर्षों की बात है। अगर तुम्हें मुझे अपनी माँ की तरह रखना है, तो तुम्हें अपने दिल में इस विचार को भी स्थान देना होगा कि यह तुम्हारे पिता की प्रेमिका है। वास्तव में, मैं उनकी एक पत्नी से बढ़ कर थी। मुझे यह स्वीकार करने में कोई लज्जा नहीं, कोई पश्चात्ताप नहीं कि मैंने तुम्हारे पिता

को अपने तन-मन से प्यार किया। और मैं उसे सदा प्यार करूँगी! वह मेरा जीवन-सर्वस्व था, वह मेरी हँसी था, मेरी आशा था, मेरा सुख था, मेरा सब कुछ था। मैं ईश्वर को साक्षी करके कहती हूँ कि अगर मेरा उससे सम्बन्ध न हुआ होता, तो मैं अपना जीवन शून्य समझती। मैंने इस संसार में तुम दोनों लड़कों और उसके सिवाय कुछ नहीं पाया। मैं समझती हूँ कि ईश्वर ने मुझे तुम्हारे पिता के ही लिए बनाया था। मैं उसकी आँखों में अपनी दुनिया समझती थी। और जब एक दिन मैंने देखा कि उसका प्रेम घट रहा है, तो ...ओह! तुम नहीं कल्पना कर सकते, मैं उस दिन किस प्रकार सिसक-सिसक कर रोई थी। उस दिन मेरे लिए संसार सूना हो गया था। ...फिर रोलेन्ड के साथ मैं हावेर चली आई। वह निर्दयी अपने पत्रों में निरन्तर लिखता रहा कि आऊँगा; परन्तु न आया, न आया। मरते समय उसने अवश्य मुझे याद किया होगा, तभी तो अपनी वसीयत तुम्हारे नाम लिखी है। मैं सदा उसे प्रेम करूँगी, तुम्हें प्रेम करूँगी; इसलिए कि तुम उसके लड़के हो, उसके अंश हो। मैं इस सत्य को कभी अस्वीकार नहीं कर सकती। अगर तुम्हें मुझे रखना है, तो तुम्हें बिना किसी हिचकिचाहट के यह भी स्वीकार करना होगा कि तुम उसके लड़के हो। और हम लोग जब-तब एक साथ बैठ कर उसकी याद करेंगे, उसके सम्बन्ध में बातचीत करेंगे।...अगर तुम्हें यह सब स्वीकार,

है, तो मैं इस घर में रह सकती हूँ। हाँ, अब अपना निर्णय दो बेटे !

ज्एाँ ने सरलता से उत्तर दिया—तुम रहो, माँ !

तब माँ ने उसे अपने बाहुपाश में आबद्ध करके उसके गालों को अपने आँसुओं से भिगोते हुए कहा—अच्छा, तो फिर पिएर का क्या होगा ?

ज्एाँ बुदबुदाया।

'कोई उपाय सोचा जायेगा। अब तुम उसके साथ तो रह नहीं सकतीं।'

पिएर का विचार आते ही माँ ने भयभीत हो कर कहा—नहीं, मैं उसके साथ कभी नहीं रह सकती।

और सहसा उसने विचारों के प्रवाह से डर कर ज्एाँ के वक्षस्थल में अपना मुँह छिपाते हुए कहा—बच्चे, मुझे उससे बचाओ। मुझे उससे बचाओ ! कुछ सोचो। मैं नहीं कह सकती, पर तब भी तुम कुछ सोचो। मुझे बचाओ !

'माँ, सब्र करो। मैं सोचूँगा !'

'अभी सोचो, इसी समय ! मुझे अकेला मत छोड़ो। मैं उससे बहुत डरती हूँ, बहुत !'

'हाँ माँ, मैं वायदा करता हूँ कि कोई उपाय सोच निकालूँगा।'

'अभी, इसी क्षण ! तुम कल्पना नहीं कर सकते कि मैं उससे कितनी डरती हूँ।'

ज्युएँ सोच-विचार में पड़ गया। भयभीत म का समझाने के लिए उसे बड़ी देर तक बहस करनी पड़ी !

माँ कहती रही—अच्छा, तुम आज मुझे अपने घर में रहने दो। कल प्रातःकाल रोलैन्ड से कहलवा भेजना कि बीमार पड़ गई थी।

'तुम्हारा कहना ठीक है; पर पिएर अभी तुम्हें छोड़ कर गया है। उठो, साहस करो। मैं वायदा करता हूँ कि कल तक कोई उपाय सोच निकालूँगा। मैं कल नौ बजे तुम्हारे पास हूँगा। लो, हैट पहनो, चलो तुम्हें घर तक पहुँचा आऊँ।'

'अच्छा, जैसा कहो !'

और उसने उठने का प्रयत्न किया, पर उठ न सकी। इस भीषण आघात ने उसे नितान्त अशक्त कर दिया था।

तब ज्युएँ ने उसे ताकत की दवा पिलाई। और फिर सहारा देकर बाहर ले चला।

घंटा-घर ने टन-टन-टन तीन बजाये।

घर पहुँचते ही लूसी ने शीघ्रता से कपड़े उतारे और बिछौने में घुस रही। रोलैन्ड नाक बजा रहा था। घर-भर में केवल पिएर जाग रहा था।

८

माँ को सड़क तक पहुँचाकर जब ज्एाँ घर लौटा, तो वह निर्जीव-सा सोफे पर गिर पड़ा। पिएर की भयंकर आकृति विषाद और वेदना से कुचले हृदय के उस उग्र रूप ने जैसे उसकी रक्त-धमनियों की सारी उष्णता खींच ली थी। उसे अपना अंग-अंग टूटता प्रतीत हुआ। उठकर बिछौने तक जाना तो दूर, अँगुली तक हिलाने की शक्ति उसमें न रह गई थी। पिएर के विपरीत, उसे माँ पर किंचित मात्र भी क्रोध न आ रहा था। वह इस घटना को एक होनहार कह कर, मन से टाल देना चाहता था।

आन्दोलित जल के सदृश उसका मन कुछ देर पश्चात् शान्त हो गया। तब उसने सारी परिस्थितियों पर एक दृष्टिपात किया। वसीयत के सम्बन्ध का रहस्य, यदि उसे और किसी अवसर पर ज्ञात होता, तो सम्भवतः उसके हृदय पर सांघातिक चोट लगती, वह अपनी माँ से शायद घृणा करने लगता; पर ईर्ष्या और अन्तर्वेदना से उफनाते भाई के हृदय की उगली हुई

इन बातों ने जैसे उसके मन में उठने वाली सारी भावनाओं को जला कर राख कर दिया था। वह विचार-शून्य हो गया था। जिस समय संज्ञा लौटी भी, तो उसके द्रवित हृदय में माँ के प्रति ममता का स्रोत उमड़ रहा था, जिसके प्रवाह ने माँ के व्यभि-चार का हाल ज्ञात होने पर एक आदर्शवादी पुत्र के मन में उठने वाली भावनाओं को धोकर, उनका अस्तित्व ही मिटा दिया। शान्ति का पुजारी ज्यों, अपने हृदय के विद्रोह के डर से अब इन बीती बातों को मन में दुहराना तक नहीं चाहता था। कायर हृदय को बस अब एक उपाय नजर आता था; वर्त्तमान बंधन को काट कर, यह घटना अंधकार में ढकेल दी जाय। वह पिएर से अधिक झगड़ा मोल लेने में हिचकता था। खैर, उसके पास तो अब अलग घर है; पर माँ का क्या प्रबन्ध किया जाय! उसने न मालूम कितनी स्कीमें सोचीं; पर उनमें से एक भी उसे सन्तोष न दे सकी।

सहसा एक भावना उसके हृदय में हरहरा उठी—यह धन जो उसे आकस्मिक मिला है, कोई योग्य-पुरुष स्वीकार करेगा अथवा नहीं? नहीं!—उसकी अन्तरात्मा ने उत्तर दिया, और उसने उसे गरीबों की सहायतार्थ दान कर देने का निश्चय कर लिया। वह इन सब बहुमूल्य चीजों को बेच कर, कठिन परिश्रम से अपना पेट भरेगा। इस विचार ने उसके हृदय को झझकोर डाला। वह इतना विचलित हो उठा कि खिड़की के निकट जाकर शीतल पवन से

अपने को ताजा करने की आवश्यकता उसे अनुभव हुई। खिड़की के सहारे खड़ा हो, वह मोमबत्ती की काँपती लौ को देखने लगा। वह गरीब था, और फिर गरीब हो जायगा! तो इसमे डरने की कौन बात? सड़क पर एक दुबली-पतली रमणी को जाते देख, सहसा उसे मैडम रोज़मिली का ख़याल आ गया। कल्पनाओं के उस सुन्दर प्रासाद को चूर-चूर होते देख, उसे दुःख हुआ। उसे एक नवीन जीवन धारण करना होगा! विवाह का स्वप्न त्याग देना पड़ेगा; पर उस युवती से हाँ कह कर, क्या अब ऐसा करना उचित होगा? यह जानकर कि वह अमीर है, मैडम रोज़मिली ने सहर्ष प्रस्ताव स्वीकार कर लिया था। अब वह उस निर्धन को स्वीकार करने में हिचकेगी; पर क्या उसकी लालसाओं की हत्या करना उचित है? अच्छा, अगर अभी धन को स्वीकार कर लूँ, और फिर भविष्य में उसे गरीबों की सहायतार्थ दान कर दूँ तो...?

और उसके हृदय-मन्दिर में, जहाँ स्वार्थ, न्याय का जामा पहने तर्क-वितर्क कर रहा था, कितने ही विचार आये।

वह फिर सोफे पर आ बैठा। वह अपनी अन्तरात्मा की 'नहीं' को समझाने के लिए कोई उत्तर सोच रहा था। न मालूम कितनी बार उसने स्वगत यह कहा—चूँकि मैं इस बातको स्वीकार करता हूँ, कि मैं मैरीकल का पुत्र हूँ, तो फिर उसकी वसीयत स्वीकार करने में कोई बुराई नहीं; पर यह उत्तर उसकी आत्मा को संतोष न दे सका।

फिर विचार आया—चूँकि मैं उस पुरुष का पुत्र नहीं हू, जिसे मैं अब तक अपना पिता समझता था; इसलिए मुझे उसका एक पैसा न लेना चाहिए, न उसके जीवनकाल में, न उसकी मृत्यु के उपरान्त ! उसका सब धन पिएर को ही मिलना चाहिए।

और इस विचार ने उसे कुछ सान्त्वना दी। जब वह रोलेन्ड के धन का कोई भाग न लेगा, तो वह मैरीकल की वसीयत स्वीकार करने को वाध्य है। वह दोनो को तो अस्वीकार नहीं कर सकता; क्यों कि ऐसा करके वह दर-दर का भिखारी तो बनेगा नहीं !

यह विषम समस्या हल करके वह फिर पिएर को कुटुम्ब से अलग करने का कोई उपाय सोचने लगा। सहसा दूर से आती स्टीमर की सीटी ने उसके मन में एक नवीन आयोजना जागृत कर दी। वह अपनी स्कीम पर प्रसन्नता से उछल पड़ा।

तब वह पलंग पर जा लेटा। प्रातःकाल आँखें खुलते ही नौकरानी को घर के दो चार काम बताकर, वह पुराने मकान गया। माँ उसकी प्रतीक्षा कर रही थी।

'तुम्हारे बिना मैं कमरे के बाहर निकलने का साहस न करती !'—उसने कहा।

मिनट-भर पश्चात् सीढ़ियों पर रोलेन्ड की आवाज़ सुनाई पड़ी—है क्या, आज घर में खाने को नहीं है ?

कोई उत्तर न मिलने पर वह फिर चिल्ला उठा—जोसिफिन ! कहाँ मर गई !

नीचे से एक कोमल-स्वर में उत्तर आया—हाँ, मानशोयर, कहिए क्या बात है ?

'तुम्हारी मालकिन कहाँ हैं ?'

'ऊपर अपने कमरे में ! मानशोयर ज्एँ भी वहीं हैं !'

तब ऊपर कमरे की ओर देखता हुआ वह चिल्लाया—लूसी !

मैडम रोलेन्ड ने द्वार खोल, सिर बाहर निकाल कर कहा—क्या है प्रियतम !

'उहँ, गोली मारो ! क्या आज घर में कुछ खाने को नहीं ?'

'ठहरो प्रियतम, मैं आती हूँ !'

और वह नीचे गई। ज्एँ भी उसके पीछे-पीछे पहुँचा। उसे देखते ही रोलेन्ड ने साश्चर्य कहा—अरे, तुम आ गये ! यह घर छोड़ने का मन नहीं चाहता, क्यों ?

नहीं पिताजी, आज माँ से कुछ आवश्यक बातें करनी थीं !'

'जब ज्एँ को अपने हाथों में वात्सल्य प्रेम से पुलकित पिता के हाथों का अनुभव हुआ, तो वह काँप-सा उठा। ओह, यह उसका पिता नहीं है ! इन लोगों से सम्बन्ध-विच्छेद करना होगा !

मैडम रोलेन्ड ने कहा—पिएर अभी तक नहीं आया ?

पिता ने कंधे सिकोड़ते हुए कहा—वह हमेशा देर से आता है ! कोई हर्ज नहीं; अगर हम उसके बिना जल-पान आरम्भ कर दें !

तब माँ ने ज्एाँ से कहा—बेटे, जरा कष्ट तो होगा, उसे बुला लाओ ! हम उसकी प्रतीक्षा न करके, उसकी कोमल भावनाओं पर प्रहार करते हैं।

'अच्छा, बुलाये लाता हूँ !'

और वह संकुचित-सा चला गया, मानो कोई आदमी द्वन्द के लिए जा रहा हो और डर रहा हो। उसके द्वार पर हाथ रखते ही, पिएर का उत्तर आया—अन्दर आइए !

वह भीतर गया। मेज पर झुका हुआ, पिएर कुछ लिख रहा था गुडमार्निङ्ग !—ज्एाँ ने कहा।

पिएर ने उठते हुए उत्तर दिया—गुडमार्निङ्ग ! और दोनों में कर-मर्दन हुआ।

जैसे कुछ हुआ ही नहीं !

'क्या आप जल-पान करने चलेंगे ?'

'देखते हो, मुझे अभी कितना काम करना है !'—पिएर ने शान्त स्वर में सरलता से उत्तर दिया।

'वहाँ, सब लोग आपकी प्रतीक्षा में हैं !'

'अच्छा ! माँ भी हैं ?'

'हाँ, उन्होंने ही तो आपको बुलाने के लिए मुझे भेजा है !'

'अच्छा, तब मैं चलता हूँ !'

भोजनालय के द्वार पर पहुँचकर पहले तो वह हिचकिचाया; परन्तु फिर वह अन्दर चला गया। गोलाकार मेज़ के आमने-

सामने श्रीमती और श्रीयुत रोलेन्ड बैठे थे। वह सीधा माँ के पास गया, और सदा की भाँति उसके सन्मुख मस्तक नवा दिया। माँ के ओठों को मस्तक के निकट आने का तो अनुभव हुआ; पर सम्भवतः उन्होंने उसे स्पर्श न किया। जब वह कुर्सी पर बैठा, तो उसका हृदय धड़क रहा था। उसे आश्चर्य था, कि क्या बात हुई, जो यह लोग इतने शान्त हैं!

ज्याँ बड़े प्रेम से उसे माँ अथवा अच्छी माँ कह कर सम्बोधन कर रहा था। माँ का गिलास खाली होते ही, वह बड़ी तत्परता से फिर मदिरा से भर देता, उसकी थाली में कोई चीज़ घट जाती, तो उसी क्षण सरका कर रख देता। उसके प्रत्येक व्यवहार में अनुराग झलक रहा था।

तब पिएर ने सोचा कि सम्भवतः कल इन दोनों ने रो-रो कर अपने दिल की व्यथा धो डाली है; पर वह उनकी मनोभावनाओं को अच्छी तरह समझ न पाया! ज्याँ माँ को अपराधी समझता है, या उसे?

और फिर अपने उग्र हो उठने पर उसे पश्चाताप हुआ। उसका गला भर आया। उससे कुछ खाया न गया। वह चुपचाप बैठा रहा।

घर से भाग जाने की इच्छा, उसके अन्दर उत्तरोत्तर प्रबल हो रही थी। इस घर में अब उसे शान्ति नहीं मिल सकती। उसके कारण उन लोगों को दुःख होगा, और उसे उन लोगों के कारण!

ज्यॉं पिता से बातें कर रहा था। पहले तो पिएर ने उस पर कोई ध्यान न दिया; पर जब उसने ज्यॉं को किसी बात पर ज़ोर दे-दे कर कहते सुना, तो उसका ध्यान उधर आकर्षित हुआ।

ज्यॉं कह रहा था—इस साल के बने जहाजों में सबसे सुन्दर वही है। अगले महीने वह समुद्र पर निकलेगा!

रोलेन्ड आश्चर्य से बोला—अच्छा! मैं समझता था कि वह जलयान गर्मियों के पहले कभी नहीं तैयार हो सकता!

'कम्पनी वालों ने बहुत शीघ्रता से काम बनवाया, आज मैं उसके एक डाइरेक्टर से मिला था!

'अच्छा, किससे?'

'मानशोयर मारकेन्ड से! वह चेयरमैन का मित्र है।'

'ओह, तुम उसे जानते हो?'

'हॉं. मैंने आज उससे...'

रोलेन्ड बीच ही में बोल पड़ा—तब तो मुझे उससे एक पास दिलवाओ! मैं उस पर घूमने जाया करूँगा।

'अच्छा, यह कोई बड़ी बात नहीं।'

और तब साहस कर, उसने अपनी स्कीम प्रकट की।

विषय तक पहुँचने के लिए, भूमिका बाँधते हुए उसने इस प्रकार कहा—जहाजों पर बड़े आनन्द से दिन कटते हैं। जिन्दगी तो बस समुद्र पर की कटती है; पर वहाँ भी बड़ी विभिन्नता रहती है। हज़ारों प्रकार के यात्रियों से भेंट

होती है। एक-से-एक सुन्दरियाँ देखने में आती हैं। फिर रुपये का सारा खेल है। वहाँ केवल कैप्टन को लगभग पच्चीस हज़ार फ्रांक प्रति वर्ष मिलते हैं।

रोलेन्ड प्रसन्नता से उछल पड़ा।

ज्यों कहता गया—खजांची को लगभग दस हज़ार मिलते हैं, और डाक्टर को पांच हज़ार! यह पाँच हज़ार तो समझिए जेब-खर्च के लिए मिलते हैं; नौकर, घर, खाना, सब कुछ फ्री रहता है।

पिएर ने आँखें उठा कर भाई को देखा। वह उसका आशय समझ गया था। क्षण-भर पश्चात् हिचकिचाते हुए उसने कहा—पर वहाँ डाक्टर बन कर जाना सरल नहीं है।

'है भी, और नहीं भी। यह सब तो सिफारिश पर निर्भर है।'

पिएर नतमस्तक होकर कुछ सोचने लगा। अगर वहाँ उसकी पहुँच हो सके, तो क्या अच्छा हो! वह फिर स्वतंत्र हो जायेगा। तब वह माता-पिता पर निर्भर न रहेगा। दो ही दिन पहले उसे अपनी घड़ी बेचनी पड़ी थी, इस कारण कि उसके जेब खर्च को एक पैसा भी न था।

कुछ देर पश्चात् हिचकिचाते हुए उसने कहा—अगर मुझे वहाँ जगह मिल जाय, तो मैं बड़ा प्रसन्न हूँगा।

रौलेन्ड ने कहा—और तुम्हारी पुरानी स्कीम का क्या हुआ?

पिएर ने धीमे स्वर में उत्तर दिया—मानव-जीवन में कितनी बार आशाएँ बँधती हैं, और बिखर जाती हैं। यह कार्य बहुत सरल और बिना किसी झंझट का प्रतीत होता है।

रोलेन्ड के दिल में बात जम गई।

'कहते तो ठीक हो। लूसी, तुम्हारा क्या विचार है ?'—उसने कहा।

उसने क्षीण स्वर में उत्तर दिया—पिएर का कहना ठीक है।

तब ज्याँ ने कहा—देखो, मैं मानशोयर मारकेन्ड से सिफ़ारिस के लिए कहूँगा।

पिएर ने कहा—मैं भी अपने कालेज के प्रोफ़ेसरों से सिफारिश करवाऊँगा। अगर मारकेन्ड ने सहयोग दिया, तो आशा है, सफलता अवश्य मिलेगी।

'मेरा भी ऐसा ही विश्वास है।'—ज्याँ ने कहा।

पिएर उसी समय अपने प्रोफेसरों को पत्र लिखने के लिए अपने कमरे में चला गया।

तब ज्याँ ने माँ से पूछा—अच्छा माँ, अब तुम क्या करोगी ?

'कुछ नहीं, मैं नहीं जानती कि क्या करूँ ?'

'अच्छा, आओ, मैडम रोज़मिली के घर चलें !'

जब वह दोनों सड़क पर आ गये, तो ज्याँ उसे सहारा दे कर ले चला। कुछ देर चुप रहने के पश्चात् ज्याँ ने कहा—देखो, पिएर तो जाने के लिए प्रसन्नता से राजी हो गया।

माँ धीमें स्वर में बड़बड़ाई—अभागा लड़का !...

ज्याँ ने कहा—वह अभागा क्यों ? जहाज़ पर मौज से रहेगा !

'नहीं, मैं कुछ और सोच रही थी !'—माँ ने कहा।

और क्षण-भर विचार-धारा में बहते हुए, उसने फिर व्यथित स्वर में कहा—आह ! जीवन में क्या है ? अगर भाग्यवश सुख मिला भी, तो फिर पीछे उसके लिए पश्चात्ताप करना पड़ता है !...

ज्याँ ने धीमें स्वर में कहा—शान्त हो माँ !

'अच्छा !'—कह कर माँ चुप हो गई। वह अब अपने पतन का कारण रोलेन्ड को समझ रही थी। अगर वह इतना शुष्क न होता, तो मैं क्यों मैरीकल की ओर आकृष्ट होती ?—एक लड़का जहाज पर जिन्दगी बसर करेगा, और एक...!

उसकी आँखों में व्यथा के अश्रुकण चमकने लगे।

ज्याँ भी विचारों में निमग्न था। मनुष्य क्या सोचता और क्या होता है। एक मिनट में जीवन क्या से क्या हो गया। उसे न अपनी माँ पर क्रोध था, न पिता पर ! वह अब पिएर को सहानुभूति की दृष्टि से देख रहा था ! उसकी दारुण दशा का अवलोकन करके उसके मन में दया उपज रही थी।

मैडम रोज़मिली का मकान सड़क पर ही था। उन दोनों को आते देख, वह उनका स्वागत करने के लिए द्वार तक दौड़ी आई। उसने अतिथियों को अपने ड्राइंग रूम में दाखिल किया।

ड्राइंगरूम फूलदार कागज तथा स्प्रिंगदार कुर्सियों से सजा था। दीवार पर समुद्र-सम्बन्धी तस्वीरें टँगी थीं। एक तसवीर में मल्लाह की पत्नी समुद्र के किनारे खड़ी, नौका-आरूढ़ पति से विदा ले रही है। दूसरी तसवीर में, वह नौका क्षितिज के निकट पहुँच गई है, और पत्नी घुटनों के बल अपने पति के मंगल की कामना कर रही है। तीसरी तसवीर में, एक सुन्दर रमणी सजल नयनों से, घाट से दूर होते हुए जहाज को देख रही थी। ऐसा प्रतीत होता था कि उसके मुँह से एक हृदय-विदारक चीख निकलने को है; पर वह चीख गले तक आते-आते रुक गई है। वह किसके लिए व्याकुल हो रही है? चौथी तस्वीर में वह रमणी अपने घर की खिड़की पर बैठी समुद्र की ओर देख रही है। बिल्कुल पाषाण-प्रतिमा प्रतीत होती है। शरीर निश्चल, आँखें क्षितिज के निकट दिखाई पड़ते जहाज में बँधीं! पैरों के पास एक खुला पत्र पड़ा है। ओह! किस निराशा ने उसकी यह दशा की है?

आगन्तुक इन चारों तस्वीरों को देखकर, करुणा से ओत-प्रोत हो जाते थे। तस्वीरें इतनी सुन्दर छपी थीं कि वे सजीव प्रतीत होती थीं। कुर्सियाँ भी इस प्रकार रखी थीं कि वे तसवीरें सामने दिखाई पड़ें!

मैडम रोलेन्ड ने कुर्सी का रुख बदल कर उधर पीठ कर ली।

'आज तुम प्रातःकाल आईं नहीं?'—उसने मैडम रोज़मिली से पूछा।

'सच पूछो, तो बहुत थकी हूँ।'

और उसने कल की आनन्द-यात्रा के लिए माँ तथा ज्याँ को धन्यवाद दिया।

'मेरी इच्छा है, कि एक बार फिर ऐसे ही कहीं चला जाय। उसने अपना वक्तव्य समाप्त करते हुए कहा।

ज्याँ ने कहा—पर अबकी मैं तो जाऊँगा नहीं।

'क्यों ?'—मैडम रोज़मिली ने पूछा।

'बेकार जा कर क्या करूँ ? तबकी तो एक पत्नी की बोहनी हो गई; पर अबकी...'

और उसकी हँसती आँखें, मैडम रोजमिली के मुख के भावों को पढ़ने का प्रयत्न करने लगीं।

वह लज्जा से लाल हो गई थी। उसकी आँखें प्रसन्नता से मुस्करा रही थीं।'

क्षण-भर पश्चात् ज्याँ ने मुस्काराते हुए कहा—हाँ, तो हम लोग यह पूछने के लिए आये हैं कि विवाह की तिथि कब निश्चित् की जाय ?

'जब आप लोग उचित समझें। माँ से पूछो !'

मैडम रोलेन्ड के मुख पर एक फीकी हँसी दौड़ गई।

'मैं ! मैं कुछ नहीं कह सकती ! मैं हृदय से तुम्हारी आभारी हूँ। तुम मेरे ज्याँ का जीवन सुखद बनाओगी।'

मैडम रोज़मिली ने उठ कर पुलकित मन से माँ के मुख

पर एक चुम्बन अंकित करके अपनी प्रसन्नता प्रकट की। मैडम रोलेन्ड के हृदय में वात्सल्य-प्रेम का आविर्भाव हो रहा था। एक जवान लड़के को खो कर, अब उसने यह एक जवान लड़की पाई थी।

फिर, बड़ी देर तक विवाह के विषय में बातचीत होती रही। मैडम रोजमिली ने कहा—आप लोगों ने फादर रोलेन्ड से तो अनुमति ले ही ली होगी।

माँ-बेटे दोनों लजा-से गये। माँ ने कहा—नहीं, इसकी कोई आवश्यकता नहीं! और तब हिचकिचाते हुए उसने फिर कहा—हम लोग कोई काम उनसे पूछ कर नहीं करते। जब समय आता है, तो कह भर देते हैं कि यह काम करने जा रहे हैं।

मैडम रोज़मिली को कोई आश्चर्य न हुआ। वह मुस्कराती रही।

जब वे दोनों लौटने लगे, तो मार्ग में मैडम रोलेन्ड ने कहा—अच्छा, अगर मैं तुम्हारे मकान चलूँ तब? वहाँ कुछ देर आराम करूँगी।

वह अपने को घर-विहीन समझती थी। अपना घर जैसे उसे काटे खाता था।

उसके घर जाकर माँ ने आराम किया। वह घर के भिन्न-भिन्न कामों में अपना मन बहलाती रही।

६

एक दिन प्रातःकाल जोसिफ़िन के दिये हुए पत्र-द्वारा पिएर को अपनी सफलता के समाचार मिले। जैसे कोई मृत्यु का कैदी अपने छूटने का समाचार पाता है, वैसे ही पिएर ने एक संतोष की साँस ली। पिता के घर में अब उसे अपनेपन का लेश-मात्र भी बोध न होता था। किसी अजनबी की भाँति वह घर में आता, भोजन करता; और दिन-भर अपने कमरे में पड़ा रहता। रहस्योद्घाटन के पश्चात् से जैसे उसका हृदय टूट गया था। घर में किसी से बात करते समय उसे झुंझलाहट होती थी। वह अब उन लोगों से अपना सम्बन्ध बिल्कुल तोड़ देना चाहता था। हर समय उसके हृदय में यह विचार उठते—माँ ने ज्याँ से क्या कहा—अपने अपराध को स्वीकर किया या नहीं? ज्याँ क्या सोचता है? और जब वह इन प्रश्नों का उत्तर न पाता, तो वह उद्वेलित हो उठता।

घरवालों को जब उसकी सफलता का समाचार ज्ञात

हुआ तो वे फूले न समाये। रोलैन्ड ने पीठ ठोककर उसे शाबाशी दी। ज्यूँ ने कहा—बधाई, मेरे अच्छे भाई! मैं जानता हूँ कि इस सफलता का श्रेय तुम्हारे प्रोफेसर को है, जिन्होंने तुम्हारी सिफ़ारिश की।

नत मस्तक माँ ने कहा—मुझे असीम प्रसन्नता हुई।

सामुद्रिक जीवन का हाल-चाल मालूम करने के लिए पिएर जलपान के पश्चात् अपने एक डाक्टर मित्र से मिलने गया। वह भी एक जहाज़ में नौकर था और आज ही हावेर आया था। जहाज़ के नीचे के भाग वाले एक कमरे में बैठकर दोनों मित्रों ने बड़ी देर तक गपशप लड़ाई। ऊपर से आती कुलियों तथा यात्रियों की बमचख की ध्वनि से मिश्रित मैशीन की खड़ाखड़ बड़ी कर्कश एवं अप्रिय लगती थी।

जब पिएर वहाँ से लौटा तो, उसके ऊपर उदासी छाई थी। चारों ओर फैले घने कोहरे में निहित किसी अपवित्र आत्मा ने जैसे उसके स्वच्छ हृदय पर अपनी कलुषित छाया डाल दी।

वह पहले से भी अधिक दुःख का अनुभव कर रहा था। हृदय में वर्षों से पले स्नेह के भावों को जड़-मूल से नष्ट कर देना उसने एक सरल कार्य समझा था; पर अब यह कार्य अत्यन्त दुःसह प्रतीत होता था। अब कोई उसका अपना न होगा! उसे अकेले जीवन-संग्राम में कूदना होगा। अब तक तो हृदय में यह भावना थी कि सुख-दुःख में सहानुभूति करने

वाला मेरा भी कोई है; पर अब इस भावना को खड़ा करने के लिए भी कोई जगह नहीं। वह घर वालों को चाहे जितना अजनबी समझे; पर उन लोगों के हृदय में उसके प्रति प्रेम है। पर, अब तो सचमुच उसके लिए सब अजनबी होंगे। उसका जीवन अब कितना संकुचित हो जायगा! घर की यह आज़ादी छिन जायगी। अब वह अपनी इच्छानुसार कोई कार्य नहीं कर सकता। बस दिन-रात जहाज़ के गर्त में पड़े रहो। ज्यादा तबियत घबड़ाये, तो डेक पर चले जाओ। इसके सिवाय घूमने-फिरने के लिए कोई स्थान नहीं। कैबिन, डेक! कैबिन, डेक! ओह, उसका जीवन एक कैदी से भी भयंकर होगा।

इन्हीं व्यथित भावनाओं में डूबा हुआ वह यात्रा को जा रहा था। मार्ग में आते-जाते पथिकों को देखकर अब उसके दिल में घृणा के भाव न उपजते; बल्कि वह उनसे बातचीत करके अपने को हलका करना चाहता था। वह सब से कहना चाहता था—ऐ पथिको, मानवता के नाते हम सब भाई-भाई हैं। हमें चाहिए कि हम एक दूसरे के दुख-दर्द में शरीक हों, आपस में सहानुभूति दिखलायें, आदि, आदि। पर, जैसे कोई नया भिखारी किसी के सामने हाथ फैलाते झिझके, वैसे ही उसकी यह भावनाएँ उसी के अन्दर उबल रहीं थीं, निकलती न थीं।

पिएर को मारोवसको की याद आई। वह विचित्र मनुष्य

सदा से उसके प्रति आत्मीयता प्रकट करता आया है। वह उसकी दुकान की ओर चल पड़ा।

मेज के निकट खड़ा मारोवसको कोई दवा कूट रहा था। पिएर को देखते ही उसने काम छोड़ दिया। तपाक से उससे हाथ मिलाते हुए उसने कहा—कहो, तुम तो अब दिखलाई ही नहीं पड़ते ?

पिएर ने बताया कि आज-कल उसे विकट परिस्थितियों का सामना करना पड़ रहा है। फिर वह पूछ बैठा—हाँ, यह तो बताओ, आज-कल तुम्हारे रोजगार का क्या हाल है ?

'रोजगार की दशा अच्छी नहीं। बाज़ार में कितने ही प्रति-द्वन्द्वी हैं। इसी कारण अब मुनाफ़ा भी नाम-मात्र को लेना पड़ता है। डाक्टरों को जब तक कमीशन न दो, कोई दवाई का परचा आता ही नहीं। अगर दो-तीन महीने यही हालत रही, तो मैं दुकान वगैरह बन्द कर दूँगा।'—उसने अपना कथन इस प्रकार समाप्त किया।

पिएर को दुःख हुआ। समवेदना प्रकट करते हुए उसने कहा—अब मैं भी तुम्हारी कोई सहायता न कर सकूँगा।

मारोवसको इतना उद्वेलित हो उठा कि उसने अपनी ऐनक उतार कर उसके मुख को देखते हुए व्यथित स्वर में कहा—तुम भी नहीं ! यह क्या कहते हो ?

'मित्र, मित्र, मैं इस नगर से जा रहा हूँ।'

आशा की अन्तिम रेखा को भी विलीन होते देख, मारोवसको अत्यधिक विचलित हो उठा। यह मनुष्य, जिसके लिए उसके हृदय में इतना प्यार भरा है, जिस पर विश्वास करके उसने कल्पनाओं का संसार बनाया, अब उसे छोड़ कर जा रहा है।

उसने काँपते स्वर में कहा—तुम मुझसे झूठ तो नहीं बोलते, बेटे...

पिएर के हृदय में इतनी करुणा पैदा हो गई और उसने चाहा कि उसे गले से लगाले।

'मित्र, मैं झूठ नहीं बोलता। मुझे यहाँ कोई काम नहीं मिला। इसीलिए एक जहाज़ का मेडीकल आफ़िसर बनने के लिए मुझे मजबूरन सम्मत होना पड़ा।'

'आह पिएर! तुमने मेरी सहायता के लिए वचन दिया था।'

'मैं बिलकुल लाचार हो गया। मेरे पास एक फारदिंग भी नहीं। मुझे स्वयं अपने पेट के लिए लाले पड़ रहे थे।

'यह तुमने बहुत बुरा किया। भूखों मरने के सिवाय अब मेरे लिए कोई चारा नहीं। अब मेरी उम्र किसी काम लायक नहीं। मैं तुम्हारी आशा पर यहाँ आया था।...यह तुमने ठीक नहीं किया।'

पिएर ने चाहा कि उसे शान्त कर दे, उसके दिल में यह नक्श कर दे कि इसने यह काम मजबूरन किया है; पर वृद्ध के दिल में कोई बात नहीं बैठी। अवरुद्ध कंठ से उसने कहा—तुम फ्रांसिसी आदमी सदा झूठ बोलते हो!

तब पिएर क्रुद्ध हो उठा। मुँह सिकोड़ते हुए उसने कहा—मारोवसको, यह तुम अन्याय कर रहे हो। तुम अभी मुझे नहीं समझ पाये! अच्छा, विदा होता हूँ।

और वह दुकान से बाहर आया।

ओह, उससे सहानुभूति करने वाला इस दुनिया में कोई नहीं! उसके मस्तिष्क में परिचितों की सूरतें नाच गईं। काफे-वाली युवती का ध्यान आया। उसी के कारण इस व्यथा का सूत्रपात हुआ; पर इसमें उसका क्या दोष?

उसने झूठ तो कहा नहीं! वह उस युवती से मिलने के लिए चल पड़ा।

काफे आगन्तुकों की कर्कश ध्वनि से मुखरित हो रहा था। धुएँ के बादलों ने वहाँ के वायुमडण्ल को दूषित बना रक्खा था। पिएर चुपचाप एक कुर्सी पर जा कर बैठ गया। उसे आशा थी कि शीघ्र ही वह युवती उसके पार्श्व में आकर बैठेगी और उससे गप-शप लड़ायेगी; पर वह युवती कितनी ही बार उसकी कुर्सी के निकट से निकल गई, और उसने उसकी ओर देखा तक नहीं।

तब पिएर ने स्वयं हाथ से संकेत करके उसे बुलाया।

'कहिए, क्या चाहिए?'—बिना पिएर की ओर देखे उसने कहा।

उसका मस्तिष्क बिक्री के रुपयों का हिसाब लगाने में व्यस्त था।

पिएर ने मुस्करा कर कहा—इसी प्रकार मित्रों का स्वागत किया जाता है ?

तब युवती ने उसकी ओर एक बार देखा।

'अरे, आप हैं! मैंने देखा नहीं। कहिए, सब कुशल-मंगल। आज एक मिनट की छुट्टी नहीं है। आपके लिए एक पेग लाऊँ ?'—उसने जल्दी में कहा।

'हाँ, एक पेग !'

जब वह मदिरा का गिलास ले आई, तो पिएर ने कहा—मैं तुमसे विदा माँगने आया हूँ। मैं बाहर जा रहा हूँ।

'सच ! कहाँ जा रहे हो ?'

उसके स्वर में किंचित्-मात्र भी स्नेह न था।

पिएर ने उत्तर दिया—अमरीका !

'सुनती हूँ, बड़ा सुन्दर देश है।'

और उसी समय एक दूसरे ग्राहक ने उसे बुलाया। वह उधर चली गई। वह बेकार यहाँ आया।

पिएर पश्चात्ताप को लिये काफे के बाहर आया। थोड़ी देर इधर-उधर भटकने के पश्चात् वह घर गया।

सन्ध्या-समय, बिना उसकी ओर देखे माँ ने कहा—मैंने अपनी समझ के अनुसार तो तुम्हारी सुविधा के लिए सब चीज़ें जुटा दी हैं। कोई चीज रह गई हो, तो बता देना।

'नहीं, सब ठीक है।'—पिएर ने धीमे स्वर में उत्तर दिया।

और इसके बाद कई दिनों तक पिएर घर में किसी से अधिक नहीं बोला-चाला। कोई उससे बोलता भी, तो वह इस तरह खीज कर उत्तर देता कि बोलने वाला क्षुब्ध हो जाता; परन्तु जिस दिन वह घर से विदा लेने को था, उसका व्यवहार एक दम बदल गया। वह सब से हँस-हँस कर बोला।

मैडम रोज़मिली तथा कैप्टन व्यूसायर उससे मिलने आये। खूब हँसी-मज़ाक हुआ। सब लोग उसे जहाज़ तक पहुँचाने गये। मैडम रोलैन्ड काली पोशाक पहने थीं, जैसे किसी की मातमपुर्सी में जा रही हों।

पोर्ट पर असंख्य भीड़ थी। नंगे-नंगे बच्चों को गोद में लिये ग़रीबी से अशक्त अनेकों चेहरे दिखाई पड़े। वे अभागिनी स्त्रियाँ विदेश जा रही थीं, जीविकोपार्जन के लिए! कई पुरुष तो ऐसे गंदे थे कि उन्हें देख कर घृणा उत्पन्न होती थी।

पिएर ने अपने सह-कर्मचारियों से परिचय करके उनसे हाथ मिलाया। फिर वह सब को अपना कैबिन दिखाने चला।

चारों ओर दीवारों से घिरा कमरा था, जिसमें केवल एक दरवाज़ा था। एक ओर रखी आल्मारी में दवाइयों की शीशियाँ चुनी थीं।

फिर वे लोग जहाज के अन्य भागों को देखने गये।

सहसा व्यूसायर ने घड़ी देखते हुए कहा—हम लोगों को चलना चाहिए। जहाज के छूटने का समय हो गया।

विदा होते समय सब लोगों ने पिएर से हाथ मिलाया। माँ बिल्कुल पीली पड़ गई थी। जब उसने पिएर के अधरों को अपने मस्तक पर अनुभव किया, तो उसके रोम-रोम में एक कँपकँपी-सी दौड़ गई। वह ख़ूब ज़ोर से चीखना चाहती थी, पर चीख नहीं सकी।

पोर्ट पर आकर उन लोगों ने फिर जहाज की ओर देखा। समुद्र के विशालकाय वक्षस्थल को चीरता हुआ, वह पल-पल पर दूर होता जा रहा था। डेक पर रेलिङ्ग का सहारा लिये एक भग्न मूर्त्ति खड़ी दिखाई पड़ी। फादर रोलेन्ड आदि ने रूमाल हिला कर मुस्कराने का प्रयत्न किया; पर उसके ऊपर रंजित विषाद का रंग पल-पल पर गहरा होता जाता था।

मैडम रोलेन्ड की पलकें आँसुओं से तर थीं। नत मस्तक, मैडम रोज़मिली के कंधों पर झुकी, उसकी पीठ में अपना सिर गड़ाये वह खड़ी थी। माँ का हृदय सिसकियाँ भर रहा था। कुछ देर बाद उसे फादर रोलेन्ड की आवाज़ सुनाई पड़ी—अब चलना चाहिए। तब वह सीधी हुई। आँखे पोंछते हुए उसने समुद्र की ओर देखा; पर दूर क्षितिज के निकट एक गहरी काली रेखा के सिवाय कुछ न दिखाई पड़ा।

—समाप्त—